Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
Published from Ranchi
Ranchi ● Thursday, 30 November 2023 ● Year : 01 ● Issue : 309 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com
E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

गरीबी के मुख्यत: दो कारण होते हैं, पहला आलस्य करना, दूसरा किसी क्षेत्र का विशेषज्ञ न बनना।

रानी को 'लगान' न करने का अफसोस

SHARE

सेंसेक्स	:	66,901.91
निफ्टी	:	20,096.60

SARAFA

सोना	:	5,970
चांदी	:	82.02

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

बेड़ो में खड़े ट्रेलर से टकराई बाइक, एक युवक की मौत

RANCHI : बेड़ो मांडर पथ पर बेड़ो थाना क्षेत्र के केशा मोड़ के समीप सड़क हादसे में बाइक सवार एक युवक की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। घटना बुधवार की दोपहर करीब पौने चार बजे की है। घटना की सूचना मिलने पर बेड़ो थाना के एसआई दुर्गेश कुमार सदल बल घटनास्थल पर पहुंचे। पुलिस ने घटनास्थल से मृतक युवक की जेब से एक आधार कार्ड बरामद किया। जिसमें जीतेश गोप पिता खुदिया गोप गांव सकरा थाना मांडर लिखा हुआ है। आधार कार्ड के आधार पर घटना की सूचना मृतक के परिजनों को दी गई। वहीं घटना की सूचना मिलने पर मृतक के परिजन बेड़ो थाना पहुंचे और शव की पहचान जीतेश गोप के रूप में की।

सलमान खान को लॉरेंस बिश्नोई की फिर धमकी

MUMBAI : सलमान खान को पिछले कुछ समय से गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के गिरोह से लगातार जान से मारने की धमकियां मिल रही हैं। इन धमकियों के बाद मुंबई पुलिस ने बॉलीवुड के दबंग एक्टर को सुरक्षा भी मुहैया कराई है। अब एक बार फिर लॉरेंस बिश्नोई गैंग की ओर से सलमान खान को धमकी मिली है। इस धमकी के बाद मुंबई पुलिस ने सलमान खान को दी सुरक्षा की मंगलवार को दोबारा समीक्षा की है। साथ ही पुलिस ने अभिनेता सलमान खान को इस बार ज्यादा सतर्क रहने की सलाह दी है। गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई की धमकी के बाद सलमान खान को मुंबई पुलिस ने पहले ही वाई-प्लस सुरक्षा दी है।

महिला स्वयं सहायता समूहों को ड्रोन उपलब्ध कराने की योजना को मंजूरी

NEW DELHI : केंद्रीय मंत्रिमंडल ने महिला स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को ड्रोन प्रदान करने की योजना को मंजूरी दी है। इसपर वित्त वर्ष 2024-25 से 2025-26 की अवधि के लिए 1261 करोड़ रुपये का खर्च आएगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने उक्त आशय के प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की। इस योजना का लक्ष्य 2023-24 से 2025-2026 की अवधि के दौरान कृषि उद्देश्यों के लिए किसानों को किराये की सेवाएं प्रदान करने के लिए 15,000 चयनित महिला एसएचजी को ड्रोन प्रदान करना है।

जापान में अमेरिकी सेना का प्लेन क्रैश, 6 लोग थे सवार

JAPAN : अमेरिकी सेना का विमान सीवी-22 ऑस्प्रे बुधवार 29 नवंबर को क्रैश हो गया। इंजन में आग लगने के बाद यह जापान के याकुशिमा द्वीप के पास समुद्र में जा गिरा। विमान में 6 लोग सवार थे। इसके पहले खबर थी कि विमान में 8 लोग सवार थे।

अजान से प्रदूषण तो आरती का क्या : गुजरात हाईकोर्ट

लाउडस्पीकर पर रोक लगाने की याचिका खारिज, पूछा- भजन से ध्वनि प्रदूषण नहीं होता?

AGENCY AHMEDABAD : गुजरात हाईकोर्ट ने लाउडस्पीकर से अजान पर रोक लगाने की याचिका को खारिज कर दिया है। चीफ जस्टिस सुनीता अग्रवाल और अनिरुद्ध पी मायी की पीठ ने मंगलवार को याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा- क्या मंदिरों में होने वाली आरती और भजन-कीर्तनों से ध्वनि प्रदूषण नहीं होता? बजरंग दल के नेता शक्ति सिंह झाला ने दायर याचिका में कहा था कि लाउडस्पीकर से अजान के चलते होने वाला ध्वनि प्रदूषण लोगों और खासतौर पर बच्चों के स्वास्थ्य पर असर करता है। साथ ही असुविधा का कारण भी बनता है। कोर्ट ने कहा कि इस याचिका में दावों का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

लाउडस्पीकर से निकलने वाली मानवीय आवाज की डेसिबल स्तर तक पहुंचने की संभावना नहीं

गुजरात हाईकोर्ट ने मंगलवार को इस तथ्य को खारिज कर दिया कि, मस्जिदों में अजान के लिए लाउडस्पीकर के इस्तेमाल से ध्वनि प्रदूषण होता है। गुजरात हाई कोर्ट ने मंगलवार को एक जनहित याचिका (पीआईएल) को खारिज करते हुए यह टिप्पणी की। पीठ ने अपने फैसले में इस बात पर भी जोर दिया कि अजान दिन के अलग-अलग घंटों में आमतौर पर अधिकतम 10 मिनट तक चलती है। इसके साथ ही लाउडस्पीकर से निकलने वाली मानवीय आवाज डेसिबल स्तर तक पहुंचने की संभावना नहीं रहती है, जो ध्वनि प्रदूषण का खतरा बन सके। अदालत ने याचिकाकर्ता के वकील से सवाल किया- मंदिरों में सुबह की आरती भी ढोल-नगाड़ों और संगीत के साथ तड़के 4 बजे ही शुरू हो जाती है। उस समय भी बहुत से लोग सो रहे होते हैं। क्या इससे शोर नहीं होता? क्या आप दावा कर सकते हैं कि घंटे और घड़ियाल की आवाज केवल मंदिर परिसर तक ही सीमित रहती है? इसके अलावा कीर्तन-भजन, आठ-आठ घंटे चलने वाले कार्यक्रम का लाउडस्पीकर के जरिए प्रसारण किया जाता है। क्या इन्हें भी ध्वनि प्रदूषण का कारण मान लिया जाए, तब आप क्या कहेंगे?

सुप्रीम कोर्ट ने 2005 में लाउडस्पीकर पर लगाया था बैन

सुप्रीम कोर्ट ने जुलाई 2005 में ध्वनि प्रदूषण से हेल्थ प्रॉब्लम्स का हवाला देते हुए इमरजेंसी को छोड़कर रात 10 बजे से सुबह 6 बजे के बीच लाउडस्पीकर के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगा दिया था। इसके बाद अक्टूबर 2005 में कोर्ट ने कहा था कि लाउडस्पीकर को साल में 15 दिनों के लिए उत्सवों पर आधी रात तक इस्तेमाल करने की अनुमति दी जा सकती है। चीफ जस्टिस आरसी लाहोटी और जस्टिस अशोक भान की खंडपीठ ने ये आदेश दिया था।

इजराइली सैनिकों ने दो फिलिस्तीनी बच्चों को मारी *गोली*

TEL AVIV : इजराइल-हमास के बीच सीजफायर का 6वां दिन है। अल जजीरा के मुताबिक, वेस्ट बैंक के जेनिन शहर में रेड के दौरान इजराइली सैनिकों ने दो बच्चों को गोली मार दी। मारे गए बच्चों में एक की उम्र 8 साल और दूसरे की उम्र 15 साल बताई जा रही है। दरअसल, इजराइली सेना हमास के खात्मे के लिए वेस्ट बैंक में भी रेड कर रही है। वहां से फिलिस्तीनी लोगों को गिरफ्तार किया जा रहा है। इजराइल का कहना है कि सेना ने वेस्ट बैंक से 700 से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें से कई हमास के आतंकी बताए जा रहे हैं। इस बीच इजराइली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि इजराइली सेना सीजफायर खत्म होने के बाद हमले शुरू कर देगी। बता दें कि 24 नवंबर को शुरू हुए सीजफायर का बुधवार को आखिरी दिन था।

उत्तरकाशी टनल हादसा : जज्बे को सलाम...

पूरे विश्व के रेस्क्यू मुहिम से बड़ा व तेज रहा ऑपरेशन

AGENCY NEW DELHI : उत्तराखंड सुरंग में फंसे श्रमिकों को निकालने का दुनिया का सबसे बड़ा रेस्क्यू ऑपरेशन बेहद जटिल और खासा चुनौतीपूर्ण था। भारत सरकार और उत्तराखंड सरकार के बेहतर तालमेल से राहतकर्मियों ने जिस तेजी से सिलक्यारा ऑपरेशन को रिकॉर्ड समय में पूरा किया, वह दुनिया के सामने एक उदाहरण बन गया है। सिलक्यारा सुरंग हादसा के बाद न भारत ही नहीं, दुनिया भर की नजर रेस्क्यू ऑपरेशन पर थी। दुनियाभर में सुरंग और बड़े भूमिगत ऑपरेशन में अब तक दक्षिण अमेरिका के चिली में अगस्त 2010 में खदान ढहने से फंसे 33 मजदूरों का रेस्क्यू 5 अगस्त से 13 अक्टूबर तक पूरे 69 दिन चला। ऑपरेशन में श्रमिकों को बचा लिया था। इस ऑपरेशन में कई देशों ने आधुनिक मशीनों से काम किया। 2018 में थाईलैंड की खुली सुरंग में फंसे फुटबाल खेलने वाले 12 बच्चे और उनके कोच का रेस्क्यू ऑपरेशन सफलतापूर्वक पूरा किया गया। यह ऑपरेशन 23 जून 2018 से 8 जुलाई 2018 तक यानी 18 दिन चला।

उत्तरकाशी रेस्क्यू ऑपरेशन पर दुनिया की टिकी थी नजरें

2010 में दक्षिण अमेरिका में खदान ढहने से फंसे 33 मजदूरों का रेस्क्यू 69 दिन चला था

2018 में थाईलैंड की खुली सुरंग में फंसे फुटबाल खेलने वाले 12 बच्चों का रेस्क्यू ऑपरेशन 18 दिन चला था

41 मजदूरों को मिला एक लाख का चेक

बुधवार को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चिन्यालीसौड़ पहुंचे, जहां सुरंग के निकाले गए 41 मजदूरों को रखा गया है। सीएम ने मजदूरों को एक-एक लाख के चेक दिए। इसके बाद सीएम धामी यहां से लौट गए। इस दौरान उन्होंने कहा कि अब एम्स ऋषिकेश में मजदूरों की सघन जांच होगी, इसके बाद उन्हें उनके घर भेजा जाएगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सिलक्यारा में 41 श्रमिकों की सकुशल वापसी पर मुख्यमंत्री धामी को फोन कर शुभकामनाएं दीं।

मजदूरों को एयरलिफ्ट करेगी हेमंत सरकार

उत्तरकाशी के सिलक्यारा टनल से बाहर आए झारखंड के श्रमिकों को एयरलिफ्ट कर वापस घर लाने के लिए झारखंड सरकार ने दो अधिकारियों की टीम को मंगलवार को रवाना किया। श्रम विभाग के सचिव राजेश शर्मा ने बताया कि मजदूरों की मेडिकल जांच रिपोर्ट आने के बाद उनकी इच्छा पर सरकार एयरलिफ्ट कर वापस लाएगी। हादसे के 17वें दिन झारखंड के 15 मजदूरों के परिवारों में आखिरकार मंगलवार देर शाम खुशियां लौट आईं। मजदूरों के बाहर निकलते ही परिजन खुशी से झूम उठे।

सरकार आपके द्वार : सीएम ने सिमडेगा को 155 करोड़ की दी सौगात, बोले

लोगों को बना रहे आत्मनिर्भर

PHOTON NEWS SIMDEGA : सीएम हेमंत सोरेन ने सिमडेगा के कोलेबिरा में आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार कार्यक्रम में कहा कि राज्य और राज्यवासियों के विकास के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। सरकार की योजनाओं से जुड़कर लोग सशक्त और आत्मनिर्भर बन रहे हैं। जब तक लोगों को सामाजिक सुरक्षा नहीं दी जाएगी, तब तक राज्य मजबूत नहीं बनेगा। बेहतर काम करने वाले सरकारी कर्मी पुरस्कृत किए जाएंगे। सरकारीकर्मियों का काम जनता की सेवा करना है क्योंकि इसी के लिए उन्हें तनख्वाह मिलती है। ऐसे में अधिकारी और कर्मचारी अपनी जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी एवं निष्ठा से निभाएं। जो अच्छा काम करेंगे उन्हें सरकार पुरस्कृत करेगी। इसके साथ उनकी जायज मांगों और समस्याओं पर सरकार हमेशा सकारात्मक निर्णय लेते आई है और आगे भी ऐसा ही करेगी। आदिवासियों- मूलवासियों, दलित, पिछड़ों और अल्पसंख्यकों को उनका हक-अधिकार दिया जाएगा। इस दौरान 155 करोड़ 78 लाख 19 हजार 440 रुपए की लागत वाली 1453 योजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास किया। इस दौरान 40321 लाभुकों के बीच 31 करोड़ 17 लाख 62 हजार 385 रुपए की परिसंपत्तियों का वितरण किया। इस अवसर पर श्रम मंत्री सत्यानंद भोक्ता और कृषि मंत्री बादल पत्रलेख, विधायक नमन विक्सल कोनगाड़ी, भूषण बाड़ा और भूषण तिर्की, मुख्यमंत्री के सचिव विनय कुमार चौबे समेत अन्य पदाधिकारी मौजूद थे।

सरकार आपके द्वार कार्यक्रम को संबोधित करते सीएम हेमंत सोरेन।

155 करोड़ 78 लाख 19 हजार 440 रुपये की योजनाओं का हुआ उद्घाटन व शिलान्यास

31 करोड़ 17 लाख 62 हजार 385 रुपये की परिसंपत्तियों का सीएम ने किया वितरण

800 योजनाओं की नींव 653 का किया उद्घाटन

झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन ने 20 करोड़ 99 लाख 65 हजार 111 रुपए की लागत से निर्मित 653 योजनाओं का उद्घाटन किया। 800 योजनाओं की आधारशिला रखी। इन योजनाओं पर कुल 134 करोड़ 78 लाख 54 हजार 339 रुपए खर्च होंगे। इस तरह 155 करोड़ 78 लाख 19 हजार 440 रुपए की 1453 योजनाओं का तोहफा सिमडेगावासियों को मिला। मुख्यमंत्री ने विभिन्न योजनाओं के 40321 लाभुकों के बीच 31 करोड़ 17 लाख 62 हजार 385 रुपए की परिसंपत्ति का वितरण किया।

अधिकार के लिए हमेशा संघर्ष करने को रहें तैयार

सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि झारखंड शुरू से ही वीरों की धरती रही है। भगवान बिरसा मुंडा, सिदो -कान्हू, नीलांबर- पीतांबर, तेलंगा खड़िया जैसे कई अमर वीर शहीदों ने अंग्रेजों और शोषण के खिलाफ संघर्ष करते हुए अपनी शहादत दी। आज भी यहां के आदिवासी मूलवासी संघर्ष कर रहे हैं। हमारी सरकार इन वीर शहीदों का झारखंड बनने के साथ यहां के आदिवासियों- मूलवासियों, आदिवासी, दलित, पिछड़ों और अल्पसंख्यकों को पूरे मान-सम्मान के साथ उनका हक और अधिकार दे रही है।

आदिम जनजाति परिवारों के बच्चे भी अब बनेंगे अधिकारी

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि अगर हम समय रहते नहीं चेते तो आदिम जनजाति विलुप्ति के कगार पर पहुंच जाएगी। हमारी सरकार आदिम जनजातियों को सशक्त करने की दिशा में लगातार प्रयास कर रही है। इसी कड़ी में आदिम जनजाति के विद्यार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के लिए कोचिंग कराई जा रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि ये बच्चे अपनी मेहनत से अपना मुकाम हासिल करेंगे और कलेक्टर तथा अन्य बड़े अधिकारी बनकर अपने परिवार और जनजाति का नाम रोशन करेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के गरीब और घरविहीन लोगों को तीन कमरों का सुसज्जित मकान दिया जाएगा। इसके लिए अबुआ आवास योजना शुरू की गई है। इसके तहत अगले 3 सालों में 8 लाख मकान बनाए जाएंगे। गांव और शहरों के बीच निरंतर कनेक्टिविटी बनाए रखने के लिए मुख्यमंत्री ग्राम गाड़ी योजना शुरू की गई है। सभी बुजुर्ग, दिव्यांग और विद्यार्थियों को इस योजना के तहत निःशुल्क बस परिवहन की सेवा मिलेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि यहां के 11 लाख लोगों का राशन कार्ड पहले छीन लिया गया था, लेकिन हमारी सरकार ने 20 लाख हरा राशनकार्ड जारी किया है और इन्हें बाजार भाव से अनाज खरीद कर दिया जा रहा है।

भारत गौरव यात्रा ट्रेन में 40 लोगों को फूड पॉइजनिंग

प्राइवेट कॉन्ट्रैक्टर ने सप्लाई किया खाना

AGENCY PUNE : भारत गौरव यात्रा ट्रेन में मंगलवार देर रात 40 यात्रियों ने खाने के बाद उल्टी-दस्त की शिकायत की। रात 9 बजे यात्रियों ने खाना खाया। इसके बाद कुछ लोग असहज महसूस करने लगे। उन्हें उल्टी-दस्त होने लगी। इसकी शिकायत ट्रेन में मौजूद स्टाफ से की गई। पुणे रेल डिवीजन के पीआरओ रामदास भिसे ने बताया कि प्राइवेट पार्टी ने ट्रेन चेन्नई से गुजरात के पालिताना के लिए बुक की थी। इसमें लगभग 1 हजार यात्री थे। देर रात हमें शिकायत मिली कि कई पैसेंजर्स को उल्टी-दस्त और चक्कर आ रहे हैं। इसके बाद रेलवे अस्पताल के डॉक्टरों के साथ-साथ 40 लोगों की टीम उपचार के लिए भेजी गई थी। भिसे ने बताया कि ट्रेन के पुणे स्टेशन पहुंचने के बाद सभी पैसेंजर्स को प्लेटफॉर्म पर उतारकर इलाज किया गया। किसी भी यात्री को अस्पताल में भर्ती नहीं कराना पड़ा।

चीन में फैली फेफड़े फुलाने वाली बीमारी को लेकर भारत में *HIGH ALERT*

NEW DELHI : चीन में फेफड़े फुलाने वाली रहस्यमयी बीमारी को लेकर केंद्र सरकार ने राजस्थान, कर्नाटक, गुजरात, उत्तराखंड, हरियाणा और तमिलनाडु को हाई अलर्ट जारी किया है। इसके बाद राज्य सरकारों ने हेल्थ डिपार्टमेंट को सांस से जुड़ी बीमारी के मरीजों के लिए तैयार रहने का निर्देश दिया है। राज्य सरकारों ने लोगों के लिए भी एडवाइजरी जारी की है। इसमें लोगों को भीड़-भाड़ वाली जगहों पर मास्क का इस्तेमाल करने की सलाह दी गई है। पीडियाट्रिक यूनिट्स में बच्चों के इलाज के लिए पूरी व्यवस्था करने को कहा गया है। चीन में रहस्यमयी बीमारी का असर सबसे ज्यादा बच्चों पर हो रहा है।

सीएम हेमंत सोरेन की पत्नी व साली को माइनिंग लीज आवंटित करने का मामला

झारखंड हाईकोर्ट में सुनवाई पूरी, फैसला सुरक्षित

SPECIAL REPORTER RANCHI : अधिवक्ता और आरटीआई कार्यकर्ता सुनील महतो की ओर से झारखंड हाईकोर्ट में खान विभाग के मंत्री रहते हेमंत सोरेन द्वारा पत्नी कल्पना सोरेन और साली सरला मुर्मू के फर्म को माइनिंग लीज आवंटित करने को लेकर याचिका दायर की गई थी। इस मामले में सुनवाई के बाद झारखंड हाईकोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है। इस मामले की सुनवाई चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा की अध्यक्षतावाली खंडपीठ में हुई। खंडपीठ ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद सुनवाई पूरी करते हुए फैसला सुरक्षित रखा है। अधिवक्ता और आरटीआई कार्यकर्ता सुनील महतो की ओर से जो याचिका दायर की गई है।

हेमंत के वकील ने कहा- सुप्रीम कोर्ट पहले खारिज कर चुकी है ऐसी याचिका

हाईकोर्ट ने याचिकाकर्ता सुनील महतो को निर्देश दिया है कि इसी माइनिंग लीज से जुड़े पूर्व में शिव शंकर शर्मा के मामले से आपका मामला कैसे अलग है, इस पर अगर आप अपनी बात रखना चाहते हैं तो रख सकते हैं। इससे संबंधित जवाब लिखित रूप में देने को कहा है। हाईकोर्ट ने कहा है कि आप अपना जवाब तीन दिन में दायर कर सकते हैं। सुनवाई के दौरान हेमंत के महाधिवक्ता राजीव रंजन और अधिवक्ता पीयूष चित्रेश ने पक्ष रखा। उन्होंने बताया कि सीएम हेमंत सोरेन पर माइनिंग लीज से संबंधित पूर्व में भी याचिका शिव शंकर शर्मा की ओर से दायर की गई थी। दायर दो जनहित याचिका को सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया है। ऐसे में समान केस होने की वजह से सुनील महतो की ओर से दायर याचिका को खारिज कर दिया जाए। जवाब में प्रार्थी अधिवक्ता राजीव कुमार एवं विशाल कुमार ने बताया कि शिव शंकर शर्मा के मामले में केवल सीएम के माइंस लीज का मामला था, इस मामले में सीएम के माइनिंग लीज के अलावा उनकी पत्नी और साली को इंडस्ट्रियल एरिया में जमीन देने का भी है।

देवघर एम्स परिसर में अमृत फार्मेसी के बगल में ही पीएम जन औषधि केंद्र किया गया है तैयार

जन औषधि केंद्र का आज ऑनलाइन उद्घाटन करेंगे पीएम

AGENCY NEW DELHI : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 30 नवंबर को दिल्ली से ऑनलाइन देवघर एम्स में पीएम जन औषधि केंद्र का उद्घाटन करेंगे। देवघर एम्स परिसर में अमृत फार्मेसी के बगल में ही पीएम जन औषधि केंद्र तैयार किया गया है। जानकारी के अनुसार स्टोर में सारी दवाइयां आ गयी हैं। गोड्डा सांसद डॉ निशिकांत दुबे के आग्रह पर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने देवघर एम्स में पीएम जन औषधि केंद्र की स्वीकृति दी है। फार्मास्यूटिकल्स एंड मेडिकल डिवाइसेज ब्यूरो ऑफ इंडिया (पीएमबीआई) के सीइओ रवि दाधिची ने सांसद डॉ निशिकांत दुबे व एम्स के निदेशक को पत्र भेजकर बताया है कि 30 नवंबर को प्रधानमंत्री द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए देश के 10 हजारवें पीएम जन औषधि केंद्र का उद्घाटन किया जायेगा। प्रधानमंत्री देवघर एम्स के साथ-साथ महाराष्ट्र के कोल्हापुर में भी संबोधन करेंगे। समारोह में गोड्डा सांसद डॉ निशिकांत दुबे देवघर एम्स में उपस्थित रहेंगे। सीईओ रवि ने देवघर एम्स के निदेशक को पीएमबीआई के नोडल ऑफिसर के साथ को-ऑर्डिनेशन कर उद्घाटन समारोह की सारी तैयारी करने का निर्देश दिया है। गोड्डा के सांसद डॉ निशिकांत दुबे ने कहा कि उन्होंने देवघर में प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र खोलने की मांग केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया से की थी।

90% तक मिलेगा डिस्काउंट

देवघर एम्स में खुलने वाले पीएम जन औषधि केंद्र में सरकारी जेनेरिक दवाइयों के साथ-साथ कुल 1600 दवाइयों के रेंज उपलब्ध रहेंगे। इसके अलावा करीब 900 सर्जिकल आइटम भी उपलब्ध रहेंगे। प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र के झारखंड नोडल ऑफिसर सुमित पांडे ने बताया कि इस जन औषधि केंद्र में 50 से 90 फीसदी तक मरीजों को डिस्काउंट में दवाइयां मिलेंगी। इसमें सभी सरकारी जेनेरिक दवाइयां उपलब्ध होंगी। एम्स के डॉक्टर द्वारा लिखी जाने वाली सभी दवाइयां उपलब्ध करायी जायेंगी। पूरे झारखंड में देवघर एम्स का प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र सबसे आधुनिक और सुविधायुक्त होगा। देवघर एम्स में इमरजेंसी सेवा चालू होने के बाद यहां 24 घंटे यह सुविधा मिलेगी। फिलहाल ओपीडी के अनुसार जन औषधि केंद्र खुला रहेगा।

गरीब मरीजों को मिलेगा लाभ

गोड्डा के सांसद डॉ निशिकांत दुबे ने कहा कि उन्होंने देवघर में प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र खोलने की मांग केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया से की थी। स्वास्थ्य मंत्री ने उनकी मांगों को गंभीरता से लिया। 30 नवंबर को पीएम जन औषधि केंद्र का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करेंगे। पीएम स्वयं देवघर एम्स में सारी सुविधाएं जल्द उपलब्ध कराने को लेकर फोकस कर रहे हैं। देवघर एम्स में पीएम जन औषधि केंद्र खुल जाने से मरीजों को अमृत फार्मेसी में लंबी लाइन लगाकर दवा लेने से राहत मिलेगी तथा औषधि केंद्र में सस्ती दर पर सभी दवाइयां उपलब्ध होंगी। इसके साथ ही सस्ती दरों पर सर्जिकल आइटम भी मिलेंगे। गरीब मरीजों को इसका लाभ मिलेगा।

सिंधुदुर्ग किले में होगा *'ऑपरेशनल डेमो'*

NEW DELHI : भारतीय नौसेना 04 दिसंबर को भारत के पश्चिमी समुद्र तट पर सिंधुदुर्ग किले में जहाजों और विमानों के जरिये ऑपरेशनल प्रदर्शन करके अपनी परिचालन कौशल और क्षमताओं का प्रदर्शन करेगी। इस प्रदर्शन का उद्देश्य औपनिवेशिक प्रथाओं को खत्म करने के प्रतीक में भारत के समृद्ध समुद्री इतिहास का जश्न मनाना है। कार्यक्रम में मिग 29के और 40 एलसीए नौसेना विमानों के साथ 20 युद्धपोतों की भागीदारी होगी। साथ ही भारतीय नौसेना के समुद्री कमांडो युद्धक समुद्र तट टोही और हमले का प्रदर्शन करेंगे। भारतीय नौसेना 1971 के युद्ध के दौरान करायी बंदरगाह पर नौसेना के दुस्साहसिक हमले 'ऑपरेशन ट्राइडेंट' की याद में 04 दिसंबर को नौसेना दिवस मनाती है। इसी दिन नौसेना विपरीत परिस्थितियों में कर्मियों की वीरता, साहस और उनके संकल्प का जश्न मनाने के लिए सिंधुदुर्ग किले में 'ऑपरेशनल प्रदर्शन' करने जा रही है।

मणिपुर के सबसे पुराने विद्रोही गुट यूएनएलएफ ने हिंसा छोड़ी

केंद्र से शांति समझौते पर किया हस्ताक्षर

AGENCY NEW DELHI : मणिपुर के सबसे पुराने विद्रोही आर्म्ड ग्रुप यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट (यूएनएलएफ) ने बुधवार को दिल्ली में शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह ग्रुप हिंसा छोड़कर मुख्यधारा में शामिल होने पर सहमत हो गया है। यूएनएलएफ ने यह फैसला केंद्र सरकार की ओर से ग्रुप पर कई साल पहले लगे बैन को पांच साल बढ़ाने के बाद लिया। दरअसल, केंद्र सरकार ने 13 नवंबर 2023 को मणिपुर के यूएनएलएफ सहित पीएलए, प्रीपक, केसीपी, केवाईकेएल कुल पांच उग्रवादी ग्रुप्स पर लगे बैन को पांच साल बढ़ा दिया था। साथ ही पांच अन्य उग्रवादी ग्रुप्स पर भी पांच साल का बैन लगाया था। यह बैन इनकी राष्ट्र विरोधी गतिविधियों और सुरक्षा बलों पर घातक हमले करने के कारण लगाया गया। ये ग्रुप मणिपुर में एक्टिव हैं। यह बैन 13 नवंबर 2023 से ही लागू हो गया था।

● पांच उग्रवादी ग्रुप्स पर पांच साल बढ़ा था बैन

BRIEF NEWS

वरिष्ठ नागरिक समिति ने चलाया नशा मुक्ति जागरूकता अभियान

JAMSHEDPUR : वरिष्ठ नागरिक समिति ने बुधवार को सीतारामडेरा के छायानगर में नशा मुक्ति जागरूकता अभियान चलाया। अभियान का नेतृत्व समिति के अध्यक्ष शिवपूजन सिंह ने किया। इसमें पुलिस के साथ-साथ समाज के प्रबुद्ध लोग शामिल थे। सभी ने लोगों से नशे की आदतों का त्याग करने की अपील की। नशा करने से होने वाले नुकसान के बारे में युवकों और उनके परिजनों को समझाया गया। नशीले पदार्थों की बिक्री करने वालों पर नजर रखने और उसके खिलाफ पुलिस में शिकायत करने की सलाह दी गई। इस मौके पर पूर्वी घोष, झरना पाल, एसपी शुक्ला सहित अन्य लोग मौजूद थे। शिवपूजन सिंह ने बताया कि जयादातर घटनाएं नशा के कारण होती है। इसलिए नशे से दूर रहना बेहद ही जरूरी है। इस अभियान के माध्यम से सभी को जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है।

कराटे में नीमडीह के युवकों ने जीता गोल्ड और सिल्वर

JAMSHEDPUR : जमशेदपुर में आयोजित चौथी नेशनल शोरीन रियू मात्सुबेशी ओपन कराटे चैंपियनशिप 2023 में चांडिल अनुमंडल क्षेत्र के नीमडीह प्रखंड के दो खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। मून सिटी मानगो जमशेदपुर में आयोजित प्रतियोगिता में नीमडीह प्रखंड अंतर्गत बाड़ेदा के बलदेव सिंह और रघुनाथपुर के पशुपति महतो ने शानदार खेल का प्रदर्शन किया है। ग्रामांचल के खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा के दम पर खूब तालियां व मेडल बटोरी। प्रतियोगिता में बलदेव सिंह गोल्ड मेडल और पशुपति महतो ने सिल्वर मेडल जीतकर अपने जिला और क्षेत्र का नाम रोशन किया है। दोनों प्रतियोगी को ब्लैक बेल्ट काता वर्ग में मेडल मिला है। दोनों युवाओं के विजेता बनकर वापस लौटने पर क्षेत्र में खुशी का माहौल है।

निशुल्क स्वास्थ्य शिविर के लिए पंडाल निर्माण शुरू

BAHRAGORA : बहरागोड़ा शाखा मैदान में दो दिसम्बर को विशाल निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित होगा। इसके लिए बुधवार से पंडाल निर्माण कार्य शुरू हो गया है। इस निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर में कटक, कोलकाता, झाड़ग्राम , जमशेदपुर तथा आसपास के 30 वरीय डॉक्टर मरीजों की जांच करेंगे। डॉक्टरों के परामर्श पर मरीजों को निःशुल्क दवाइयां भी दी जाएगी। यह कार्यक्रम विगत दो वर्षों के दौरान आयोजित होने वाला यह 51 स्वास्थ्य शिविर होगा। भारतीय जनता पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष तथा राइट्स लिमिटेड के स्वतंत्र निदेशक डॉ दिनेशानंद गोस्वामी के प्रयास से यह स्वास्थ्य शिविर आयोजित हो रहा है। भारत सरकार के प्रमुख उद्यम राइट्स लिमिटेड के सहयोग से प्रमुख स्वयं सेवी सिटिजन्स फाउंडेशन ग्रामीण क्षेत्रों में अबतक 50 स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन कर चुका है।

मतदाता सूची में निबंधन के लिए कैंप लगाने का निर्देश

HAZARIBAG : समाहरणालय सभाकक्ष में जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त नैंसी सहाय ने सभी डिग्री कॉलेज, इंटर कॉलेज और +2 उच्च विद्यालयों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की। बैठक में उपायुक्त ने सभी शैक्षणिक संस्थानों के प्रतिनिधियों को 18-19 आयु वर्ग के युवा मतदाताओं/नागरिकों का नाम मतदाता सूची में निबंधन करने के लिए कैम्प लगाने का निर्देश दिया। डीसी ने प्रत्येक शिक्षण संस्थान के मनोविज्ञान के शिक्षक को नोडल पदाधिकारी के रूप में नामित करने और प्रत्येक कक्षा के लिए एक संयोजक नामित करने को कहा। इस बाबत जिला शिक्षा पदाधिकारी को निर्देश दिया गया। इसके लिए प्रचार-प्रसार कराने का भी निर्देश दिया गया। नैंसी सहाय ने कहा कि शैक्षणिक संस्थान यह सुनिश्चित करेंगे कि उनके संस्थान में अध्ययनरत किसी भी छात्र-छात्रा का नाम मतदाता सूची में निबंधन से छूटे नहीं।

जमीन कारोबारी पर दिनदहाड़े जमकर हुई फायरिंग, गंभीर

नकाबपोश अपराधियों ने दिया घटना को अंजाम, दुगार्पुर रेफर

PHOTON NEWS DHANBAD : धनबाद जिहला के गोविंदपुर थाना क्षेत्र में जमीन कारोबारी कृष्णा मंडल पर आमघाटा मार्ग पर बुधवार की दोपहर नकाबपोश अपराधियों ने अंधाधुंध फायरिंग की। घायल कारोबारी को स्थानीय लोगों की मदद के इलाज के लिए रठटटउल्ह ले जाया गया। डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें दुगार्पुर रेफर कर दिया। घटना के बाद परिवार में कोहराम मचा है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। घटना से स्थानीय लोगों में काफी रोष व्याप्त है।

घायल जमीन कारोबारी कृष्णा मंडल। ● फोटोन न्यूज

जानकारी के अनुसार, बड़ा नवातार निवासी कृष्णा मंडल सुबह अपनी हार्डवेयर दुकान खोल रहे थे, तभी नकाबपोश अपराधियो ने उनपर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। गोलियों की आवाज सुनकर निर्मल हंसदा मार्केट के मालिक के भाई मनोज हंसदा बाहर निकले, लेकिन वह बाल-बाल बच गए। सूत्रों ने बताया कि कृष्णा मंडल जमीन कारोबार से जुड़े हैं। वह बिल्डर का काम भी करते हैं। खबर पाकर गोविंदपुर थाना पुलिस घटनास्थल पर पहुंची ओर जांच-पड़ताल की। डीएसपी रैंक के अधिकारी भी घटनास्थल पर पहुंचे।

हिसिम गांव के जगदीश मांझी को है रहनुमा की तलाश, आनुवांशिक बीमारी से पीड़ित पूरा परिवार

जनता दरबार में इलाज व जान बचाने की लगा रहे फरियाद

PHOTON NEWS BOKARO : किसी इंसान को शरीर में कहीं एक छोटी सी फुंसी हो जाये, तो वह बेचैन हो जाता है। बोकारो जिले के कसमार प्रखंड के सुदूरवर्ती हिसिम गांव में रहने वाले जगदीश मांझी और उनके परिवार के सभी सदस्य एक ऐसी लाइलाज बीमारी से ग्रसित हैं, जिससे सभी का जीना दूभर हो गया है। जगदीश मांझी, उनकी पत्नी एतवारी देवी, 17 वर्षीय पुत्र वीरेंद्र मुर्मू व 5 वर्षीय पुत्री पूजा कुमारी के पूरे शरीर में हजारों छोटी-बड़ी फुंसियों के आकार के गोले हैं। आंख व मुंह के अंदरूनी हिस्सों को छोड़कर पूरा शरीर इस गंभीर बीमारी की चपेट में है। जगदीश अपनी इस बीमारी का न तो नाम जानते हैं, न ही इसके इलाज के

जगदीश मांझी।

लिए उनके पास पैसे हैं। जब भी सरकार की ओर से आपके द्वार या अन्य कोई स्वास्थ्य शिविर लगता है, इस आस चले जाते हैं कि शायद कोई रहनुमा मिल जाए, जो उनकी इस बीमारी से छुटकारा दिला दे।

जगदीश मांझी ने बताया कि टुपकाडीह निवासी उसका साला सोमाय मांझी भी लंबे समय से इस बीमारी से पीड़ित है। कसमार के हिसिम में आयोजित जनता दरबार में जब वह अपनी फरियाद लेकर आए तो सीएचसी के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ बीपी गुप्ता ने बताया कि यह सम्भवतः न्यूरो फाइब्रोमोटिस की बीमारी हो सकती है। बायोप्सी करवाने के बाद ही बीमारी का सटीक पता चल सकता है। जगदीश ने बताया कि उनके वोटर आईडी कार्ड व आधार कार्ड में सुधार के लिए परेशान हैं, क्योंकि कार्ड में वास्तविक उम्र से काफी कम अंकित होने के कारण किसी सरकारी योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है। फिलहाल जगदीश अपने इलाज को लेकर रहनुमा की तलाश में है।

आवास विहीन लाभुकों को अबुआ आवास देना सरकार की प्राथमिकता : उपायुक्त

PHOTON NEWS KODERMA : जिले के जयनगर प्रखंड के हीरोडीह पंचायत सचिवालय में मुखिया संगीता कुमारी की अध्यक्षता में तृतीय चरण के सरकार आपके द्वार कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मुखिया संगीता कुमारी, पंचायत समिति सदस्य सुरेंद्र राणा, वार्ड सदस्य सहित कई लोगों ने आए अतिथियों को फूल, माला, तिलक लगाकर स्वागत किया।

हीरोडीह पंचायत में सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का उद्घाटन उपायुक्त मेघा भारद्वाज, उप विकास आयुक्त ऋतुराज, जिला परिषद उपाध्यक्ष निर्मला देवी, प्रमुख अंजु देवी सहित कई लोगों ने फीता काटकर एवं दीप प्रज्वलित कर किया। उपायुक्त मेघा भारद्वाज ने कहा कि आवास

दीप जलाकर कार्यक्रम का शुभारंभ करतीं उपायुक्त मेघा भारद्वाज। ● फोटोन न्यूज

विहीन लोगों को अबुआ आवास देना सरकार की पहली प्राथमिकता है। सरकार के निदेर्शानुसार योजनाओं को जन-जन तक लाभ जनता तक पहुंचाया जाएगा।

उपायुक्त मेघा भारद्वाज, उप विकास आयुक्त ऋतुराज सहित कई लोगों ने स्टॉल का निरीक्षण किया। प्रखंड के पदाधिकारियों से जुड़े लोगों द्वारा अपने-अपने विभाग के स्टाल लगाए गए। शिविर में अबुआ आवास, मनरेगा, स्वास्थ विभाग, पशुपालन, समाज कल्याण, कृषि, प्रधान मंत्री आवास, जाति आवासीय, भूमि सुधार, जेएसएलपीएस, बाल विकास परियोजना, ई श्रम योजना, शिक्षा, राशन कार्ड, वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन आदि शामिल किए गए।

सड़क दुर्घटना में दो सगे भाईयों की मौत विरोध में सड़क जाम, चालक गिरफ्तार

एक का शव वहीं पड़ा रहा, दूसरे को घसीटते हुए दूर ले गया ट्रक

PHOTON NEWS PALAMU : मेदिनीनगर सदर थाना क्षेत्र के डालटनगंज-पांकी मुख्य पथ पर रजवाडीह पंचमुखी हनुमान मंदिर के पास बुधवार को सड़क दुर्घटना में दो सगे भाइयों की मौत हो गई। दोनों बाइक पर सवार थे। उन्हें एक ट्रक ने रौंद दिया। एक का व्यक्ति का शव रजवाडीह में पड़ा रहा जबकि ट्रक दूसरे व्यक्ति को घटनास्थल से घसीटते हुए कुछ दूर जमुने तक ले गया।

सूचना मिलने ही सदर थाना

दुर्घटना के बाद सड़क जाम करते लोग। ● फोटोन न्यूज

पुलिस ने ट्रक को जब्त किया और चालक को कब्जे में ले लिया है। मृतकों की पहचान तरहसी थाना क्षेत्र के धनगाई निवासी संजू गिरी और रविंद्र गिरी के रूप में हुई है। दोनों सगे भाई थे। एक स्टांप वेंडर और दूसरा ताईद का काम करते थे। दोनों भाई एक बाइक पर सवार होकर मेदिनीनगर कचहरी आ रहे थे।

सूचना मिलने के बाद मृतक के परिजनों और स्थानीय लोगों ने घटनास्थल पर पहुंचकर सड़क पर जाम लगा दिया और मुआवजे की मांग करने लगे। थाना प्रभारी गौतम कुमार भी दलबल के साथ मौके पर पहुंचे और लोगों को जाम हटाने के लिए समझने का प्रयास कर रहे हैं।

पांडा बोदरा और उसके दोस्त की हत्या का खुलासा चार आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल

PHOTON NEWS KHUNTI : मुरहू थाना क्षत्रे के कोवा गांव स्थित अपनी ससुराल में पत्नी से झगड़ा करने के कारण ही मुरहू के पांडा बोदरा और उसके साथ गए उसके दोस्त बंदगांव थाना क्षेत्र के सिबियन हपदगड़ा की हत्या कर उनके शवों को छिपाने की नीयत से गांव के समीप जंगल की खाई में गाड़ दिया गया था। पुलिस ने इस दोहरे हत्याकांड में शामिल चार आरोपितों को गिरफ्तार कर मामले का खुलासा कर लिया है।

गिरफ्तार आरोपितों में मुरहू के कोवा गांव निवासी मृतक पांडा बोदरा का ज्येष्ठ साला सनिका पूर्ति, लेंगा पूर्ति, एसी थॉमस और एसी सिंगराय शामिल हैं। गिरफ्तार आरोपितों ने पुलिस के समक्ष अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। गिरफ्तार आरोपितों की निशानदेही पर पुलिस ने हत्या में प्रयुक्त एक लोहे का साबल, बांस और जमीन में गाड़ी गई मृतकों की एक मोटरसाइकिल को बरामद कर लिया है। बुधवार को गिरफ्तार चारों आरोपितों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

थाना के समीप चलाया गया मोटरसाइकिल जांच अभियान

KODERMA : चंदवारा थाना के समीप थाना प्रभारी नीतीश कुमार के नेतृत्व में मोटर साइकिल जाच अभियान चलाया गया। आने-जाने वाले सभी दो पहिया वाहनों को रुकवा कर हेलमेट, ट्रिपल लोड और गाड़ी से संबंधित कागजात की जांच की गई। वहीं नियमों का पालन नहीं करने पर दर्जनों वाहनों को पकड़ कर थाना में रखा गया है।

आजादनगर में गुमटी का ताला तोड़ हजारों की चोरी

JAMSHEDPUR : जमशेदपुर के आजादनगर थाना अंतर्गत ओल्ड पुरुलिया रोड स्थित जेसू भवन के पास एक गुमटी का ताला तोड़ चोरी कर ली गई। घटना की जानकारी गुमटी संचालक कपाली निवासी मो अलाउद्दीन को तब हुई जब वे बुधवार सुबह दुकान खोलने पहुंचे। उन्होंने पाया कि दुकान का ताला टूटा हुआ है और दुकान में चोरी हो गई है। इसकी सूचना पुलिस को दी गई। घटना स्थल के पास से ताला तोड़ में प्रयुक्त रॉड भी बरामद किया गया है। सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच में जुट गई। अलाउद्दीन ने बताया कि अज्ञात चोरों द्वारा देर रात रड के सहारे दुकान का ताला तोड़कर चोरी की घटना को अंजाम दिया है। दुकान मलिक ने बताया पहले भी उनके दुकान में चोरी हो चुकी है। उस वक्त आजाद नगर थाना पुलिस को लिखित आवेदन दिया गया था मगर किसी तरीके की कोई कार्रवाई नहीं की गई।

जामताड़ा : डुप्लीकेट लॉटरी टिकट के छपाईखाना का भंडाफोड़, नौ गिरफ्तार

8 लैपटॉप 12 प्रिंटर, 1300 बंडल लॉटरी टिकट सहित अन्य सामान बरामद

PHOTON NEWS JAMTARA : मिहिजाम थाने की पुलिस ने डुप्लीकेट लॉटरी टिकट के छपाईखाने का भंडाफोड़ करते हुए धंधे में लिप्त 9 लोगों को गिरफ्तार किया है। गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने बुधवार की सुबह मिहिजाम थाना क्षेत्र के अमोई ब्रिज के समीप बंद पड़े लाइन होटल में छापेमारी कर भारी मात्रा में डुप्लीकेट लॉटरी टिकट बरामद किया। छापेमारी अभियान में पश्चिम बंगाल के आसनसोल-दुगार्पुर पुलिस कमिश्ननरेट के कुल्टी थाना की पुलिस भी शामिल थी। जामताड़ा एसपी अनिमेष नैथानी ने बताया कि जामताड़ा-मिहिजाम मुख्य मार्ग पर बंद पड़े अमन लाइन होटल में डुप्लीकेट लॉटरी टिकट की छपाई की जा रही थी। वहां से नकली लॉटरी टिकटों को पश्चिम बंगाल में

मीडिया को जानकारी देते एसपी व गिरफ्तार ओरापी। ● फोटोन न्यूज

बेचा जाता था। अवैध छपाईखाना से 8 लैपटॉप 12 प्रिंटर, 5 स्टेबलाइजर, 1300 बंडल लॉटरी टिकट, सात बोरा प्रिंट किया हुआ टिकट, एक हैवी पेपर कटिंग मशीन, उपयोग किया हुआ कार्टेज 30 पीस बरामद किया गया है। गिरफ्तार आरोपियों में नारायणपुर थाना क्षेत्र के घाटी शिमला निवासी कुणाल मंडल, देवलबाड़ी के विशाल मंडल, धनबाद जिले के गोविंदपुर थाना क्षेत्र के बेलाटांड़ निवासी शिबू गोप, निरसा के सांवलापुर हेमू मल्लिक, आदित्य मल्लिक, अनंत मल्लिक व आस्तिक अधिकारी शामिल हैं।छापेमारी अभियान में मिहिजाम थाना प्रभारी भास्कर झा सहित अन्य पुलिस जवान शामिल थे।

टनल से मजदूरों के बाहर निकलने पर खूंटी के तीन गांवों में जश्न

KHUNTI : उत्तराखंड के उत्तरकाशी जनपद के सिलक्यारा टनल में फंसे खूंटी जिले के कर्रा प्रखंड के तीन मजदूरों के सकुशल बाहर निकलने के बाद तीन गांवों डुमारी, गुमडू और मधुगामा में उत्सव का माहौल है। मजदूरों की रिहाई पर बुधवार को गांव में मिठाइयां बांटी गई। लोग अपने-अपने गांव के मजदूरों का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। भले ही टनल में फंसे मजदूरों को सकुशल बाहर निकालने में वहां के मजदूर से लेकर सेना के अधिकारियों और प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों ने सराहनीय योगदान दिया लेकिन गांव-देहात में सिर्फ एक ही चर्चा है मोदी जी ने बहुत ही अच्छा काम किया। दस वर्ष के बच्चे से लेकर 90 साल तक के बुजुर्ग कहते हैं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बहुत ही सराहनीय काम किया। उन्होंने 41 मजदूरों को नई जिंदगी देकर उनके परिवार को उजड़ने से बचा लिया।

आदर्श आचार संहिता उल्लंघन सहित अन्य आरों पर हुआ था केस

एमपी-एमएलए कोर्ट में पेश हुए मंत्री मिथिलेश, साक्ष्य के अभाव में रिहा

PHOTON NEWS PALAMU : राज्य के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश ठाकुर आदर्श आचार संहिता उल्लंघन सहित अन्य मामले में बुधवार को पलामू व्यवहार न्यायालय में पेश हुए। वे एमपी एमएलए कोर्ट में न्यायाधीश एसके मुंडा के समक्ष उपस्थित हुए और अपना पक्ष रखा। न्यायाधीश द्वारा मंत्री का पक्ष सुनने के बाद उन्हें साक्ष्य के अभाव में रिहा कर दिया।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2014 में विधानसभा चुनाव के दौरान मतदान केंद्र पर हंगामा करने और वोटरों को प्रभावित करने सहित अन्य आरोप में मिथिलेश ठाकुर के खिलाफ आदर्श आचार संहिता उल्लंघन का मामला दर्ज कराया गया था। सुनवाई के बाद फैसले के लिए बुधवार की तिथि निर्धारित की गई थी। निर्धारित तिथि पर मंत्री न्यायालय में सशरीर उपस्थित हुए

कोर्ट जाते मंत्री मिथिलेश ठाकुर। ● फोटोन न्यूज

और अपना पक्ष रखा। उन्होंने कहा कि उनकी ऐसी कोई मनसा नहीं थी। उन्हें फंसाने के लिए उनके विरोधी ने उनके खिलाफ मामला दर्ज करवाया था।

न्यायालय ने मंत्री मिथिलेश ठाकुर की बातों को सुनने के बाद उन्हें साक्ष्य के अभाव में केस से रिहा कर दिया। न्यायालय से बाहर आने के बाद मंत्री मिथलेश ठाकुर ने कहा कि उन्हें न्यायालय पर पूरा भरोसा था। जानबूझकर उन्हें आचार संहिता के उल्लंघन मामले में आरोपी बनाया गया था, लेकिन आज उन्हें न्याय मिला।

मामले में मंत्री के अधिवक्ता परेश तिवारी ने बताया कि आदर्श आचार संहिता उल्लंघन के साथ साथ 504, 171 एफ आईपीसी में मामला दर्ज कराया गया था। 15 गवाहों की गवाही के बाद भी प्रॉसीक्यूशन केस को साबित नहीं कर सका। नतीजा कोर्ट से मंत्री मिथिलेश ठाकुर बाइज्जत रिहा किए गए।

एसडीओ कार्यालय के सामने से हटायी गई मेदिनी राय और नीलाम्बर-पीताम्बर की प्रतिमा जल्द लगाने की मांग

12 दिसंबर से अनिश्चितकालीन आंदोलन का लिया फैसला

PHOTON NEWS PALAMU : कचहरी परिसर में एसडीओ कार्यालय के सामने से हटायी गई राजा मेदिनी राय एवं नीलाम्बर पीताम्बर की प्रतिमा जल्द लगाने की मांग की गई है। इस मामले में 11 दिसम्बर तक कोई निर्णय नहीं लिया गया तो 12 दिसम्बर से अनिश्चितकालीन आन्दोलन करने का निर्णय लिया गया है।

संविधान बचाओ मोर्चा के संयोजक मंडल के सदस्यों ने बुधवार को स्वागत होटल में संयुक्त पत्रकार वार्ता में यह जानकारी दी। उन्होंने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से राजा मेदिनीराय की और शहीद नीलाम्बर पीतांबर की

मीडिया को जानकारी देते समिति के लोग। ● फोटोन न्यूज

प्रतिमा उपायुक्त कार्यालय के समक्ष पलामू समाहरणालय स्थित पार्क में लगवाने की मांग की है।

मोर्चा के सदस्यों ने कहा कि डालटनगंज का नाम राजा मेदिनीराय के नाम पर मेदिनीनगर किया गया लेकिन उनकी प्रतिमा नहीं लगना शर्म की बात है। राजा मेदिनी राय का कार्यकाल इतिहास में स्वर्ण काल के नाम से जाना जाता है। उपायुक्त से कई बार प्रतिमा लगाने का आग्रह किया लेकिन सिर्फ टाल-मटोल किया गया है। अन्ततः क्षुब्ध होकर सामाजिक संगठनों के संयुक्त बैनर संविधान बचाओ मोर्चा ने पिछले दिनों भगवान बिरसा मुंडा की 148वीं जयंती एवं झारखंड राज्य के 23वां स्थापना दिवस पर 15 नवंबर को कचहरी परिसर में तीनों महापुरुषों की प्रतिमा लगाई थी।

साथ ही कहा कि जिस तरह मोर्चा के सदस्यों को सदर एसडीओ ने बुलाकर सहमति की बात कहकर अपनी निगरानी में 25 नवंबर की रात 8 बजे नगर निगम के जेसीबी से प्रतिमा को हटवाया है। इसका कड़ी शब्दों में निंदा करते हैं।

इस मौके पर संयोजक मंडल रवि पाल (सामाजिक न्याय परिषद पलामू प्रमंडलीय अध्यक्ष), चन्द्रधन महतो (हुल झारखंड क्रान्ति दल प्रदेश उपाध्यक्ष), टाइगर रौशन मेहता (सामाजिक, न्याय परिषद का जिला अध्यक्ष), अजय सिंह चेरो (अखिल भारतीय आदिवासी महासभा सचिव), त्रिपुरारी सिंह चेरो (अखिल अखिल भारतीय आदिवासी महासभा अध्यक्ष), जंगली महतो (पेंशनर समाज उपाध्यक्ष) ललन प्रजापति, दिलकेश्वर कुशवाहा, शशि रंजन भारती, अनुराग भारती आदि लोग उपस्थित थे।

सांसद ने आईटीबीपी के समीप बने पीसीसी पथ का किया उद्घाटन

PHOTON NEWS RANCHI : कांके प्रखंड अंतर्गत राज्य सभा सांसद दीपक प्रकाश के सांसद मद से ग्राम सुकुरहुटू आईटीबीपी के समीप राजकुमार महतो के घर से जिरगा मुंडा के घर तक पी.सी.सी. पथ का उद्घाटन बुधवार को राज्य सभा सांसद दीपक प्रकाश ,कांके विधायक समरी लाल ने सम्मिलित तोर पर फीता काटकर किया। मौके पर मौजूद दीपक प्रकाश ने कहा कि हमारा लक्ष्य ही है 'सबका साथ सबका विकास'। मुझे भाजपा नेता अनिल टाईगर के द्वारा जानकारी दी गई थी कि आईटीबीपी के समीप पीसीसी सड़क की आवश्यकता है, मैंने सांसद कोष से सड़क देने का काम किया।

उद्घघाटन समारोह में मुख्य रूप से पूर्व जीप सदस्य सह प्रदेश कार्य समिति सदस्य अनिल टाईगर ,कांके मंडल अध्यक्ष सह मुखिया राम लखन मुंडा, जिला परिसद सदस्या सुषमा देवी ,मंडल अध्यक्ष पिठोरिया गोपाल महतो, राज कुमार महतो, अनुज कुमार, इम्तियाज अहमद, शिव कुमार, दीपक कुमार, पवन कुमार, विजय मुंडा, हरे कृष्णा महतो, पुरुषोत्तम दास गोस्वामी, रूप लाल महतो, तुलसी महतो, दीप नारायण महतो, प्रभात भूषण मौजूद थे।

BRIEF NEWS

दो वार्डों में 42 शिकायतों का ऑन स्पॉट निपटारा

RANCHI : आपकी योजना-आपकी सरकार- आपके द्वार कार्यक्रम के तहत बुधवार को रांची नगर निगम की ओर से दो वार्ड में शिविर का आयोजन किया गया। वार्ड नंबर सात और वार्ड नंबर आठ में शिविर का आयोजन किया गया। दोनों शिविरों में कुल मिलाकर 42 शिकायतों का निपटारा ऑन स्पॉट किया गया। अपर प्रशासक कुंवर सिंह पाहन ने बुधवार को बताया कि शिविर में होल्डिंग, ट्रेड, जन्म-मृत्यु निबंधन, जल कर भुगतान, प्रधानमंत्री आवास योजना के लिए आवेदन लिया गया। सभी शहरवासी निगम स्तर के सेवाओं का लाभ इन शिविरों में आ कर ले सकते है। उन्होंने सभी लोगों से अपील की है कि अपने नजदीकी वार्ड में आयोजित शिविर में आएं और योजनाओं का लाभ लें।

कांग्रेस ने रेस्क्यू टीम को दी बधाई

RANCHI : उत्तराखंड के सिलक्यार सुरंग से 17 दिनों के बाद 41 श्रमिकों को सफलतापूर्वक निकाले जाने पर रांची जिला कांग्रेस कमेटी ने रेस्क्यू टीम के सभी सदस्यों को बधाई दी है रांची जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ राकेश किरण महतो ने बुधवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि उत्तराखंड से झारखंड के 15 मजदूरों को सकुशल बाहर निकलना राहत और सबसे खुशी की बात है। इस ऑपरेशन के बाद झारखंड की महागठबंधन सरकार भी लगातार श्रमिकों के परिजनों से संपर्क में है। सभी श्रमिक सुरक्षित और स्वस्थ रहें और उनके बेहतर उपचार के लिए व्यवस्था की गई है। कांग्रेस प्रवक्ता चंद्र रश्मि ने कहा कि 17 दिनों तक चल रहा बचाव अभियान कामयाब रहा और श्रमिकों को दोबारा नया जीवन मिला। टनल से बाहर निकलने वाले रांची ग्रामीण क्षेत्र के अनिल बेदिया, राजेन्द्र बेदिया, सुकराम बेदिया के परिवार के हर दुख-सुख में रांची जिला कांग्रेस परिवार साथ खड़ा है।

बरियातू में एक घर में लाखों की चोरी

RANCHI : बरियातू थाना क्षेत्र के शंकर नगर में रहने वाली महिला सुषमा नाग मंगलवार की रात घर खुला छोड़कर सो गई इसी बीच चोरों ने घर का सामान उड़ा लिया। महिला के बयान पर केस हुआ है। महिला ने पुलिस को बताया कि उनके दो बेटे शहर से बाहर गए हैं। मंगलवार की रात घर के बाहर स्टोर रूम में मोबाइल पर बात कर रही थी। बात करते करते उसे नींद आ गई और वह सो गई। घर खुला रह गया। बुधवार की सुबह महिला की नींद खुली तो देखा कि घर का राशन,साड़ी,मोबाइल और अन्य सामान गायब था। महिला का कहना है कि दोनों बेटा लौट कर आएंगे तो पता चलेगा कि और क्या क्या सामान गायब है। पुलिस का कहना है कि घर के समीप लगे सीसीटीवी का फुटेज खंगाला जा रही है। महिला के पड़ोसियों से पूछताछ की गई लेकिन कोई जानकारी नहीं मिली है। घर खुला देखकर चोर आसानी से घर में प्रवेश कर गए और सामान लेकर निकल गए।

युवक का शव बरामद

RANCHI : नामकुम थाना क्षेत्र के कव्वाली गांव में बुधवार की सुबह एक युवक का शव मिला। घटना की सूचना मिलते ही नामकुम थाने की पुलिस मौके पर पहुंची और जांच-पड़ताल कर शव को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया। नामकुम थाना प्रभारी सुनील कुमार तिवारी ने बताया कि शव की शिनाख़्त अबतक नहीं हो सकी है। उसके शरीर में भी चोट के निशान नहीं मिले हैं। प्रथम दृष्टया मामला गड्ढे में गिरने से मौत का प्रतीत हो रहा है। फिलहाल मामले की जांच-पड़ताल की जा रही है।

विकास कार्यों के कारण दो ट्रेनें रहेंगी रद्द

RANCHI : विकास कार्यों के कारण दो ट्रेनें रद्द रहेंगी। रेलवे की ओर से बुधवार को मिली जानकारी के अनुसार चक्रधरपुर मंडल के तहत राउरकेला स्टेशन पर विकास कार्यों की वजह से रेलवे पटरी को ब्लॉक किया जाएगा। इस दौरान ट्रेन संख्या 18175 हटिया-झारसुगुड़ा मेमू पैसेंजर ट्रेन यात्रा प्रारंभ 29 नवम्बर और ट्रेन संख्या 18176 झारसुगुड़ा-हटिया मेमू पैसेंजर ट्रेन यात्रा प्रारंभ 30 नवम्बर को रद्द रहेगी ।

atomy
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

होटल बीएनआर में रांची और चक्रधरपुर रेल मंडल से जुड़े सांसदों की हुई बैठक

मंदिर जैसे मुद्दों पर कार्रवाई से पहले जनप्रतिनिधियों से बात करें : संजय

PHOTON NEWS RANCHI : रांची रेल मंडल और चक्रधरपुर रेल मंडल से जुड़े सभी सांसदों की मंडल स्तरीय बैठक रांची के होटल बीएनआर में बुधवार को संपन्न हुई। इसमें दोनों मंडलों के रेलवे के अधिकारी और महाप्रबंधक भी मौजूद थे। रांची के सांसद संजय सेठ ने बैठक में एजेंडा रखा और उस पर चर्चा की। इसके अलावा रांची के कई ज्वलंत मुद्दों पर भी प्रमुखता से बात रखी।

रांची रेल मंडल और चक्रधरपुर रेल मंडल से जुड़े सभी सांसदों की मंडल स्तरीय बैठक में सांसद संजय सेठ व अन्य।

रेलवे के द्वारा रांची स्टेशन के समीप बने मंदिर को हटाने के नोटिस के मामले में सांसद ने अधिकारियों का ध्यान खींचा और स्पष्ट रूप से कहा कि मंदिर हमारी आस्था के केंद्र हैं। मंदिरों से लोगों का भावनात्मक लगाव होता है। मंदिरों की प्राण प्रतिष्ठा की जाती है। इसलिए किसी भी कीमत पर इस तरह का कोई कदम उठाने से पहले किसी भी क्षेत्र में रेलवे के अधिकारियों को संबंधित जनप्रतिनिधियों से बात करनी चाहिए। इसके बाद ही इस तरह का कोई कदम उठाना चाहिए।

सांसद ने कहा कि नामकुम, टाटीसिलवे और सिल्ली रेलवे स्टेशन में पूर्व की भांति सभी ट्रेनों का ठहराव अविलंब सुनिश्चित किया जाए। सिल्ली मुरी के बांसारूली में भी सड़क निर्माण का मामला भी सांसद ने बैठक में उठाया। इसके अलावा नामकुम में फुट ओवरब्रिज निर्माण पर काम करने का सुझाव सांसद ने अधिकारियों को दिया। सांसद ने कहा कि चुटिया में ओवर ब्रिज का प्रस्ताव भेजें। यह प्रयास हो कि किसी का घर नहीं टूटे। अब बेहतर तकनीकी का इस्तेमाल करें और यह कार्य करें। किसी भी नागरिक का घर नहीं टूटे यह ध्यान रखें। सांसद ने यह भी कहा कि धनबाद फिरोजपुर गंगा सतलज एक्सप्रेस का विस्तार रांची तक हो इसके लिए अविलंब प्रस्ताव रेलवे बोर्ड को भेजा जाना चाहिए। मेसरा, बरकाकाना, रामगढ़, मैक्लुस्कीगंज, खलारी और राय रेलवे स्टेशन को धनबाद रेल मंडल से हटाकर रांची रेल मंडल के अधीन करने से संबंधित प्रस्ताव भेजने की बात सांसद ने इस बैठक में कही। सांसद ने चांडिल क्षेत्र के गेट संख्या के एस सेवन में दो पहिया वाहनों के आवागमन के लिए फुट ओवर ब्रिज का निर्माण किए जाने की भी बात कही।

मंदिर आस्था का केंद्र

सांसद ने स्पष्ट रूप से कहा कि मंदिर आस्था का केंद्र हैं। मामला संवेदनशील है। योजना बनाने से पहले विचार करें। नोटिस देने से पहले विचार करें। जनमानस को पीड़ित करने वाला काम नहीं करें। हम भी विकास चाहते हैं। जनभावनाओं के साथ यह काम किया जाए। बीच का रास्ता निकालें। मंदिर का गर्भगृह नहीं छेड़े। सांसद ने इस बैठक में रांची से बेंगलुरु चेन्नई एनार्कुलम कोयंबटूर के लिए साप्ताहिक अंत्योदय ट्रेन का परिचालन करने, हटिया पैसेंजर का बरकाकाना तक विस्तार करने के लिए कहा। साथ ही यह भी कहा कि कई मामलों में राज्य सरकार के द्वारा प्रस्ताव नहीं भेजा जाता है। ऐसी स्थिति में रेलवे को संवेदनशील बनना चाहिए और राज्य सरकार से प्रस्ताव मांगने की पहल करनी चाहिए।

एसीबी के डीएसपी को चेतावनी

अपराध के मामलों में सीनियर अफसरों से बात कर करें कार्रवाई

CRIME REPORTER RANCHI : राज्य सरकार ने पुलिस उपाधीक्षक, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) रांची व तत्कालीन डीएसपी सह थाना प्रभारी साइबर क्राइम थाना श्रद्धा केरकेट्टा को भविष्य में सचेत रहने की चेतावनी दी है ओर स्पष्ट निर्देश दिया है कि वे अपराध के मामलो में वे सूक्ष्मतापूर्वक एवं विधि सम्मत तरीके से यदि आवश्यक हो तो वरीय पदाधिकारियों से बात कर ही अग्रतर कार्रवाई करेंगी, ताकि अपराधिक मामलों के निष्पादन में कहीं संदेह उत्पन्न न हो एवं विधि सम्मत कार्रवाई संपन्न की जा सके। दरअसल, उनके खिलाफ यह मामला सामने आया था कि वरीय पुलिस पदाधिकारियों को सूचित किए बिना ही सेक्स रैकेट के एक सरगना को छोड़ दिया गया। वरीय पदाधिकारियों को सूचित किए बिना तथा सूचना का पूर्व सत्यापन किए बिना कुछ अपराधियों को पीआर बांड पर मुक्त किया गया। पूरे मामले पर अपराध अनुसंधान विभाग रांची ने जांच प्रतिवेदन भेजा और 11 जुलाई 2023 को पत्र लिखकर राज्य सरकार को कार्रवाई, चेतावनी देने की अनुशंसा की। मामले की समीक्षा गृह विभाग के स्तर पर की गयी। इसके बाद उन्हें भविष्य में सचेत रहने की चेतावनी देते हुए मामला को समाप्त कर दिया गया है।

स्टेशन पर ट्रेन पहुंची लेकिन नहीं चढ़ा था जवान

अधिकारियों की हाईलेवल जांच शुरू

RANCHI : डोरंडा थाना की पुलिस और सेना के अधिकारियों ने जवान मनोज सिंह की मौत के मामले में जांच शुरू कर दिया है। पुलिस बुधवार को घटना स्थल पर गई थी। इसके अलावा पोस्टमार्टम रिपोर्ट लेने का प्रयास किया। पुलिस की जांच में इस बात का खुलासा हुआ है कि घटना के दिन जवान मनोज सिंह बूटी मोड़ स्थित आर्मी कैंप से शाम छह बजे निकलकर सात बजे रांची स्टेशन पहुंच गया था। स्टेशन पर पहुंचने के बाद वह एक बार भी बैठा नहीं था। जवान स्टेशन पर लगातार टहल रहा था। रात 12 बजे स्टेशन पर ट्रेन पहुंची लेकिन जवान ट्रेन में नहीं चढ़ा। स्टेशन पर ट्रेन के रहते जवान अपना सामान लेकर कडरू की ओर निकल गया। इसके बाद उसे नहीं देखा गया। शुरूआती जांच में यह स्पष्ट हो रहा है कि जवान की हत्या नहीं हुई है।

एक जनवरी 2024 तक 18 साल पूरा करने वालों का नाम मतदाता सूची में जोड़ें : डीसी

डीसी ने कॉलेजों के प्राचार्य और यूनिवर्सिटी के कुलसचिवों संग की बैठक

PHOTON NEWS RANCHI : रांची जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह डीसी राहुल कुमार सिन्हा ने बुधवार को समाहरणालय सभागार में कॉलेज के प्राचार्य एवं यूनिवर्सिटी के कुलसचिव के साथ बैठक की। डीसी ने कहा कि कॉलेजों में पढ़ने वाले ऐसे छात्र-छात्राएं जिनकी उम्र (1 जनवरी 2024) तक उम्र 18 वर्ष हो जाएगी। उनके मतदाता सूची में नाम जुड़वाने के लिए जागरूक करें। राहुल कुमार सिन्हा ने प्राचार्य एवं कुलसचिव को निर्देश देते हुए कहा की अपने-अपने कॉलेज में कैंपस एंबेसडर के माध्यम से छात्र-छात्राओं को मतदाता बनने के लिए जागरूक करें। ताकि योग्य छात्र-छात्राएं मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज करा सकें और आगामी चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकें। डीसी ने मतदाता सूची से जुड़े अधिकारियों को निर्देश दिया कि प्राथमिकता के आधार पर छूटे और योग्य मतदाताओं को नाम लिस्ट में जोड़ें और पहचान पत्र निर्गत करें। साथ ही कहा कि जो मतदाता दिव्यांग श्रेणी में आते हैं, उन्हें मतदान केंद्रों में विशेष सुविधा मिले, यह सुनिश्चित कर लें ताकि बाद में उन्हें मतदान के दौरान कोई समस्या का सामना नहीं करना पड़े। बैठक में आए सभी कॉलेजों के प्राचार्य और विश्वविद्यालय के कुलसचिवों को प्रपत्र-6 एवं मतदाता जागरुकता संबंधी पोस्टर दिया गया।

समाहरणालय सभागार में अधिकारियों के साथ बैठक करते रांची डीसी।

बता दें कि, विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम-2024 का कार्य चल रहा हैं। जिसमें 09 दिसंबर 2023 तक आपत्ति का कार्य किया जाना है। जिनका नाम मतदाता सूची में नहीं जुड़ा है, वे प्रपत्र-6 भर कर मतदाता सूची में या बीएलओ एप के माध्यम से अपना नाम जुड़वा सकते हैं।

बूटी मोड़ और बरियातू में ब्राउन शुगर सप्लाई करने वाले तीन युवकों को पुलिस ने दबोचा

32 पुड़िया ब्राउन शुगर बरामद, युवकों को कम दामों में देकर लगाते थे नशे की लत

CRIME REPORTER RANCHI : रांची पुलिस ने बूटी मोड़ और बरियातू इलाके में ब्राउन शुगर सप्लाई करने वाले तीन युवक राहुल कुमार, आलोक कुमार और अभिषेक राय को 32 पुड़िया ब्राउन शुगर के साथ गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। तीनों आरोपी सदर थाना क्षेत्र के रहने वाले हैं। सिटी एसपी राजकुमार मेहता ने बताया कि आरोपियों के द्वारा बूटी मोड़ और बरियातू इलाके में ब्राउन शुगर बेचा जाता था। इस इलाके में 20 से 25 वर्ष के युवकों को आरोपी चिन्हित करते थे और पहले उन्हें कम पैसा में ब्राउन शुगर देते थे। युवकों को लत लग जाती थी तो आरोपी ज्यादा पैसा लेने लगते थे। आरोपी पूरे इलाके में उन्हीं लोगों को ब्राउन शुगर देते थे जिनका मोबाइल नंबर उनके पास रहता था। अंजान नंबर से फोन आने पर आरोपी उन्हें ब्राउन शुगर नहीं देते थे। इन दोनों इलाकों में जो हर वक्त ब्राउन शुगर लेता था उसी का नंबर आरोपी अपने पास रखते थे। पूछताछ में तीनों आरोपियों ने बताया कि उनके गैंग में एक दर्जन से अधिक युवक शामिल हैं। पुलिस को कुछ अन्य युवकों के बारे में जानकारी मिली है। पुलिस सभी का सत्यापन कर रही है। पुलिस को इस गिरोह के सरगना का नाम मिल गया है। पुलिस उसे पकड़ने के लिए छापेमारी कर रही है।

गिरफ्तार आरोपियों की जानकारी देते रांची के सिटी एसपी राजकुमार मेहता।

हजारीबाग और चतरा से लाते थे ब्राउन शुगर

सिटी एसपी का कहना है कि आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि हजारीबाग और चतरा से ब्राउन शुगर रांची पहुंचता है। इसके बाद आरोपियों को ब्राउन शुगर मिलता था। आरोपियों को तीन सौ रुपये में पुड़िया मिलता है जिस वह पांच से छह सौ रुपये में बेचते हैं। पुलिस का कहना है कि तीनों आरोपी पहले भी दूसेर मामले में जेल जा चुके हैं। पुलिस की एक टीम जल्द ही हजारीबाग और चतरा जाएगी। इन दोनों जिला में छापेमारी कर ब्राउन शुगर का कारोबार करने वाले आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष व प्रदेश प्रभारी ने नेताओं संग की बैठक

टीएमसी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मधुकर ने सर्मथकों संग थामा पार्टी का दामन

PHOTON NEWS RANCHI : जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह सांसद राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह, बिहार सरकार के भवन निर्माण मंत्री सह झारखंड जदयू के प्रभारी डॉ अशोक चौधरी और बिहार विधान परिषद के सदस्य एवं प्रदेश जदयू के सह प्रभारी विजय कुमार सिंह ने प्रदेश जदयू के नेताओं के साथ बैठक की। यह बैठक रांची में राजकीय अतिथिशाला में हुई। इस दौरान जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह ने सदस्यता अभियान को जारी रखने के निर्देश दिया और आगामी चुनाव को देखते हुए संगठन की मजबूती पर जोर दिया। इस दौरान तृणमूल कांग्रेस झारखंड के पूर्व अध्यक्ष मधुकर सिंह ने अपने समर्थकों के साथ जदयू की सदस्यता ग्रहण की। जदयू के प्रदेश अध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद खीरू महतो ने संगठन के कार्यों की जानकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह एवं प्रदेश प्रभारी डॉ अशोक चौधरी को दी। इस दौरान नेताओं ने आगामी चुनावों के मद्देनजर संगठन को बूथ स्तर तक पहुंचाने का निर्देश दिया।

पूर्व अध्यक्ष मधुकर सिंह को पुष्प देकर सम्मानित करते जदयू प्रभारी।

राजधानी रांची में छाएगा कोहरा, बढ़ेगी कंपकंपी

RANCHI : झारखंड में अब कोहरा का असर दिखेगा। राज्य के उत्तर पूर्वी हिस्से में कहीं-कहीं बादल छाये रहने की संभावना है। मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार चार दिसंबर तक उत्तरी पूर्वी हिस्से में बादल छाये रहेंगे। 30 नवंबर को राज्य के उत्तर पूर्वी हिस्से में कहीं-कहीं दिन में बादल छाये रहने की संभावना है। वहीं, कुछ हिस्सों में हल्के दर्जे की बारिश हो सकती है। इस हिस्से में धनबाद, देवघर, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा, साहेबगंज जिला शामिल है। एक दिसंबर से कहीं-कहीं बादल छाये रहने की बात कही गयी है। राजधानी रांची में एक दिसंबर से 4 दिसंबर तक आंशिक बादल का असर देखा जा सकता है। कोहरा के कारण लोगों को अधिक ठंड का एहसास होगा। तीन और चार दिसंबर को बादल गहरा सकते हैं। आने वाले पांच दिनों तक राज्य के न्यूनतम तापमान में गिरावट नहीं दर्ज की जायेगी।

डीजीपी ने सभी जिलों के एसएसपी व एसपी के साथ की समीक्षा बैठक

बढ़ रहे एसटी-एससी के मामले, बेहतर अनुसंधान करना बेहद जरूरी : अजय

CRIME REPORTER RANCHI : एसटी-एससी केस को लेकर झारखंड के डीजीपी अजय कुमार सिंह ने समीक्षा बैठक की। डीजीपी ने बुधवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी जिलों के एसएसपी, एसपी के साथ समीक्षा की। आपको बता दें कि झारखंड में साल 2019 से 31 मई 2023 तक एससी-एसटी एक्ट में 4,552 दर्ज हुए है। जिनमें 2363 मामलों में ही चार्जशीट दाखिल किया गया है। झारखंड में साल 2023 में हजारीबाग, गढ़वा,रांची, गिरिडीह और पलामू जिले में एसटी-एससी के सबसे अधिक मामले दर्ज हुए हैं। डीजीपी ने समीक्षा बैठक के दौरान कहा कि एसटी-एससी से जुड़े मामले बढ़े हैं। ऐसे मामलों में बेहतर अनुसंधान करना बेहद जरूरी होता है। क्योंकि अभी तक ऐसे मामलों में अभी तक केस के आईओ डीएसपी ही है। इसलिए लंबित मामलों की संख्या ज्यादा है। सरकार की तरफ से अनुसंधान को लेकर नई नियमावली बनाई गई है, जिसके तहत अब इंस्पेक्टर भी ऐसे मामलों का अनुसंधान कर पाएंगे। इससे लंबित कांडों को जल्द से जल्द निपटारा करने में मदद मिलेगी।

डीजीपी अजय कुमार सिंह ।

- एसटी-एससी केस के लंबित मामलों के निपटारे का दिया निर्देश
- नई नियमावली के तहत अब इंस्पेक्टर भी मामलों का अनुसंधान कर पाएंगे

जिले के करीब 150 जतरा आयोजक होंगे शामिल, दिखाएंगे एकता, होगा महाजुटान

मोरहाबादी में 31 जनवरी को लगेगा झारखंडी महाजतरा

PHOTON NEWS RANCHI : नव वर्ष में राजधानी के मोरहाबादी मैदान में आदिवासियों द्वारा दो दिवसीय महा-जतरा (मेला) का आयोजन किया जा रहा है। महा-जतरा 31 जनवरी व एक फरवरी को आयोजित किया जाएगा। झारखंडी महा-जतरा समिति के अध्यक्ष अंतू तिर्की ने इसकी तैयारी को लेकर बुधवार को मोरहाबादी मैदान में जिले के विभिन्न जतरा आयोजकों के साथ विशेष बैठक की, जिसमें सफल आयोजन को लेकर रणनीति बनायी गई। अंतू तिर्की ने बताया कि इस जतरा के माध्यम से आदिवासियों की एकता दिखायी जाएगी। अभी विभिन्न क्षेत्रों व कस्बों में आदिवासी समाज के द्वारा जतरा मेला का आयोजन किया जा रहा है। जिले में करीब 150 से अधिक जतरा लगाया जाता है, जो अपने क्षेत्र के अलावा इस महा-जतरा में शामिल होंगे और एकता का परिचय देंगे। बैठक में रांची जिले के कई प्रखंड व विभिन्न जतरा आयोजक व सामाजिक अगुवा शामिल हुए। इन सभी के साथ मेला आयोजन को लेकर बात की गई, जिसमें सभी ने अपनी सहमति दी है। झारखंडी महा-जतरा बैठक का संचालन रवि मुंडा के द्वारा किया गया। बताया गया कि झारखंड में अलग-अलग गांवों में, अलग अलग मौजा में आदिवासी परंपरा के अनुसार जतरा लगायी जाती है। झारखंडी महा-जतरा में खोड़हा मंडलियों का समागम मोरहाबादी मैदान में होगा। जतरा में आयोजित कार्यक्रम में अतिथियों के रूप सामाजिक अगुवा, प्रतिभावान युवाओं तथा बुद्धिजीवी लोग शामिल होंगे। साथ ही इस मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया जाएगा। बैठक में मुख्य रूप से अंतू तिर्की, कृष्णकांत टोप्पो, सूरज टोप्पो, पवन तिर्की, अनिल उरांव, महावीर लकड़ा, जगरनाथ तिर्की, हेमलाल मेहता, प्रतीत कच्छप, अर्जन मुंडा, सुजाता कच्छप, ज्योत्सना केरकेट्टा, रितेश उरांव, बिरसा पाहन, नरेश पाहन, अमित मुंडा, अभय भूटकुंवर, शिवा कच्छप, डब्लू मुंडा सहित कई संगठन के अगुआ शामिल हुए।

मोरहाबादी मैदान में जिले के विभिन्न जतरा आयोजकों के साथ विशेष बैठक करते लोग।

अमीषा को लगा जुर्माना कोर्ट ने स्वीकारा याचिका

CRIME REPORTER RANCHI : फिल्म अभिनेत्री अमीषा पटेल से जुड़े चेक बाउंस मामले में बुधवार को रांची सिविल कोर्ट ने उस याचिका पर फैसला सुना दिया है, जिसमें शिकायतकर्ता के गवाह अजय कुमार का क्रॉस एग्जामिन करने की अनुमति मांगी गई थी। जेएमएफसी दिग्विजय नाथ शुक्ला की अदालत ने अमीषा पटेल की याचिका को स्वीकार करते हुए उनपर जुमार्ना लगाया है। हालांकि जुमार्ना की राशि कितनी होगी, इसकी जानकारी उनके अधिवक्ता को फिलहाल नहीं मिली है। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद अदालत ने 22 नवंबर को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। इस मामले में अमीषा पटेल और उनके बिजनेस पार्टनर कुमार ग्रुमर का कोर्ट में सीआरपीसी 313 का बयान दर्ज होना है।

2017 से चल रहा केस

अमीषा पटेल पर चेक बाउंस का केस चल रहा है। यह मामला वर्ष 2017 का है। आरोपों के मुताबिक, फिल्म देसी मैजिक बनाने के नाम पर अजय सिंह ने ढाई करोड़ रुपये अमीषा पटेल के खाते में ट्रांसफर कर दिये। अजय कुमार सिंह लवली वर्ल्ड इंटरटेनमेंट के प्रोपराइटर हैं। फिल्म नहीं बनाने और पैसे वापस नहीं होने के बाद अजय कुमार सिंह ने अमीषा पटेल पर धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज कराया है। इस मामले में अमीषा पटेल ने 17 जून को रांची सिविल कोर्ट में सरेंडर किया था।

BRIEF NEWS

केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान करेंगे एनआईटी में कई योजनाओं का शिलान्यास

ROURKELA : भारत सरकार के केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री धर्मेंद्र प्रधान बुधवार को रांची से रात 8.45 बजे राउरकेला कल पहुंचें। गुरुवार को राउलकेला एनआईटी की विभिन्न नई परियोजनाओं का शिलान्यास और परिसर में केंद्रीय विद्यालय का उद्घाटन करेंगे। फिर वह 12 बजे बणई के लिए प्रस्थान करेंगे। वह वहां विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेंगे और शाम 7 बजे झारसुगुड़ा हवाई अड्डे से कलकत्ता के लिए निकलेंगे।

विजिलेंस ने महिला राजस्व इंस्पेक्टर को पांच हजार घूस की राशि के साथ पकड़ा

SUNDARGARH : सुंदरगढ़ जिले के टांगरपल्ली ब्लॉक के टांगरपल्ली तहसील अंतर्गत तसलाडीही में राजस्व इंस्पेक्टर (आरआई) को विजिलेंस टीम ने रंगे हाथों पकड़ा। शिकायत कर्ता से खेती जमीन को घरबाड़ी करने के लिए 5 हजार रुपए की मांग किए थे। विजिलेंस की टीम ने 5 हजार रुपये रिश्वत लेते हुए आरआई को पकड़ा। सीनियर आरआई लिली चौधरी से रिश्वत के पांच हजार रुपये बरामद होने के बाद सुंदरगढ़ में दो जगहों पर विजिलेंस टीम की छापेमारी रेड जारी है। विजिलेंस थाना पुलिस ने केस नंबर-29 पर मामला दर्ज कर लिया है, और आगे की जांच जारी रखी है।

स्कूल बस ने बाइक सवार को धक्का मारा, घायल

CHAKULIA : चाकुलिया नया बाजार मुख्य सड़क पर बुधवार को रामकृष्ण विवेकानंद इंटरनेशनल इंग्लिश हाई स्कूल की स्कूल बस ने बाइक सवार चाकुलिया के बाजपेई नगर निवासी शिव किशोर तिवारी को साइड से टक्कर मार दिया। इससे शिव किशोर तिवारी सड़क पर गिर पड़े। उनके दाहिना पैर में हल्की चोट आयी है। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने बस को घेर लिया। इससे मुख्य सड़क आधा घंटा जाम हो गयी। मौके पर पुलिस पहुंची और जाम को हटाया। घायल शिव किशोर तिवारी का सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में इलाज हुआ। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

सोनाहारा प्राथमिक विद्यालय में बच्चों को स्वच्छ पेयजल भी नसीब नहीं

CHAKULIA : चाकुलिया नगर पंचायत के वार्ड नंबर 9 स्थित सोनाहारा प्राथमिक विद्यालय में नगर पंचायत प्रशासन की उदासीनता से बच्चों को स्वच्छ पेयजल भी नसीब नहीं है। पेयजल के लिए बच्चे स्कूल परिसर में स्थित वर्षों पुराने जर्जर चापाकल के भरोसे हैं। विडंबना है कि विद्यालय परिसर में पाइप लाइन से जलापूर्ति के लिए पाइप का संयोजन दिया गया है। मगर जलापूर्ति नहीं होती है। इस विद्यालय में 22 बच्चे नामांकित हैं।

चोया पंचायत में आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन

पहले चरण में दो लाख लोगों को अबुआ आवास योजना देने का लक्ष्य : विधायक

PHOTON NEWS CHAIBASA : सदर प्रखंड के डिलियामार्चा पंचायत एवं झींकपानी प्रखंड के चोया पंचायत में बुधवार को आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में सदर विधानसभा क्षेत्र के विधायक दीपक बिरुवा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला 20 सूत्री क्रियान्वयन समिति सदस्य सुभाष बनर्जी उपस्थित हुए। जिनके हाथों से विधिवत दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

कार्यक्रम में विधायक दीपक बिरुवा के हाथों विभिन्न लाभुकों के बीच परिसंपत्तियों का वितरण किया गया। वही विधायक जी ने कार्यक्रम में लगे विभिन्न स्टॉलों का भी निरीक्षण किया। मौके पर विधायक जी ने कहा कि हमारा प्रयास है कि अंतिम व्यक्ति तक विकास योजनाओं को पहुंचाया जाए ताकि ग्रामीणों को सरकार की योजनाओं के प्रति जागरूक कर उन्हें सरकारी योजनाओं से लाभान्वित किया जाय।

लाभुकों के बीच परिसंपतियों का वितरण करते विधायक दीपक बिरुवा व अन्य। ● फोटोन न्यूज

झारखंड की हेमंत सरकार ने सरकारी योजनाओं तक जरूरतमंद लोगों की पहुंच आसान करने और अबुआ आवास योजना सहित विभिन्न तरह के आवेदनों का मौके पर निपटारा करने के लिए 'आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार' अभियान की शुरूआत की है। उन्होंने कहा कि हर अहताधारी नागरिकों को अबुआ आवास योजना का लाभ दिलाया जाना है। सरकार का लक्ष्य है कि पहले चरण में 2 लाख लोगों को अबुआ आवास दिया जाएगा। सहज एवं सरल रूप से योजनाओं की जानकारी आमजनों को मिले, इसलिए इस कार्यक्रम का आयोजन पंचायत स्तर पर किया जा रहा है।

विधायक ने आम नागरिकों से अनुरोध करते हुए कहा कि पंचायतों में आयोजित होने वाले शिविरों में पहुंच कर शिकायतों एवं समस्याओं से संबंधित आवेदन दें ताकि तय समय पर उसका निष्पादन कर उन्हें सरकार की योजनाओं से आच्छादित किया जा सके। मौके पर सदर एसडीओ शशिंद्र बड़ाइक, जिला 20 सूत्री क्रियान्वयन समिति सदस्य सुभाष बनर्जी, झामुमो जिला सचिव सोनाराम देवगम, प्रमुख प्रदीप तामसोय, प्रमुख कल्पना सुंडी, सदर बीडीओ अमिताभ भगत, झींकपानी बीडीओ सीमा आइद समेत अन्य मौजूद थे।

ग्रामीणों को केंद्र प्रायोजित योजनाओं की दी गयी जानकारी

CHAIBASA : विकसित भारत संकल्प यात्रा कुमारडुंगी के सभी पंचायत में शिविर के माध्यम से केंद्र सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में विभिन्न विभागों द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को लेकर विस्तार से ग्रामीणों को जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम में ग्रामीण किसानों के लिए ड्रोन के माध्यम से खेत में दवा, कीटनाशक, विटामिन्स आदि का स्प्रे करना मुख्य आकर्षण बन रहा। केंद्र संचालित सभी योजनाओं की लाभुकों की जुबानी एवं सफलता की कहानी सुनी गई तथा रिकॉर्ड की गई। इस कार्यक्रम के माध्यम से अन्य जो भी ग्रामीण योजना का लाभ नहीं ले पाए उनको लाभ लेने के लिए पदाधिकारी से मिलने और ब्लॉक आने का विशेष सुझाव दिया गया। इस कार्यक्रम के दौरान मुख्य रूप से प्रखंड विकास पदाधिकारी, स्थानीय सभी जनप्रतिनिधि, वरीय कृषि वैज्ञानिक केवीके जगनाथपुर, बैंक पदाधिकारी नाबार्ड, प्रखंड के पदाधिकारी, बीपीआरओ, बीपीएम जेएसएलपीस, आत्मा के बीटीएम, एटीएम, जन सेवक, पंचायत सेवक, जेएसएलपीएस के महिला समूह के सदस्य, इफको के प्रतिनिधि, किसान मित्र एवं अन्य ग्रामीण उपस्थित हुए।

जिला स्तरीय युवा महोत्सव में महिला कॉलेज की छात्राओं ने लहराया परचम

PHOTON NEWS CHAIBASA : जिला खेल पदाधिकारी कार्यालय पश्चिमी सिंहभूम, चाईबासा की ओर से आयोजित जिला स्तरीय युवा महोत्सव में पश्चिम सिंहभूम जिला से 18 से 29 आयु वर्ग के युवाओं ने भाग लिया। जिसमें समूह तथा एकल लोकनृत्य और लोकगीत, पोस्टर मेकिंग स्टोरी राइटिंग भाषण फोटोग्राफी आर्ट एंड क्राफ्ट से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

इस युवा महोत्सव का थीम हेल्थ और फिटनेस रखा गया। इस महोत्सव में महिला कॉलेज चाईबासा की छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

ट्राफी के साथ विजेता छात्राएं व अतिथि। ● फोटोन न्यूज

जिसमें उन्होंने कई प्रतियोगिताओं में अपना परचम लहराया।

जिला स्तरीय महोत्सव में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी को राज्य स्तरीय युवा महोत्सव में शामिल होने का मौका मिलेगा। इस अवसर पर प्राचार्य महिला कॉलेज चाईबासा ने सभी छात्राओं को बधाई दी। साथ ही सभी प्राध्यापकों ने हर्ष व्यक्त किया और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

1. समूह लोक गीत - प्रथम
2. एकल लोक नृत्य - प्रथम
3. कहानी लेखन - प्रथम
4. पोस्टर मेकिंग - प्रथम व द्वितीय
5. भाषण - प्रथम व द्वितीय

छात्र आजसू छात्र संघ की कॉलेज इकाई का हुआ गठन, श्रेया सिंह बनीं अध्यक्ष व तानिया महासचिव

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : ग्रेजुएट कॉलेज में बुधवार को आजसू छात्र संघ की कॉलेज इकाई का गठन किया गया। इसमे सभी छात्राओं को संघ की नीति और सिद्धांत के संबंध में बताया गया। साथ ही भविष्य में छात्र हित में कार्य करने का संकल्प दिलाया गया। संघ के कोल्हान अध्यक्ष हेमंत पाठक ने कहा ग्रेजुएट कॉलेज शहर का एकमात्र महिला कॉलेज है, जहां शैक्षणिक गतिविधि 50 प्रतिशत गड़बड़ाई हुई है। आजसू की टीम इन्हीं समस्याओं के लिए कार्य करेगी।

आजसू छात्र संघ के नवनिर्वाचित सदस्य। ● फोटोन न्यूज

परिसर का माहौल अच्छा हो, पुरुष छात्र नेताओं की अड्डेबाजी न हो, किसी छात्रा को अनावश्यक रूप से कोई तंग न करे, नामांकन के समय दलाल किस्म के लोग का कॉलेज परिसर में प्रवेश न कर सकें, इस पर विशेष जोर रहेगा। संघ की नयी कमेटी में अध्यक्ष श्रेया सिंह और महासचिव तानिया सिंह को बनाया गया। इसके पश्चात वरीय उपाध्यक्ष गुलशन आरा व प्रिया सांडिल तथा सचिव सुनीता कुमारी व तृष्णा कुमारी को मनोनीत किया गया। इस दौरान संघ के कोल्हान अध्यक्ष हेमंत पाठक, वीमेंस यूनिवर्सिटी अध्यक्ष हिमाद्रि महतो, महासचिव शाहीन सुल्ताना, कोल्हान वरीय सचिव राजेश महतो, जिला कार्यकारी अध्यक्ष साहेब बागती, वर्कर्स कॉलेज प्रभारी आयुष दास समेत अन्य उपस्थित थे।

युवा विकास योजना के तहत न्यू-ओ-यूथ ओडिशा नवीन ओडिशा के कार्यक्रम का तीसरा चरण शुरू

PHOTON NEWS ROURKELA : गवर्नमेंट ऑटोनॉमस कॉलेज, राउरकेला द्वारा एकीकृत युवा विकास योजना के तहत न्यू-ओ-युवा ओडिशा नवीन ओडिशा कार्यक्रम के तीसरे चरण के तहत सामाजिक सेवाएं बुधवार से शुरू हुईं। इस अवसर पर कॉलेज के छात्रों को समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों की मदद करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। खासकर चूंकि छात्र और युवा समाज का एक प्रमुख हिस्सा हैं, इसलिए उनके मन में निस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करने के लिए कई अवसरों पर कार्यक्रम शुरू किए गए हैं।

रैगिंग विरोधी जुलूस में शामिल कॉलेज के छात्र-छात्राएं। ● फोटोन न्यूज

इस दिन कॉलेज परिसर की सफाई अभियान के साथ रैगिंग विरोधी जुलूस निकाला गया। समाज सेवा कार्यक्रम के स्नातक और स्नातकोत्तर श्रेणियों के लिए समन्वयक और अध्यापिका डॉ. रामेश्वरी भोई और एसोसिएट्स के लिए अध्यापिका ममता बक्सला ने अध्यक्ष प्रोफेसर विजय कुमार बेहरा द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इसमें कॉलेज प्लस टू और प्लस्थरी सहित दोनों कॉलेजों के स्नातक छात्र और कर्मचारी शामिल थे।

इस समाजसेवा कार्यक्रम के तहत दो दिसंबर तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे। इस अवसर पर खेल कार्यक्रम के अंत में आयोजित स्नातक एवं स्नातकोत्तर क्रिकेट प्रतियोगिता के फाइनल में स्नातक प्रथम वर्ष की टीम विजयी एवं द्वितीय वर्ष की टीम उपविजेता रही। मंगलवार को सभी कार्यक्रमों का संचालन न्यू-ओ-यूथ ओडिशा नवीन ओडिशा कार्यक्रम के नोडल अधिकारी मायाधर बारिक और अजय बेहरा और अन्य द्वारा किया गया।

सुरंग से सकुशल निकले ओडिशा के पांचों मजदूरों का श्रम मंत्री ने जाना हालचाल

PHOTON NEWS ROURKELA : उत्तराखंड के उत्तरकाशी में सुरंग से बचाए जाने के 17 दिन बाद ओड़िशा के श्रमिको ने अपने आपबीती बताई है। मजदूर बिशेश्वर ने बताया कि सभी लोग ठीक हैं। बिशेश्वर ने कहा कि वह भगवान की आस में थे। उन्होंने कहा, वे सुरंग के अंदर भाइयों की तरह रहते थे, और एक साथ खाना खाया करते थे। उन्हें नया जीवन मिला है वे सब मुढ़ी, काजू और किशमिश खाते थे। हम लोग मूवी भी देख रहे थे।

श्रम मंत्री सारदा नायक ने अस्पताल में बचाए गए श्रमिकों से मुलाकात की है। शारदा नायक उनके स्वास्थ्य का हाल जान रहे है। श्रमिकों को कल बचा कर

मजदूरों से मुलाकार करते श्रम मंत्री शारदा नायक। ● फोटोन न्यूज

अस्पताल में भर्ती कराया गया। एक विशेष मेडिकल टीम उनके स्वास्थ्य की जांच कर रही है। 17 दिन बाद उत्तरकाशी सुरंग से 5 उड़िया श्रमिकों को भी सुरक्षित बचाया गया है। श्रमिक में मयूरभंज बारीपाद के बिशेश्वर नायक, कुलदिहार के राजू नायक, बड़ कुदर के धीरेन नायक, नबरंगपुर तालबेदार के भगवान भतरा और भद्रक शंकरशानपुरत के तपन मंडल शामिल हैं। रेस्क्यू के बाद उनके परिजनों को फोन कर सूचना दी गई। उनके बचाए जाने के बाद परिवार में खुशी की लहर दौड़ गई। नबरंगपुर और बारीपदा में गांव और परिवार के लोगों ने जश्न मनाया।

सड़क हादसे में रेलकर्मी की मौत

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : ओडिशा के विमलगढ़ निवासी और रेलवे में गार्ड के पद पर तैनात 49 वर्षीय सुरेश कुमार बोदरा की मंगलवार रात सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। घटना चांदीपोष स्टेशन के निकट हाईवे पर रात 8:30 बजे हुई। दुर्घटना के समय वह राउरकेला से ड्यूटी खत्म कर अपनी बाइक से अपने घर लौट रहे थे। अचानक तेज रफ्तार भारी वाहन ने उन्हें पीछे से

सुरेश कुमार बोदरा की फाइल फोटो।

टक्कर मार दी, जिससे वह सड़क पर गिर गए और उन्हें कुचलते हुए वाहन फरार हो गया। कुछ दिन पहले ही सुरेश कुमार का डांगोआपोसी से राउरकेला ट्रांसफर हुआ था। इस दुर्घटना से चक्रधरपुर रेल मंडल के रेल कर्मियों में शोक की लहर है। सभी ने इस घटना पर दुःख जताया है। इधर, बुधवार को पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराने के बाद परिजनों को सौंप दिया। परिजन शव को अपने गांव ले गए, जहां उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

मुक्ता ऐप से श्रमिकों का किया जायेगा रजिस्ट्रेशन

PHOTON NEWS ROURKELA : राज्य सरकार ने शहरी गरीब व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करने और मिशन शक्ति महिलाओं के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए 'मुक्ता' योजना लागू की है। इस योजना के तहत सभी गतिविधियों को डिजिटल बनाने के लिए 'मुक्ता सॉफ्ट' एप्लिकेशन जारी किया गया है।

इस पहल के संबंध में, राउरकेला नगर निगम ने मिशन

महिलाओं को ऐप की जानकारी देती अधिकारी। ● फोटोन न्यूज

शक्ति समूह और झुग्गी-झोपड़ी निवासी संघ के सदस्यों के लिए एक क्षमता-निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया है। मुक्ता योजना से संबंधित सभी कार्यों को करने के लिए यह ऐप बेहद फायदेमंद साबित होगा। यह कार्य आदेश प्राप्त करने, श्रमिक पंजीकरण, काम की वास्तविक समय की निगरानी, बिलों की ट्रैकिंग, ई-मस्टर रोल और श्रमिकों की ऑनलाइन उपस्थिति जैसी गतिविधियों की सुविधा प्रदान करता है।

पश्चिमी सिंहभूम जिला क्रिकेट संघ के तत्वावधान में आयोजित एसआर रुंगटा बी-डिविजन लीग मैच का फाइनल सह समापन

स्टूडेंट क्लब को पराजित कर मेघाहातुबुरू क्रिकेट क्लब बना चैंपियन

PHOTON NEWS CHAIBASA : स्टूडेंट क्लब चाईबासा को एकतरफा मुकाबले में सात विकेट से पराजित कर मेघाहातुबुरू क्रिकेट क्लब ने न सिर्फ एसआर रूंगटा बी-डिविजन लीग का विजेता होने का गौरव प्राप्त किया बल्कि अगले सत्र में ए-डिवीजन में खेलने की पात्रता भी हासिल कर ली।

बिरसा मुंडा क्रिकेट स्टेडियम मैदान पर खेले गए इस फाईनल मैच में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए स्टूडेंट क्लब चाईबासा की टीम 29.3 ओवर में 166 रन बनाकर आल

विजेता मेघाहातुबुरू क्रिकेट क्लब की टीम। ● फोटोन न्यूज

आउट हो गई। इस टीम की ओर से सबसे अच्छी बल्लेबाजी सोएब अहमद ने की जिसने तीन चौकों एवं तीन छक्कों की मदद से सर्वाधिक 43 रन बनाए। अन्य बल्लेबाजों में तौसिफ एहसान ने 36, मो० साकिब ने 15, अंकित शर्मा ने 13 तथा मो० वसीम एवं अतुल ने 11-11 रनों का योगदान दिया। मेघाहातुबुरू क्रिकेट क्लब की ओर से रोहित कश्यप ने 23 रन देकर तीन विकेट अपने नाम

उप विजेता स्टूडेंट क्लब की टीम। ● फोटोन न्यूज

किए जबकि कुमार विक्की, भास्कर माँझी, देवाशीष महाकुड़, रितुराज मोहंती एवं अर्पित महंता को एक-एक सफलता हाथ लगी।

जीत के लिए आवश्यक रन को मेघाहातुबुरू के बल्लेबाजों ने 25.1 ओवर में मात्र तीन विकेट खोकर प्राप्त कर लिया। रितुराज मोहंती ने नौ चौकों की मदद से 57 नाबाद एवं विकेटकीपर बल्लेबाज कार्तिक कृष्णा ने सात चौकों की सहायता से 52 रनों की अर्धशतकीय पारी खेलकर टीम की जीत को आसान बना दिया। 52 के स्कोर पर आयुष शर्मा के आउट होने के बाद दोनों बल्लेबाजों ने तीसरे विकेट के लिए 78 रनों की बेहतरीन साझेदारी निभाकर टीम को मजबूत स्थिति में पहुँचाया। आयुष ने छः चौकों एवं एक छक्का की मदद से 36 रन बनाए। स्टूडेंट क्लब चाईबासा की ओर से सजरुल होदा ने 26 रन देकर एक विकेट, कैफ जमील ने 32 रन देकर एक तथा उत्कर्ष सिंह ने 37 रन देकर एक खिलाड़ी को चलता किया।

केवाईसी अपडेट कराने के नाम ठगी करने वाला शतिर गिरफ्तार

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : जिला की साइबर सेल की टीम ने केवाईसी अपडेट कराने का मैसेज कर खाते से रुपये पार करने वाले गिरोह के एक शातिर को गिरफ्तार किया है। बुधवार को साइबर डीएसपी जयश्री कुजूर और थाना प्रभारी उपेंद्र मंडल ने एक प्रेस वार्ता आयोजित कर बिष्टुपुर साइबर थाना में दी। साइबर सेल की टीम अब ठगों के फरार तीन साथियों की तलाश में जुटी है। गिरफ्तार आरोपी सुमरित कुमार मंडल बिहार के बांका जिले का रहने वाला है। इसके पास से पुलिस ने ठगी में प्रयुक्त किए जाने वाले 10 मोबाइल, 32 सिम कार्ड और नौ हजार रुपए बरामद किया है। फिलहाल गिरोह का देवघर जिले के मुरली पहाड़ी

का कुंदन कुमार मंडल, प्रदीप कुमार मंडल और गिरिडीह जिले के फुलजोरी का तुलसी कुमार मंडल फरार है। गिरफ्तार आरोपी सुमरित कुमार मंडल को पुलिस की टीम ने गोविन्दपुर थाना क्षेत्र के सुभाष नगर मोहल्ले से गिरफ्तार किया है। यह सभी पिछले छह माह से यहां किराए पर घर लेकर रह रहे थे और ठगी की घटना को अंजाम दे रहे थे। मकान मालिक को इन लोगों ने नौकरी ढूंढने की बात बताई थी, इस कारण इन्हें आसानी से घर किराए पर मिल गया था।

सप्लीमेंट्री रिजल्ट जारी करने की मांग

बीपीएससी कार्यालय के बाहर शिक्षक अभ्यर्थियों का प्रदर्शन

पटना: शिक्षक भर्ती परीक्षा के पहले चरण की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। 1 लाख से अधिक शिक्षकों को नियुक्ति पत्र दिया जा चुका है। नए शिक्षक अब स्कूलों में पढ़ना भी शुरू कर चुके हैं। लेकिन पहले चरण में बीपीएससी आयोग के अध्यक्ष अतुल प्रसाद द्वारा या कहा गया था कि जल्द ही सप्लीमेंट्री रिजल्ट जारी किया जाएगा। 25 अक्टूबर को अभ्यर्थियों ने आंदोलन किया था, जिसके बाद अतुल प्रसाद ने सोशल मीडिया के जरिए इसकी जानकारी दी थी। लेकिन करीब 1 महीने बीतने को है अब तक सप्लीमेंट्री रिजल्ट जारी नहीं किया गया है। इसी को लेकर बुधवार को अभ्यर्थी बीपीएससी

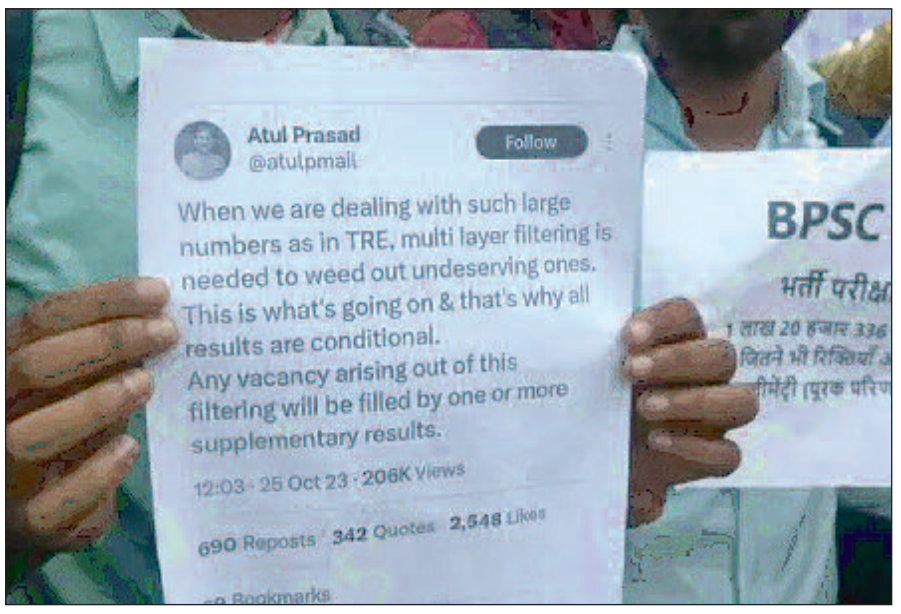

कार्यालय के बाहर पहुंचे और प्रदर्शन किया। अभ्यर्थी धीरेंद्र कुमार ने कहा कि आयोग के अध्यक्ष ने हमें आश्वासन दिया था कि जल्द ही इसको लेकर सप्लीमेंट्री रिजल्ट जारी किया जाएगा। हम तमाम शिक्षक अभ्यर्थियों का अतुल प्रसाद पर पूरा विश्वास है।

कही बातों को लेकर अभी तक हम लोग जी रहे हैं। आखिर कब सप्लीमेंट्री रिजल्ट को जारी किया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि महोदय आपने इतनी बार ट्वीट किया है। तीन-तीन बार मीडिया के सामने आकर बोला है। लेकिन अब एक ट्वीट और कर दीजिए कि आखिर कब सप्लीमेंट्री रिजल्ट जारी किया जाएगा। हम गरीब और असहाय अभ्यर्थियों को कोई शौक नहीं है कि बांका जिले से आकर के यहां बीपीएससी कार्यालय के बाहर अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन करें।

वही, छात्र नेता सौरभ कुमार ने कहा कि 25 अक्टूबर को आयोग के अध्यक्ष ने जानकारी दी थी। उन्होंने कई बार मीडिया के सामने भी कहा है कि हम सप्लीमेंट्री रिजल्ट निकलेंगे। सबको पता है कि 40 हजार पद फिलहाल खाली है। अभी 80 हजार सीटें ही भरी गई है। हम लोग आज आयोग के अध्यक्ष मिलेंगे और आग्रह करेंगे कि जल्द से जल्द रिजल्ट को जारी करें।

पैसे की कमी से दीपक ने छोड़ी पढ़ाई

मुजफ्फरपुर : उत्तरकाशी के टनल में फंसा मुजफ्फरपुर का दीपक बाहर आ गया है। वो जिले के जैतपुर ओपी क्षेत्र के गिजास गांव का रहने वाला है। दीपक दो भाई है। दीपक छोटा है। बड़ा भाई भी मजदूरी का काम करता है। दीपक के घर की आर्थिक हालात ठीक नहीं है। उसके पिता काफी गरीब हैं। गरीबी के कारण दोनो भाइयों ने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और काम करने लगे। दीपक के पिता शत्रुधन राय ने बताया कि दीपक का जन्म 2003 में हुआ है। दीपक बचपन से ही काफी मेधावी छात्र रहा है। दीपक पढ़ाई में हमेशा अव्वल रहता था। दीपक ने गांव के सरकारी स्कूल से अपनी पढ़ाई की। इंटर पास करने के बाद दीपक पढ़ाई छोड़ दी। उसके बाद से मजदूरी कर घर परिवार की मदद करने लगा। इंटर पास करने के बाद दीपक कमाने के लिए असम चल गया। वहां काम करने के दौरान उसे ड्रिलिंग की अच्छी जानकारी हो गई। जिससे ठेकेदार काफी प्रभावित हुए। कुछ महीने पहले उसे उत्तरकाशी भेजा गया था। दीपक का बड़ा भाई भी इंटर तक पढ़ा है। उसने स्नातक में नामांकन तो करवाया था। लेकिन पैसे के अभाव में बीच में ही पढ़ाई छोड़नी पड़ी।दोनों भाई मजदूरी करके अपना घर चलाते हैं। दीपक के बड़े भाई राधे श्याम राय भी मजदूरी करता है। दीपक बड़े भाई की शादी में घर आने वाला था। इसी बीच ये हादसा हो गया। दीपक के बड़े भाई की शादी अप्रैल 2024 में होने वाली है।

आम लोगों की बढ़ी परेशानी

मुजफ़्फरपुर : सूबे में डाटा एंट्री ऑपरेटर के दो दिवसीय सांकेतिक हड़ताल से मुजफ़्फरपुर में जमीन रजिस्ट्री समेत कई कार्यालयों में कामकाज बुरी तरह प्रभावित हुआ है। जिससे सरकारी कार्यालयों में काम कराने के लिए आने वाले आमलोगों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं मुजफ़्फरपुर जिला समाहरणालय के सामने धरना स्थल पर जिले के सभी डेटा एंट्री ऑपरेटर सांकेतिक धरना देकर बिहार सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया। कर्मियों के सांकेतिक हड़ताल पर जाने से फिलहाल जिला मुख्यालय के सभी सरकारी कार्यालय का सारा काम ठप हो गया है। सरकार को दी चेतावनी सांकेतिक हड़ताल पर गए डाटा एंट्री ऑपरेटरों ने सरकार से सरकारी समायोजन किए जाने की मांग दुहराई है। डेटा एंट्री ऑपरेटर कर्मियों ने सरकार को चेतावनी भी दी है। कर्मियों ने कहा कि अगर उनकी मांग सरकार ने नहीं मानी तो वे अनिश्चितकालीन हड़ताल पर जाने के लिए बाध्य होंगे। डाटा एंट्री ऑपरेटर के हड़ताल की वजह से जिला परिवहन विभाग,रजिस्ट्री कार्यालय में कामकाज सबसे अधिक प्रभावित हुआ है।

लव मैरिज में धोख SSP कार्यालय पहुंची पत्नी

भागलपुर: में महिला अपने पति के तलाश में सड़कों पर दर-दर की ठोकरे खा रही है। बुधवार की दोपहर उक्त महिला भागलपुर ररढ आनंद कुमार के कार्यालय पहुंची और न्याय की गुहार लगाई। दरअसल, बेगूसराय के मीनू देवी ने सात साल पहले नीतीश कुमार नामक युवक से प्रेम विवाह किया था, विवाह के बाद कुछ दिनों तक दोनों का रिश्ता तो ठीक रहा लेकिन, पति नीतीश के परिजन वाले मीनू देवी से अक्सर किसी न किसी चीज को लेकर विवाद करते रहते थी। यही नहीं मीनू को ससुराल से भी लड़के के परिजनों ने भागा दिया और पति को झारखंड के साहिबगंज नानी के घर भेज दिया। नाराज थे। इसको लेकर अक्सर सास-बहू के बीच विवाद होता था। इधर मीनू के ससुराल वालों ने प्रताड़ित कर उसे ससुराल से भगा दिया। दोनों की एक बेटी भी है। मीनू के पति नीतीश को झारखंड के साहिबगंज ननिहाल भेज दिया गया है। नीतीश की मां का कहना है कि नीतीश मीनू के संग नहीं रहेगा, बल्कि उनका दूसरा शादी करवाई जाएगी, जिससे मीनू काफी परेशान है।

परिजन ने एक सिपाही पर लगाया हत्या का आरोप

भागलपुर: के इशाकचक थाना क्षेत्र के महिला एससी एसटी थाने के ऊपर पुलिस बैरक में मिले एमटी प्रभारी के शव मामले में भागलपुर एसएसपी आनंद कुमार ने बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित कर आत्महत्या से जुड़े कई अहम जानकारी दी। एसएसपी आनंद कुमार ने बताया कि मंगलवार के अहले सुबह एमटी प्रभारी का शव फंदे से लटकता हुआ महिला थाना के ऊपर बने बैरक से बरामद किया गया। परिजनों ने एक सिपाही पर हत्या का आरोप लगाया है। इसकी जांच को लेकर एसआईटी का गठन किया गया है। एसपी ने आगे बताया कि मंगलवार को मौके पर पहुंची एफएसएल टीम ने प्रारंभिक जांच में आत्महत्या बताया है। हालांकि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने का इंतजार है। तभी स्पष्ट हो पाएगा की हत्या हुई है या आत्महत्या किया गया है। वहीं वहीं, उन्होंने बताया कि बिल में गड़बड़ी का भी आरोप लगाया जा रहा है। जिसको लेकर जांच की जा रही है । मृतक मत प्रभारी अभिषेक प्रताप का मोबाइल भी एसआईटी ने जब्त कर जांच कर रही है। देर रात तक काफी बार एक नंबर से संपर्क करने की कोशिश की गई है वह नंबर किन का है पता लगाया जा रहा है। इसमें जो भी दोषी पाए जाएंगे उस पर सख्त कार्रवाई की जाएगी, परिजन के फर्द बयान के आधार पर सिपाही अनिल कुमार के खिलाफ मामला दर्ज कर ली गई है। एसआईटी के टीम उनसे पूछताछ कर रही है।

गुस्साए लोगों ने वैन को फूंका

बेगूसराय में स्कूल वैन में 2 बच्चियों से रेप

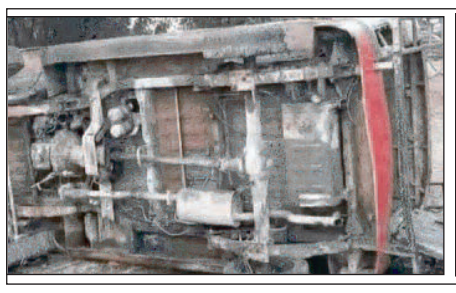

बेगूसराय: बिहार के बेगूसराय जिले में ड्राइवर ने 5 साल की दो बच्चियों से स्कूल वैन में रेप किया। एक बच्ची ने पूरी घटना अपने परिवार को बताई। उसने बताया कि वैन के अंकल ने गलत काम किया। वीडियो भी बनाया है। गुस्साए लोगों ने वैन को फूंक दिया। पुलिस ने आरोपी ड्राइवर को गिरफ्तार कर लिया है। बच्चियों का अस्पताल में इलाज चल रहा है। दोनों बच्चियां प्राइवेट स्कूल में नर्सरी क्लास में पढ़ती हैं। जिले के वीरपुर थाना इलाके में प्राइवेट स्कूल में दोनों बच्चियां पढ़ती थीं। स्कूल नर्सरी से आठवीं तक है। मंगलवार की दोपहर 2 बजे स्कूल की छुट्टी हुई। ड्राइवर वैन में करीब 15 बच्चों को लेकर निकला। दूसरे बच्चों को घर छोड़ने के बाद वैन में सिर्फ दोनों ही रह गई थीं। बच्ची के मुताबिक, ड्राइवर ने रास्ते में सुनसान जगह पर वैन रोकी। वैन के अंदर दोनों के साथ रेप किया। करीब चार बजे उसने दोनों बच्चियों को घर छोड़ा। स्कूल से बच्चियों का घर 4 किलोमीटर पर है। दोनों का घर आसपास ही है। बच्चियां दोपहर ढाई बजे तक घर पहुंच जाती थीं, लेकिन मंगलवार को 4 बजे पहुंचीं। बच्चियों के कपड़ों पर खून लगा था। परिवार वालों ने इसकी वजह पूछी तो एक बच्ची ने पूरी घटना की जानकारी दी। उसने कहा कि वैन के अंकल ने गलत काम किया है। उन्होंने वीडियो भी बनाने की बात कही। इसके बाद घर वालों ने ड्राइवर को ढूंढना शुरू किया। शाम 5 बजे गांव वालों की मदद से ड्राइवर सिकंदर राय को पकड़ लिया। उसकी पिटाई की और वैन में आग लगा ली। शाम 7 बजे ड्राइवर को पुलिस के हवाले किया। स मामले में सदर डीएसपी अमित कुमार ने बताया कि मंगलवार की शाम दो बच्चियों से दुष्कर्म की बात सामने आई है। दुष्कर्म के आरोपी ड्राइवर को गिरफ्तार कर लिया गया। बच्चियों का इलाज बेगूसराय सदर अस्पताल मे चल रहा है। पॉक्सो एक्ट के तहत साक्ष्य जुटाए जा रहे हैं। आरोपी से पूछताछ जारी है। दुष्कर्म का वीडियो बनाए जाने के मामले में अमित कुमार ने कहा कि यह जांच का विषय है। आरोपी का मोबाइल पुलिस ने जब्त कर लिया

जनप्रतिनिधियों के अधिकारों में कटौती पर विरोध

किशनगंज (बिहार): विधान पार्षद सह सचेतक डॉ. दिलीप कुमार जायसवाल ने पंचायती राज जनप्रतिनिधियों के अधिकारों में कटौती को लेकर सरकार पर निशाना साधा है और सड़क से सदन तक आंदोलन की चेतावनी दी है। जायसवाल ने कहा कि पंचायती राज विभाग लगातार वार्ड मेंबर, मुखिया, जिला परिषद सदस्यों को प्रताड़ित करने का कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि सात निश्चय योजना के तहत पूर्व में वार्ड प्रबंधन क्रियान्वयन समिति के खाते में फंड आता था और वार्ड मेंबर काम करवाते थे, लेकिन आज सरकार खुद ठेकेदार बन गई है। उन्होंने कहा कि ठेकेदार और सरकार की सांठ-गांठ के कारण व्यवस्था तार तार हो चुकी है।ू कहा कि पंचायती राज चुनाव को करीब दो साल हो चुके है और पंचायती राज के जनप्रतिनिधि जनता के सामने मुंह दिखाने के लायक नहीं रह गए। किसी भी समस्या का समाधान जनप्रतिनिधि नहीं निकाल पा रहे हैं। उन्होंने कहा की सरकार को तुरंत वार्ड प्रबंधन क्रियान्वयन समिति को अधिकार देना चाहिए। क्योंकि बीते 2 साल से पंचायती राज के जनप्रतिनिधि आंदोलन कर रहे हैं। सरकार बार-बार आश्वासन देती है कि अच्छा फैसला लेने जा रहे हैं लेकिन वार्ड मेंबर और तमाम जनप्रतिनिधि ठगी के शिकार हो रहे हैं। जायसवाल ने कहा कि बिहार सरकार को पंचायती राज जनप्रतिनिधियों का अधिकार छीनने का कोई हक नहीं है। अगर केंद्र सरकार है, बिहार सरकार है तो पंचायती राज भी सरकार है। उन्हें पूरा अधिकार दिया जाना चाहिए।

निर्माण कार्य के दौरान हुआ हादसा

जमुई: शहर के कृष्णपट्टी मोहल्ला में निमार्णाधीन दो मंजिला मकान में काम करने के दौरान मंगलवार को एक मजदूर गिरकर बुरी तरह घायल हो गया। जिसे एक निजी क्लीनिक में भर्ती कराया गया था। जहां इलाज के दौरान बुधवार की सुबह मजदूर की मौत हो गई। परिजन ने घटना की जानकारी टाउन थाना की पुलिस को दी गई। फिर मृतक मजदूर के शव को सदर अस्पताल लाया गया। मृतक मजदूर की पहचान बरहट थाना क्षेत्र के भरकौवा गांव निवासी स्वर्गीय दौलत यादव के पुत्र फुलेश्वर यादव के रूप में हुई है। मृतक मजदूर के परिजन ने कहा कि कृष्णपट्टी मोहल्ला में भूषण तांती के तीन मंजिले मकान का निर्माण हो रहा है। करीब दो माह से फुलेश्वर यादव उक्त मकान में मजदूरी कर रहे थे। मंगलवार की सुबह वे गांव के ही एक मजदूर मोहन यादव के साथ मजदूरी करने के लिए भूषण तांती के निमार्णाधीन मकान में आए थे। काम करने के दौरान दो मंजिला छत से फुलेश्वर यादव गिर गए। सिर में गंभीर चोट लगने की वजह से इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

चौसा में निमार्णाधीन प्लांट से

प्रभावित लोगों के लिए खुशखबरी

बक्सर: चौसा में निमार्णाधीन 1320 मेगावाट थर्मल पावर प्लांट की पूर्ण स्वामित्व वाली कंपनी एसजेवीएन ने युवक और युवतियों के लिए सुनहरा मौका लाया है। प्रभावित लोगों को रोजगार देने की अपनी प्रतिबद्धता के मद्देनजर अप्रशिक्षित युवक-युवतियों को प्रशिक्षण देने की योजना बनाई है। प्रशिक्षण प्राप्त कर युवा स्वावलंबी बनेंगे और जो सर्टिफिकेट उन्हें प्राप्त होगा, उसके आधार पर वह देश भर में कहीं भी नौकरी कर सकेंगे अथवा अपना स्वरोजगार शुरू कर सकेंगे। इसकी जानकारी थर्मल पावर के अधिकारी ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर दी है। बताया गया कि एसजेवीएन केंद्र सरकार का सार्वजनिक उपक्रम है। यह अपने निगमित सामाजिक दायित्व का निर्वहन कर रहा है। इसी के तहत परियोजना प्रभावित क्षेत्रों के अप्रशिक्षित युवाओं को सीआइडीसी के तहत कौशल विकास प्रशिक्षण देने जा रही है। इसके लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं।

युवाओं को प्रशिक्षण के दौरान आने-जाने का खर्च, रहने, भोजन आदि के साथ-साथ दो हजार रुपए का स्टाइपेंड भी दिया जाएगा। प्रशिक्षण के बाद जो सर्टिफिकेट उन्हें प्राप्त होगा, उसके आधार पर उन्हें नौकरी मिलेगी। कंपनी द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में यह बताया गया है कि जिन विधाओं में प्रशिक्षण दिया जाएगा उनमें वेल्डर, इलेक्ट्रीशियन, स्टोर कीपर, शटरिंग कारपेंटर, सामान्य कार्य पर्यवेक्षक, साइट अकाउंटेंट, ऑफिस असिस्टेंट, भूमि सर्वेयर का प्रशिक्षण शामिल है। इन प्रशिक्षकों के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता मैट्रिक पास है। प्रशिक्षण अवधि तीन महीने की होगी और प्रशिक्षण सीआइडीसी सेंटर फरीदाबाद और सीआइडीसी सेंटर धौलाना होगा। यह भी स्पष्ट किया गया है कि इस योजना का उद्देश्य केवल युवाओं को तकनीकी रूप से प्रशिक्षित कर रोजगार के लिए स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाना है। प्रशिक्षण के बाद एसटीपीएल/बक्सर ताप विद्युत परियोजना रोजगार प्रदान करने के लिए बाध्य नहीं होगा।

संक्षिप्त डायरी

यात्रियों से वसूला गया 50.08 लाख रुपए जुमार्ना

समस्तीपुर। समस्तीपुर रेल मंडल प्रशासन ने बेटिकट यात्रा करने वालों के खिलाफ 16 घंटे का विशेष टिकट चेकिंग अभियान चलाया। इस दौरान रेलवे मंडल के अलग-अलग खंडों पर एक साथ की गई चेकिंग में 6834 लोगों को बेटिकट यात्रा करते हुए पकड़ा गया। पकड़े गए यात्रियों से करीब 51 लाख रुपए जुमार्ने की राशि वसूली गई। यह राशि इस वित्तीय वर्ष में अब तक की सबसे ज्यादा है। इसके साथ ही समस्तीपुर रेल मंडल ने एक दिन में 50 लाख रुपए जुमार्ना राशि वसूल करने का रिकॉर्ड बनाया। इस वर्ष अब तक एक दिन में इतनी जुमार्ना राशि वसूल नहीं की गई है। DRM विनय श्रीवास्तव ने बताया कि 28 नवंबर की सुबह से रात के 10:00 बजे तक रेलवे मंडल के विभिन्न खंड स्टेशन और ट्रेनों में विशेष टिकट चेकिंग अभियान चलाया गया। इसमें 6438 बेटिकट यात्री का मामला सामने आया। इस विशेष टिकट चेकिंग अभियान के लिए मंडल भर में 220 टिकट चेकर के अलावा आरपीएफ के जवानों को लगाया गया था सभी का कार्य सराहनीय रहा। डीआरएम ने कहा की चेकिंग में बेहतर कार्य करने वाले रेलवे कर्मी को विभिन्न अवॉर्डों से सम्मानित किया जाएगा। DRM ने बताया कि यह अभियान मंडल के समस्तीपुर, दरभंगा, सहरसा, रक्सौल, नरकटियागंज, बापूधाम मोतिहारी, जयनगर, सीतामढ़ी आदि स्टेशनों पर मुख्य रूप से चलाया गया।

भैंस और बाइक नहीं दी तो बेटी को मार डाला

कैमूर: में विवाहिता की संदिग्ध मौत हुई है। मायके वालों ने दहेज के लिए ससुराल वालों पर हत्या का आरोप लगाया है। मायके वालों का कहना है कि भैंस और बाइक नहीं दी तो ससुराल वालों ने हत्या कर दी। मामला चैनपुर थाना क्षेत्र के असराढी गांव का है। चंद्रमा यादव से 24 वर्षीय पत्नी गुंजन देवी की शादी हुई थी। गुंजन के परिजन ने कहा कि तीन दिन पहले दहेज की डिमांड फोन पर की थी। मांग पूरी नहीं होने पर ससुराल वालों ने जान से मारने की धमकी दी थी। महिला का शव ससुराल में ही मिला है। घटना के बाद से ससुराल वाले फरार हैं। चैनपुर पुलिस को मामले की जानकारी दी गई। मौके पर पहुंचकर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए सदर अस्पताल भभुआ भेजा गया। गुंजन के भाई उपेंद्र यादव ने कहा कि हम लोग उत्तर प्रदेश के जमानिया जिले के मंझरिया गांव के रहने वाले हैं। 17 फरवरी 2021 को मेरी बहन की शादी चैनपुर थाना क्षेत्र के असराढी गांव के चंद्रमा यादव के साथ हुई थी। शादी के बाद से ही ससुराल वाले दहेज के लिए मेरी बहन को प्रताड़ित कर रहे थे। मृतका के भाई ने कहा कि 3 दिन पहले ही उन लोगों ने मेरे पिता के मोबाइल पर फोन कर दहेज में एक भैंस और गाड़ी की डिमांड की थी। नहीं देने पर जान से मारने का धमकी दी थी। डिमांड पूरी नहीं की इस वजह से उन लोगों ने मेरी बहन को जान से मार दिया। जब सूचना मिली तो हम लोग घटनास्थल पर पहुंचे। शव देखने से प्रतीत हुआ कि गला दबाकर मेरी बहन की हत्या की गई है। फिलहाल ससुराल वाले फरार हैं। अभी उसके बच्चे नहीं थे।

भारत-नेपाल सीमा से बांग्लादेशी नागरिक गिरफ्तार

मोतिहारी : भारत-नेपाल मैत्री पुल पर जांच के दौरान बुधवार को एक बांग्लादेशी नागरिक को गिरफ्तार किया गया है। मैत्री पुल पर तैनात रश्इ द्वारा जांच के क्रम में पकड़ा गया है। बांग्लादेशी नागरिक की पहचान मुगर अली का बेटा सैफुल खान बताया जा रहा है। यह बांग्लादेश के दौतीया पोस्ट कमालपुर थाना धनराई जिला ढाका बांग्लादेश का निवासी है। सैफुल खान रक्सौल से ई-रिक्शा पकड़ कर बीरगंज जा रहा था। मैत्री पुल पर जांच के क्रम में उसके बैग से भारतीय पहचान पत्र और बांग्लादेशी पहचान पत्र प्राप्त हुआ है। इसके पास से भारतीय आधार कार्ड, पैन कार्ड, एटीएम कार्ड और बांग्लादेशी आईडी कार्ड के साथ पकड़ा गया है। जिसे पकड़कर हरैया थाना में सौंप दिया गया है। हरैया पुलिस द्वारा बांग्लादेशी नागरिक सैफुल खान से पूछताछ की गई। इस दौरान उसने बताया कि 2018 में भारत-बांग्लादेश रंगपुर बॉर्डर पर एक एजेंट मोहम्मद मौजिद नामक व्यक्ति के माध्यम से इंडिया में प्रवेश किया था। इसके लिए उसने 20 हजार रुपए लिए थे। वहीं से सिलीगुड़ी होते हुए वह नेपाल के काठमांडू चला गया था। जहां वह सिलाई का काम करता था। लेकिन नागरिकता नहीं रहने के चलते उसे हमेशा पकड़े जाने का डर बना रहता था। फिर वह भारत के गुजरात के अहमदाबाद नरौला में जाकर रहने लगा। वहां पर किसी अकबर नामक व्यक्ति से संपर्क किया और उससे फर्जी आधार कार्ड, पैन कार्ड बनवा लिया। इसके आधार से बैंक में खाता खोलवाया। इसके लिए अकबर को पांच हजार रुपए देना पड़ा था। उसने बताया कि वह नेपाल के काठमांडू में किसी के शादी में शामिल होने जा रहा था। तब तक मैत्री पुल पर एसएसबी द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। वहीं हरैया ओपी प्रभारी अनुज कुमार ने बताया कि कागजी कार्रवाई कर बांग्लादेशी नागरिक को न्यायिक हिरासत में भेजा जा रहा है।

सावधानी जरूरी है

चीन में एक बार फिर से अज्ञात बीमारी का डर बढ़ गया है, जिसे एक तरह का निमोनिया बताया जा रहा है। हर रोज वहां हजारों बच्चों को अस्पताल में भर्ती किया जा रहा है, जिन्हें तेज बुखार है, सांस लेने में दिक्कत हो रही है और किसी-किसी के फेफड़ों में गांठें भी बन रही हैं। चीन का कहना है कि यह कोई नया वायरस नहीं है और इस बीमारी में सांस से जुड़ी बीमारियों में काम आने वाली एंटीबायोटिक असरदार हैं। इस बीमारी पर डब्ल्यमएचओ को चीन ने कुछ जानकारी मुहैया तो कराई है, जिसे संगठन ने अपर्याप्त करार दिया है। उधर, सोशल मीडिया पर चीन की जैसी विडियोज शेयर हो रही हैं, उसने लोगों को एक बार फिर भयभीत कर दिया है। डर की एक बड़ी वजह यह भी है कि 2019 में कोविड-19 भी इसी मौसम में उभरना शुरू हुआ था, जिसने अगले तीन से चार महीने में पूरी दुनिया को अपनी जद में ले लिया था। उस वक्त भी चीन यही कह रहा था कि यह सामान्य बीमारी है, चिंता की कोई खास बात नहीं है। लेकिन चीन के ये सारे दावे खोखले निकले थे और उसके झूठ की कीमत दुनिया ने चुकाई थी। और तो और, भारत सहित लगभग हर देश की सरकारों ने भी पूरी तैयारी होने का दावा किया था, लेकिन सारी तैयारी धरी की धरी रह गई थी। इस बार भी चीन और दुनिया भर की सरकारों का ऐसा ही दावा है। यह भी तर्क दिए जा रहे हैं कि यह लॉकडाउन खुलने के बाद का साइड इफेक्ट हो सकता है। जॉन हॉपकिंस सेंटर फॉर हेल्थ सिक्यॉरिटी का कहना है कि पिछले साल जब अमेरिका में लॉकडाउन हटाया गया था तो बच्चों में सांस से जुड़ी बीमारियों में अचानक इजाफा देखने को मिला था। वजह यह कि लॉकडाउन में अन्य बीमारियों का प्रसार रुक जाता है। जब लॉकडाउन खुलता है तो इस तरह की बीमारियां तेजी से फैलती हैं, और ऐसा लगभग हर देश में देखा गया है। भारत में भी जब लॉकडाउन खोला गया था तो लोगों में इन्फ्लुएंजा और सांस से जुड़ी अन्य बीमारियां तेजी से फैली थीं। डब्ल्यमएचओ का भी कहना है कि इस बीमारी में महामारी जैसे कोई आसार नहीं दिख रहे हैं, यह राहत भरी बात है। लेकिन चीन पर दुनिया भर में अब किसी को उतना विश्वास नहीं रह गया है, जितना कोविड-19 से पहले के युग में हुआ करता था। अच्छी बात है कि भारत सरकार ने इस बीमारी को गंभीरता से लिया है और इसके लिए राज्यों और हेल्थ सिस्टम को अलर्ट कर दिया है। राहत भरी खबर यह भी है कि इस बीमारी का एक भी केस अभी तक दुनिया के किसी दूसरे देश में नहीं पाया गया है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम असावधान हो जाएं।

रिजर्व बैंक की सक्रियता

हाल में भारतीय रिजर्व बैंक ने वाणिज्यिक बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय निगमों (एनबीएफसी) की उपभोक्ता ऋण जोखिम की मात्रा में 25 फीसदी की वृद्धि की है। बैंकों और एनबीएफसी के उपभोक्ता ऋण पर 100 प्रतिशत का जोखिम भार होता है, जिसे अब संशोधित कर 125 प्रतिशत कर दिया गया है। इसने ऋणदाताओं को विभिन्न खुदरा ऋणों पर सीमा निर्धारित करने का भी निर्देश दिया है, जो ऐसे अग्रिम भुगतानों में निर्बाध वृद्धि पर केंद्रीय बैंक की सतर्कता को इंगित करता है। ऋण या किसी अन्य वित्तीय परिसंपत्ति के जोखिम भार क्या हैं? जोखिम वाली परिसंपत्तियों का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए किया जाता है कि किसी बैंक को अपने जोखिम के हिसाब से न्यूनतम पूंजी रखनी चाहिए। यह ऋण न चुकाने के जोखिम को कम करने और जमाकताओं की रक्षा के लिए किया जाता है। बैंक के पास जितना अधिक जोखिम होता है, उसे उतनी ही अधिक पूंजी की आवश्यकता होती है। पूंजी की आवश्यकता बैंक संपत्ति के जोखिम मूल्यांकन पर आधारित है। सरल शब्दों में, यदि पहले 100 करोड़ रुपये के उपभोक्ता ऋण के लिए बैंक या एनबीएफसी को 100 करोड़ रुपये की पूंजी रखने की आवश्यकता होती थी, तो अब उन्हें अपनी बैलेंस शीट में 125 करोड़ रुपये सुरक्षा के रूप में रखने होंगे। जोखिम भार जितना अधिक होगा, उतनी ही अधिक ब्याज दर ऋण लेने वाले से वसूली जाती है। जोखिम भार में वृद्धि से उच्च ब्याज दर के साथ-साथ उधार लेने की लागत बढ़ जाती है। जब ऋण अधिक महंगा हो जाता है, तो इससे ऋण की मांग प्रभावित होती है। यह मांग पक्ष की एक समस्या है। इससे बैंकों और एनबीएफसी के मुनाफे में भी नुकसान हो सकता है। चूंकि बैंक या एनबीएफसी को अधिक उपभोक्ता ऋण प्रदान करने के लिए अधिक पूंजी या धन अलग रखना पड़ता है, तो बैंकिंग और एनबीएफसी तंत्र में कुल उपलब्ध ऋण राशि स्वाभाविक रूप से कम हो जायेगी। बैंकों और एनबीएफसी के लिए कम उपलब्ध राशि का मतलब है कम लाभ। नयी जोखिम भार सीमाएं वर्तमान स्तर से 0.35 से एक प्रतिशत अधिक पूंजी की खपत कर सकती हैं, और यह अहम रकम है। तो फिर रिजर्व बैंक ने यह कदम क्यों उठाया है? चालू वित्त वर्ष में पिछले कुछ महीनों में बैंक क्रेडिट में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यह रुझान अगस्त में भी जारी रहा, जहां सकल बैंक क्रेडिट ऑफटेक में सालाना आधार पर 19.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई। सभी कारकों में, गैर-बैंकिंग वित्तीय निगम बैंक क्रेडिट के हिसाब में प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में उभरे। व्यक्तिगत ऋण और सेवा क्षेत्र बैंक क्रेडिट वृद्धि में प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में सामने आये।

क्यों इतनी घुमक्कड़ी करने लगे हिन्दुस्तानी

ANALYSIS

आर.के. सिन्हा

एक बात और कि भारतीय सिर्फ देश के अंदर ही घूमकर संतुष्ट नहीं हैं। उन्हें देश से बाहर जाना भी अच्छा खासा रास आ रहा है। बुकिंग डॉट कॉम के एक निष्कर्ष के अनुसार, पिछले साल यानी 2022 में करीब दो करोड़ हिन्दुस्तानी देश से बाहर घुमक्कड़ी के लिए निकले। यह कोई छोटा-मोटा आंकड़ा नहीं है। भारतीय लंदन, पेरिस, दक्षिण अफ्रीका के केप टाउन और दूसरे शहरों के अलावा केन्या, नाइजीरिया, तंजानिया, दुबई, सिंगापुर,वियतनाम, सिडनी मेलबोर्न, पर्थ, हॉन्गकॉन्ग वगैरह जा रहे हैं। दुबई और सिंगापुर के बाजारों में घूमते हुए तो लगता है कि आप किसी भारतीय शहर में ही हैं। वहां पर हजारों भारतीय रोज पहुंच रहे हैं। दरअसल आर्थिक उदारीकरण के बाद हिन्दुस्तानियों की आर्थिक स्थिति सुधरी तो उन्होंने भी मन ही मन दुनिया को देखने का फैसला भी कर लिया। अब हिन्दुस्तानी कमाए हुए पैसे को गांठ में बांधने भर के लिए राजी नहीं है। उन्हें तो घूमना है। याद नहीं आता कि अब से पहले कब हिन्दुस्तानी आजकल की तरह से घूमने के लिए घर से निकले थे।

आप देश के किसी भी हवाई अड्डे या रेलवे स्टेशन पर चले जाएं। आपको वहां पर एक जैसा नजारा ही देखने में आएगा। आने-जाने वाले मुसाफिरों की भीड़ नजर आएगी। लगता है कि सारा देश ही घूमने के मूड में है। जैसे ही दफ्तरों में दो-तीन दिन के एक साथ अवकाश आते हैं तो लोग उन छुट्टियों में कुछ और छुट्टियों को जोड़कर किसी पर्यटक स्थल के लिए निकल जाते हैं। उन्हें समुद्री तट से लेकर पहाड़ और अभयारण्यों से लेकर धार्मिक स्थल तक सबकुछ ही पसंद आ रहे हैं। एक बात और कि भारतीय सिर्फ देश के अंदर ही घूमकर संतुष्ट नहीं हैं। उन्हें देश से बाहर जाना भी अच्छा खासा रास आ रहा है। बुकिंग डॉट कॉम के एक निष्कर्ष के अनुसार, पिछले साल यानी 2022 में करीब दो करोड़ हिन्दुस्तानी देश से बाहर घुमक्कड़ी के लिए निकले। यह कोई छोटा-मोटा आंकड़ा नहीं है। भारतीय लंदन, पेरिस, दक्षिण अफ्रीका के केप टाउन और दूसरे शहरों के अलावा केन्या, नाइजीरिया, तंजानिया, दुबई, सिंगापुर,वियतनाम, सिडनी मेलबोर्न, पर्थ, हॉन्गकॉन्ग वगैरह जा रहे हैं। दुबई और सिंगापुर के बाजारों में घूमते हुए तो लगता है कि आप किसी भारतीय शहर में ही हैं। वहां पर हजारों भारतीय रोज पहुंच रहे हैं। दरअसल आर्थिक उदारीकरण के बाद हिन्दुस्तानियों की आर्थिक स्थिति सुधरी तो उन्होंने भी मन ही मन दुनिया को देखने का फैसला भी कर लिया। अब हिन्दुस्तानी कमाए हुए पैसे को गांठ में बांधने भर के लिए राजी नहीं है। उन्हें तो घूमना है। याद नहीं आता कि अब से पहले कब हिन्दुस्तानी आजकल की तरह से घूमने के लिए घर से निकले थे। बेशक, दुनिया को

जानने के लिए यायावरी जरूरी है। आप अगर घूमेंगे ही नहीं तो दुनिया को जानेंगे-समझेंगे कैसे। घुमक्कड़ी की चर्चा होगी तो राहुल सांकृत्यायन जी का नाम तुरंत जेहन में आएगा। वे सदैव घुमक्कड़ ही रहे। उनकी सन् 1923 से विदेश यात्राओं का सिलसिला शुरू हुआ तो फिर इसका अंत उनके जीवन के साथ ही हुआ। ज्ञानार्जन के उद्देश्य से प्रेरित उनकी यात्राओं में श्रीलंका, तिब्बत, जापान और रूस की यात्राएं विशेष हैं। वे चार बार तिब्बत पहुंचे। वहां लम्बे समय तक रहे और भारत की उस विरासत को जाना, जो हमारे लिए अज्ञात और विस्मृत हो चुकी थी। वे 1907 में घर से भागकर चार मास तक कोलकाता में रहे। वे काशी में भी रहे। उन्होंने वहां रहकर संस्कृत का अध्ययन किया। वे पैदल ही अयोध्या होते हुए मुरादाबाद पहुंचे और वहां से हरिद्वार गए। हरिद्वार से हिमालय, देवप्रयाग, टिहरी, यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा की। फिर प्रयाग की प्रदर्शनी देखने के लिए घर से निकल गए। गांधी जी भी बहुत बड़े घुमक्कड़ थे। वे रेलों से खूब सफर किया करते थे। घुमक्कड़ी के चलते उन्होंने देश के चप्पे-चप्पे को देखा और भारत को जाना। गुरु नानक देव जी ने 24 साल में दो उपमहाद्वीपों के 60 प्रमुख शहरों की पैदल यात्रा की। इस दौरान उन्होंने 28 हजार कि.मी. का सफर किया। उनकी यात्राओं का मकसद समाज में मौजूद ऊंच-नीच, जात-पांत, अंधविश्वास आदि को खत्म कर आपसी सद्भाव, समानता कायम करना था। वे जहां भी गए, एक परमात्मा की बात की और सभी को उसी की संतान बताया। बाबा नानक अपनी पहली यात्रा के दौरान पंजाब से हरियाणा, उत्तराखंड, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, नेपाल, सिक्किम, भूटान, ढाका, असम, नागालैंड, त्रिपुरा, चटगांव से होते हुए बर्मा (म्यांमार) पहुंचे वहां से वे ओडिशा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और हरियाणा होते हुए वापस आए थे। तो भारत में प्राचीनकाल से ही यायावरी करने वाले रहे हैं। यूं तो सारा भारत अब घुमक्कड़ हो चुका है, पर इस मोर्चे पर गुजराती और बंगाली बाकी से अब भी कुछ आगे ही हैं। आपको देश और देश से बाहर गुजराती पर्यटक मिलेंगे। गुजराती दुनियाभर में बसे भी हुए हैं। अमेरिका से लेकर अफ्रीका तक में। मुझे याद है कि एक बार मैं मिस्र की राजधानी काहिरा में पिरामिडों को निहार रहा था। वहां पर बहुत सारे गुजरती भी आ रहे थे बसों में। उनमें महिलाएं और बच्चे भी थे। मैंने एक महिला से पूछा- ह्यक्या आप भारत के गुजरात प्रांत से हैं? उस महिला का उत्तर था- ह्यहम गुजराती हैं पर केन्या के।ह्ल फिर उसने मुस्कराते हुए कहा कि ह्यहम लोग केन्या में दशकों पहले बस गए थे। हालांकि हमारी भाषा और संस्कार पूरी तरह से गुजरात की धरती के हैं।ह्ल आप बंग भाषियों को भी दूर-सुदूर की खाक छानते हुए देखेंगे। खुशवंत सिंह कहते थे कि आप ज्ञान अर्जित दो तरह से कर सकते हैं- पहला, पढ़कर और दूसरा, घूमकर। यह बात पूरी तरह से सही है। आप जब किसी अन्य स्थान पर जाते हैं तो आपको वहां के लोगों के जीवन के विभिन्न पहलुओं को जानने का भी मौका मिलता है। घुमक्कड़ी किसी भी इंसान को समृद्ध बनाती है। मैं हाल के दौर में इस तरह के बहुत सारे लोगों के संपर्क में आया हूं, जो समय-समय पर देश के अलग-अलग भागों जाते हैं। कभी-कभी देश से बाहर निकल जाते हैं। उनसे बात करके लगता है कि घुमक्कड़ी उन्हें बेहतर इंसान बना रही है। घुमक्कड़ी का मतलब सिर्फ खानपान ही नहीं होना चाहिए। हालांकि कुछ लोग इसलिए भी सफर पर निकल जाते हैं ताकि उन्हें भांति-भांति के डिशेज के साथ न्याय करने का मौका मिल जाता है। घुमक्कड़ी का लक्ष्य सिर्फ पेट पूजा नहीं होना चाहिए। आपको नई-नई जगहों के समाज और संस्कृति को भी समझना होगा। अगर भारत से लोग बाहर जा रहे हैं तो बाहर से भारत में पर्यटक आ भी रहे हैं। जानकारों के अनुसार, कोरोना के असर से ठीक एक साल पहले साल 2019 में भारत में लगभग 1. 93 करोड़ विदेशी पर्यटक आए। उसके बाद से भारत में विदेशी पर्यटकों के आने का सिलसिला 75 फीसद तक गिरा। चूंकि अब हालात सामान्य हो चुके हैं, इसलिए भारत में विदेशी पर्यटकों की आवक को बढ़ाना होगा। भारत में ताजमहल, गुलाबी नगरी जयपुर, पहाड़ों की रानी दार्जिलिंग, असीमित जल का क्षेत्र कन्याकुमारी, पृथ्वी का स्वर्ग कश्मीर समेत अनगिनत अहम पर्यटन स्थल हैं। हमारे यहां भगवान बुद्ध से जुड़े अनेक अति महत्वपूर्ण स्थल हैं। भारत में बौद्ध के जीवन से जुड़े कई महत्वपूर्ण स्थलों के साथ एक समृद्ध प्राचीन बौद्ध विरासत है। आखिर हम बौद्ध की भूमि होने के बावजूद दुनिया भर के बौद्ध अनुयायियों को आकर्षित करने में क्यों असफल रहे। कुछ साल पहले तक राजधानी के दिल कनॉट प्लेस में बड़ी तादाद में विदेशी घूम रहे होते थे। अब विदेशी वहां बड़ी मुश्किल से दिखाई देते हैं। कनॉट प्लेस के एक प्रमुख शो-रूम के स्वामी ने बताया कि कनॉट प्लेस में घूमने वाले भिखारी विदेशी पर्यटकों को बहुत परेशान करते हैं। इसलिए उन्होंने यहां आना ही बंद कर दिया है। यह स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण है। अगर भारत को अपने यहां विदेशी पर्यटकों की आवक को बढ़ाना है तो उसे पर्यटकों के हितों का ध्यान देना होगा।

लेखक, वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं।

काशी की देव दीपावली और वैश्विक कीर्तिमान

अयोध्या में भव्य श्रीराम मन्दिर के उद्घाटन की तिथि निकट आ रही है। जनवरी में होने वाले इस भव्य उद्घाटन समारोह से पहले अयोध्या और काशी में दीप उत्सव का अद्भुत उत्साह दिखाई दिया। अयोध्या दीपोत्सव और काशी में देव दीपावली के वैश्विक कीर्तिमान कायम हुए। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में सत्तर देशों के राजदूत, विदेशी डेलीगेट और उनके परिजन देव दीपावली के अविस्मरणीय पलों के साक्षी बने। ऐसा पहली बार हुआ। देव दीपावली विश्व विख्यात हो चुकी है। इसे देखने विश्व भर के पर्यटक आते हैं। आध्यात्मिकता के साथ राष्ट्रवाद व सामाजिकता की भी झलक देव दीपावली में दिखाई दी। दशाश्वमेध घाट की आरती रामलला को समर्पित हुई। यहां रामलला व राम मंदिर की झलक प्रदर्शित की गई। इक्कीस अर्चक व इक्यावन देव कन्याएं रिद्धि सिद्धि के रूप में दशाश्वमेध घाट पर महाआरती में सहभागी हुईं।

दीपावली के पंद्रह दिन बाद कार्तिक पूर्णिमा पर देवताओं की दीपावली होती है। ऐसी मान्यता है कि इस पर्व को मनाने के लिए देवता स्वर्ग से काशी के पावन गंगा घाटों पर अदृश्य रूप में अवतरित होते हैं। वो महाआरती में शामिल श्रद्धालुओं की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यह पर्व काशी की प्राचीन संस्कृति का के अनुरूप है। देव दीपावली का वर्णन शिव पुराण में भी मिलता है। इसके अनुसार जब कार्तिक मास में त्रिपुरासुर नामक राक्षस ने देवताओं पर अत्याचार शुरू किया और उनको मारने लगा तब भगवान विष्णु ने इस क्रूर राक्षस का वध इसी दिन किया। तब देवताओं ने दीपावली मनाई थी। गंगा के तट पर पच्चासी घाटों पर इस साल योगी सरकार की ओर से बारह लाख और जन सहभागिता से मिलकर कुल लगभग बाईस लाख से अधिक दीप घाटों, कुंडों, तालाबों और सरोवरों पर प्रज्ज्वलित किए गए। गंगा पार रेत पर भी दीपक रोशन हुए। काशी के घाटों के इस अद्भुत दृश्य को देखने देश-विदेश से पर्यटक काशी आते हैं। काशी विश्वनाथ धाम के लोकार्पण के बाद पर्यटकों की रिकॉर्ड आमद हुई है। देव दीपावली पर होटल, गेस्ट हाउस,नाव, बजड़ा, बोट व क्रूज लगभग पहले से बुक और फुल हो गए थे। सरकार ने चेत सिंह घाट पर लेजर शो की व्यवस्था की। काशी के घाटों के किनारे सदियों से खड़ी ऐतिहासिक इमारतों पर धर्म की कहानी लेजर शो के माध्यम से जीवंत हुई। पर्यटकों ने गंगा पार रेत पर शिव के भजनों के साथ क्रैकर्स शो का भी आनंद लिया। श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर को विशाखापट्टनम के एक भक्त द्वारा ग्यारह टन फूलों से सजाया गया। गंगा द्वार पर लेजर शो के माध्यम से श्रीकाशी विश्वनाथ धाम पर आधरित काशी का महत्व और कॉरिडोर के निर्माण संबंधित जानकारी दी गई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ विकास और संस्कृति की गरिमा के प्रति कटिबद्ध रहते हैं। काशी में इन दोनों तथ्यों का महत्व है। यह विश्व की सर्वाधिक प्राचीन नगरी है। बाबा भोलेनाथ का धाम है। प्राचीन काल से सांस्कृतिक राजधानी के रूप में इसकी प्रतिष्ठा रही है। योगी आदित्यनाथ इसे विश्व स्तरीय तीर्थाटन व पर्यटन केंद्र बनाने की कार्ययोजना पर कार्य कर रहे हैं। भारत की आध्यात्मिक राजधानी काशी में अर्धचंद्राकार घाटों पर होने वाले भव्य देव दीपावली आयोजन की पहचान अब प्रदेश के मेले के रूप में है। प्रदेश सरकार ने देवताओं के उत्सव देव दीपावली को राजकीय मेला घोषित कर दिया है। घाटों पर देव दीपावली के आयोजन के लिए सजाने और संवारने का कार्य भव्य तरीके से किया गया। योगी आदित्यनाथ और केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस तथा आवास और शहरी मामलों के मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने भारत की आध्यात्मिक राजधानी काशी के नमो घाट पर भव्य देव दीपावली का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ किया। इसके साक्षी सत्तर देशों के राजदूतों और डेढ़ सौ विदेशी डेलीगेट्स और परिजन बने। सभी ने देव दीपावली के अद्भुत एवं अकल्पनीय आयोजन को निहारा। मेहमानों को विवेकानंद क्रूज से देव दीपावली और गंगा पार होने वाली आतिशबाजी का नजारा दिखाया गया। मेहमानों ने नमो घाट से क्रूज पर सवार होकर देव दीपावली के भव्य नजारे को कैद किया। भारतीय परम्परा के अनुसार मेहमानों का एयरपोर्ट पर परम्परागत तरीके से टीका लगाकर व अंगवस्त्र भेंटकर स्वागत किया गया।

Social Media Corner

सच के हक में...

झारखण्ड की जड़ें गांव में ही है। गांव मजबूत होगा तो राज्य भी मजबूत होगा। हमारी सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का काम कर रही है। ग्रामीणों और किसानों के लिए बिरसा हरित ग्राम और पशुधन जैसी योजनाएं शुरू की हैं। पशुधन ही ग्रामीणों का धन होता है। परिवारों के पास पशुधन रहता तो समाज कुपोषण की ओर नहीं बढ़ रहा होता। आज लोग राशन के अनाज पर निर्भर रहने को विवश हैं। पूर्व सरकार में ही सिमडेगा जिले में संतोषी हाथ में राशन कार्ड लेकर भूख से मरने को मजबूर हुई। आपने देखा कोरोना काल में भी आपकी सरकार ने दीदी-बहनों के सहयोग से अपने राज्य के लोगों को पौष्टिक भोजन करवाया। मैं सलाम करता हूं उन सभी दीदी-बहनों को जिन्होंने कोरोना के समय अपनी जान की परवाह किए बगैर सरकार की मदद की और गांव में खाना बना कर ग्रामीणों और श्रमिकों को मुफ्त में खाना खिलाया।

(सीएम हेमंत सोरेन के ट्विटर अकाउंट से)

पेरिस, फ्रांस स्थित सक्लेय विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विषय के प्रोफेसर एवं अनुसंधानक तथा वृतचित्र निमार्ता, डॉ विन्सेन्ट डेलबोस क्लिन, एवं दीपक परवतियार, ग्लोबल बिहारी ने मुझसे शिष्टाचार भेंट कर पर्यावरण संबंधी मामलों पर साक्षात्कार लिया एवं तत्सम्बन्धीजानकारियां हासिल किया।

(विधायक सरयू राय के ट्विटर अकाउंट से)

राहुल का पीड़ित कार्ड है राजनीतिक

राजनीतिक पीड़ित बोध सत्ता की राह पर हक जताने का एक शॉर्टकट है। यदि इसे बढ़ा दिया जाए, तो यह एक भावनात्मक चुंबक बन कर मायने रखते वालों से पीड़ित को जोड़ देता है। और, सड़क अहम है। क्रांति की शब्दावली में शहीद को जनता के चैंपियन के रूप में शीर्ष स्थान मिलता है। आम चुनाव के नजदीक आने के साथ राहुल गांधी और उनकी पार्टी बड़ी चतुराई से पीड़ित कार्ड खेल रही हैं। उनका खेल नरेंद्र मोदी को निशाना बनाकर प्रतिक्रिया से लाभ उठाने की है- राजनीतिक मोक्ष की ओर अग्रसर मसीहा की छवि वाले अपने नेता के लिए सहानुभूति इकट्ठा करने की कोशिश है। पिछले हफ्ते चुनाव आयोग ने राहुल के भाषणों की जांच कर उन्हें और उनके सहयोगियों को नोटिस भेजा, जिसमें मोदी के खिलाफ अपमानजनक व्यक्तिगत टिप्पणी करने के लिए स्पष्टीकरण मांगा गया है। भाजपा ने अपनी शिकायत में आयोग से कहा था कि किसी भी व्यक्ति को जेबकतरा कहना न केवल गंभीर गाली और व्यक्तिगत हमला है, बल्कि उस व्यक्ति की चरित्र हत्या भी है। ऐसी टिप्पणी उसकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने और जनता को गुमराह करने के स्पष्ट इरादे से की गयी है। कांग्रेस ने आयोग के इस कदम को राहुल की नयी भाषण क्षमता और चुनावी कौशल को नियंत्रित करने और पंगु बनाने की साजिश बताया है। यह पहली बार नहीं है, जब राहुल को अपनी टिप्पणियों के लिए स्पष्टीकरण देने के लिए कहा गया है। मोदी के उपनाम के खिलाफ की गयी अपमानजनक टिप्पणी के कारण उन्हें अपनी लोकसभा सीट और सरकारी बंगला खोना पड़ा था। उन्हें कोर्ट से ये दोनों वापस मिले। इससे वे रुके नहीं और प्रधानमंत्री और उनके सहयोगियों पर पहले से ज्यादा हमलावर हो गये। शायद उनके सलाहकारों को लगता है कि पीड़ित कार्ड खेलने और मोदी पर सीधे हमला करने से राहुल को व्यापक स्वीकार्यता मिलेगी, जिससे उन्हें बेहद लोकप्रिय मोदी के एकमात्र प्रतिद्वंद्वी के रूप में स्थापित किया जा सकेगा। राजनीतिक लड़ाइयों के इतिहास में कभी भी राष्ट्र ने दो व्यक्तियों के बीच इतनी लंबी और कटु व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्विता नहीं देखी है। इस घोर शत्रुता ने वाद-विवाद के ताने-बाने पर अपमानजनक गाली का दाग पसार दिया है। पांच राज्यों के चुनाव की समाप्ति और 2024 की दौड़ शुरू होने के साथ राष्ट्रीय दलों के नेताओं के खिलाफ हमलों का जहरीला तेवर तेज हो गया है। अजीब बात है कि क्षेत्रीय पार्टियों ने आम तौर पर वैचारिक आख्यानों तक लड़ाई को सीमित कर खुद को संयमित रखा है। पर दोनों राष्ट्रीय पार्टियां व्यक्तिगत हमले कर रही हैं। राहुल हर मंच पर लगातार मोदी पर हमला करने में चुनावी लाभ देखते हैं। राजस्थान में एक रैली में उन्होंने कहाः पनौती, पनौती, पनौती (बुरा शगुन)। हमारे खिलाड़ी विश्व कप जीतने के रास्ते पर थे, लेकिन पनौती ने उन्हें हरा दिया। उन्होंने यह कहकर भाजपा को फिर भड़का दियाः जेबकतरा अकेला नहीं आता, हमेशा तीन लोग होते हैं। एक सामने से आता है, एक पीछे से और एक दूर से। मोदी का काम आपका ध्यान भटकाना है। वे टीवी पर सामने से आते हैं और हिंदू-मुस्लिम, नोटबंदी और जीएसटी को लेकर जनता का ध्यान भटकाते हैं। अडानी पीछे से आकर पैसे ले जाता है। एक अन्य सभा में उन्होंने मोदी के विकास के दावों पर कटाक्ष करते हुए कहा था, अपने मोबाइल, शर्ट और जूते के टैग देखें, आपको मेड इन चाइना लिखा मिलेगा। क्या आपने कभी अपने कैमरे या शर्ट पर मेड इन मध्य प्रदेश लिखा देखा है? प्रधानमंत्री इस पर चुप रहने वाले नहीं थे। उन्होंने चुटकी ली, 'कल एक समझदार कांग्रेसी कह रहा था कि भारत के लोगों के पास सिर्फ चीन में बने मोबाइल फोन हैं। अरे, मूर्खों के सरदार तुम किस दुनिया में रहते हो? पता नहीं, वह कैसा चश्मा पहनता है कि वह भारत की प्रगति को नहीं देख सकता, जो दुनिया में मोबाइल फोन का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।

कानून की पढ़ाई में अंग्रेजी का वर्चस्व

दशकों से यह मांग की जाती रही है कि पेशेवर शिक्षा की प्रवेश परीक्षा में तथा शिक्षण के माध्यम के रूप में हिंदी समेत भारतीय भाषाओं को भी शामिल किया जाए। लेकिन अभी तक इस मुहिम का आंशिक असर ही हुआ है और अनेक महत्वपूर्ण प्रवेश परीक्षाओं में अंग्रेजी ही माध्यम है। स्वाभाविक रूप से गांवों-कस्बों तथा वंचित वर्गों के छात्र इससे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। समुचित प्रतिभा होने के बावजूद उन्हें पेशेवर जीवन में आगे बढ़ने के अच्छे अवसर नहीं मिल पाते हैं। सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश डीवाइ चंद्रचूड़ ने इस चिंताजनक स्थिति को रेखांकित करते हुए कहा है कि राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए आयोजित कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट (क्लैट) को केवल अंग्रेजी में आयोजित करना कानूनी पेशे को ग्रामीण और वंचित लोगों के विरुद्ध पक्षपातपूर्ण है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण पृष्ठभूमि और वंचित समुदायों के लोग अक्सर अंग्रेजी में धाराप्रवाह नहीं होते हैं, जिस कारण उन्हें परीक्षा में सफलता पाने में कठिनाई होती है। प्रधान न्यायाधीश का कथन कानून के पेशे में सेवा हासिल करने तथा उसके समावेशी होने से संबंधित समस्या को इंगित करता है। चूंकि कानून की पढ़ाई में अंग्रेजी का वर्चस्व है, तो दस्तावेज भी अंग्रेजी में होते है, सुनवाई में भी अंग्रेजी का ही बोलबाला रहता है। फैसले भी अंग्रेजी में ही लिखे जाते हैं। निचली अदालतों में फिर भी स्थानीय भाषाओं के लिए कुछ गुंजाइश रहती है, पर सर्वोच्च और उच्च न्यायालयों, विशेष न्यायालयों और ट्रिब्यूनलों में अंग्रेजी ही चलती है। यह तर्क सही नहीं है कि प्रवेश परीक्षा और पढ़ाई अंग्रेजी में होने से छात्र पेशेवर जीवन के लिए बेहतर ढंग से तैयार होता है। यह एक दुष्चक्र है। अगर प्रवेश परीक्षा में भारतीय भाषाओं का इस्तेमाल होगा और पढ़ाई में भी इन्हें माध्यम बनाया जायेगा, तो न्यायालयों के परिसर समावेशी बनेंगे। हाशिये के लोगों, ग्रामीण भारत तथा विभिन्न वर्गों के प्रति संवेदनशीलता भी बढ़ेगी।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

सबसे ज्यादा रेंज देने वाला स्कूटर है सिंपल वन

-सिंगल चार्ज पर चलता है 212 किलोमीटर

नईदिल्ली ।

भारतीय दोपहिया वाहनों के बाजार में कई ऐसे इलेक्ट्रिक स्कूटर मौजूद हैं जो पर्यावरण के लिए बेहतर तो हैं ही, साथ में रेंज के मामले में भी अपना दबदबा बनाए हुए हैं।सबसे ज्यादा रेंज देने वाला स्कूटर सिंपल वन है जो सिंगल चार्ज पर 212 किलोमीटर की जबरदस्त रेंज ऑफर करता है। इसमें 5केडब्ल्यूएच का बैटरी पैक का इस्तेमाल किया गया है। आप इसे 1.45 लाख रुपये शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत पर खरीद सकते हैं। ओला एस1 प्रो स्कूटर इस लिस्ट में दूसरे नंबर पर है। यह इलेक्ट्रिक स्कूटर फुल चार्ज पर 181 किलोमीटर की रेंज देने में सक्षम है। इस इलेक्ट्रिक स्कूटर में 4 केडब्ल्यूएच क्षमता की लिथियम आयन बैटरी मिलती है। इसे 1.40 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में खरीदा जा सकता है। इस लिस्ट में तीसरा नाम हीरो विडा वी1 इलेक्ट्रिक स्कूटर का है, जो एक बार के फुल चार्ज पर 165 किलोमीटर की दूरी तय कर सकता है। हीरो मोटोकॉर्प की विडा वी1 इलेक्ट्रिक स्कूटर को आप 1.26 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत पर खरीद सकते हैं। इस लिस्ट में चौथा इलेक्ट्रिक स्कूटर एथर 450एक्स है जो फुल चार्ज पर 146 किलोमीटर की रेंज ऑफर करता है। कंपनी ने इसमें 3.7केडब्ल्यूएच क्षमता की बैटरी पैक का इस्तेमाल किया है। इस इलेक्ट्रिक स्कूटर को खरीदने के लिए आपको 1.28 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) खर्च करने होंगे। कंपनी इसमें 4.56 केडब्ल्यूएच की बड़ी बैटरी देती है जो पोर्टेबल चार्जर की मदद से 4

घंटे 30 मिनट में पूरी तरह चार्ज हो जाता है। आप इसे 1.22 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत पर खरीद सकते हैं। इस लिस्ट में आखिरी स्कूटर टीवीएस आईक्यूब है जिसकी सिंगल चार्ज पर रेंज 145 किलोमीटर तक है।

शेयरों को बेचने का नहीं खरीदने का वक्त है!

नई दिल्ली ।

बीते दो दिनों से एलआईसी यानी भारतीय जीवन बीमा निगम के शेयरों में काफी तेजी देखने को मिली है। नतीजा ये हुआ कि एलआईसी के शेयर 12 फीसदी से ज्यादा उछल गए। स्टॉक के भाव में आई तेजी से निवेशक बेहद खुश हैं, क्योंकि लंबे अंतराल के बाद एलआईसी के शेयरों में ऐसी तेजी देखने को मिली है। हालांकि, शेयरों की यह रफ्तार आगे भी जारी रहेगी। घरेलू ब्रोकरेज हाउस जियोजित फाइनेंशियल ने एलआईसी के शेयर पर बड़ा टारगेट प्राइस दिया है। फिलहाल एलआईसी के शेयरों का मौजूदा भाव 674 रुपये है, जबकि टारगेट प्राइस 823 रुपये है यानी मौजूदा भाव से एलआईसी का शेयर 22 फीसदी तक रिटर्न दे सकता है। एलआईसी के आईपीओ को लेकर निवेशकों में जबरदस्त उत्साह था। निवेशकों ने कंपनी के शेयर आईपीओ में 949 रुपये के अपर बैंड पर खरीदे थे। एलआईसी के शेयर 17 मई, 2022 को एनएसई पर इश्यू प्राइस के मुकाबले 8.11 फीसदी गिरावट के साथ 872 रुपये पर लिस्ट हुए. इसके बाद से लगातार गिरावट गहरा। इस साल मार्च में एलआईसी के शेयरों का भाव 534 रुपये तक चला गया। हालांकि, निचले स्तरों से खरीदी आने के बाद अब शेयर 674 रुपये के स्तर पर हैं। हैरानी की बात है कि जिन शेयरधारकों ने आईपीओ के समय से एलआईसी के शेयरों में बने हुए हैं वे अब भी नुकसान में हैं। वहीं, एक साल में एलआईसी के स्टॉक्स ने महज 5 फीसदी का रिटर्न दिया है। जानकारों का मानना है कि एलआईसी की मार्केट में बेहतरीन लीडरशिप, नए प्रोडक्ट्स लॉन्च, बेहतर डिस्ट्रिब्यूशन नेटवर्क और डिजिटलीकरण कंपनी के भविष्य के विकास के लिए अच्छा संकेत है। इसलिए ब्रोकरेज हाउस ने एलआईसी के शेयर पर बाय रेटिंग बरकरार रखते हुए 823 रुपये का टारगेट प्राइस दिया है। दरअसल एलआईसी ने आने वाले महीनों में 3 से 4 इंश्योरेंस प्रोडक्ट लॉन्च करने की तैयारी में है। एलआईसी के चेयरमैन सिद्धार्थ मोहंती ने कहा कि कंपनी का लक्ष्य मौजूदा वित्त वर्ष में डबल डिजिट ग्रोथ हासिल करने का है। मौजूदा ट्रेंड के अनुसार, कंपनी के रिटेल बिजनेस में बेहतर ग्रोथ देखने को मिल रही है.

पेट्रोल-डीजल के नए रेट्स जारी, महाराष्ट्र में सस्ता तो गुजरात में बढ़े दाम

नई दिल्ली ।

कच्चे तेल की कीमतों में आज अंतरराष्ट्रीय बाजार में मामूली तेजी देखने को मिल रही है। बुधवार सुबह 6 बजे के करीब डब्ल्यूटीआई क्रूड हरे निशान में रहते हुए 76.65 डॉलर प्रति बैरल पर बिक रहा है। वहीं, ब्रेंट क्रूड की बात करें तो यह बेहद हल्की गिरावट के साथ 81.68 डॉलर प्रति बैरल पर ट्रेड कर रहा है। इधर देश में तेल मार्केटिंग कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल के ताजा रेट जारी कर दिए हैं। गौरतलब है कि भारत में हर सुबह 6 बजे ईंधन के दामों में संशोधन किया जाता है। जून 2017 से पहले कीमतों में संशोधन हर 15 दिन के बाद किया जाता था। आज छत्तीसगढ़ में पेट्रोल 60 पैसे और डीजल 59 पैसे सस्ता हो गया है। महाराष्ट्र में पेट्रोल 46 और डीजल 45 पैसे सस्ता हुआ है। जबे कि यूपी, पश्चिम बंगाल और पंजाब में भी पेट्रोल-डीजल की कीमत में कटौती देखने को मिल रही है। वहीं दूसरी ओर, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश और गुजरात में पेट्रोल-डीजल की कीमत में तेजी देखने को मिली है।

देश के प्रमुख शहरों की बात करें तो दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये और डीजल 90.08 रुपये प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल 92.76 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 102.7 3रुपये और डीजल 94.33 रुपये प्रति लीटर है। इसी तरह नोएडा में पेट्रोल 96.64 रुपये और डीजल 89.82 रुपये प्रति, गाजियाबाद में 96.58 रुपये और डीजल 89.75 रुपये प्रति लीटर, लखनऊ में पेट्रोल 96.57 रुपये और डीजल 89.76 रुपये प्रति लीटर, पटना में पेट्रोल 107.24 रुपये और डीजल 94.04 रुपये प्रति लीटर तथा पोर्टब्लेयर में पेट्रोल 84.10 रुपये और डीजल 79.74 रुपये प्रति लीटर है।

चीन के उच्च स्तरीय खुलेपन को बढ़ावा देने से दुनिया को लाभ मिलेगा: जिम रोजर्स

बीजिंग।

हाल ही में आयोजित एपेक नेताओं की 30वीं अनौपचारिक बैठक में चीन ने उच्च-स्तरीय खुलेपन को बढ़ावा देने का स्पष्ट संकेत भेजा। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है और यह दुनिया और चीन के लिए बहुत लाभदायक है। हाल ही में विश्व प्रसिद्ध निवेशक जिम रोजर्स ने न्यूयॉर्क में चीनी समाचार एजेंसी शिंगह्वा के संवाददाता के साथ एक वीडियो साक्षात्कार में यह बात कही। रोजर्स ने कहा कि पिछले 40 वर्षों में चीन के खुलेपन का लाभ एशिया-प्रशांत क्षेत्र को मिला है। चीन के साथ व्यापार बढ़ने से दक्षिण कोरिया, जापान और अन्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं को बड़े लाभ मिले, इसमें अमेरिका भी शामिल है। 40 वर्ष पहले अमेरिका और चीन के बीच व्यापार बहुत कम था। आज, अमेरिका-चीन व्यापार का पैमाना बहुत बड़ा है, जिससे दोनों पक्षों को लाभ हो रहा है। रोजर्स का विचार है कि चीन ने जो विकास का रास्ता और दिशा चुनी है, वह सही है। उच्च स्तरीय खुलेपन को बढ़ावा देने से चीन

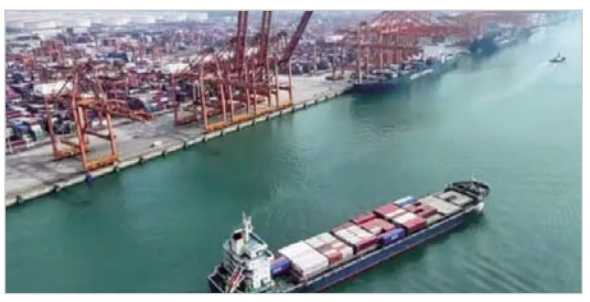

21वीं सदी में दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण और सफल देशों में से एक बन जाएगा। चीन की आर्थिक संभावनाओं के बारे में चर्चा करते हुए रोजर्स ने कहा कि दशकों से चीन की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है और इसका विश्व अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। चीन की आबादी 1 अरब 40 करोड़ से अधिक है और चीन में बाजार की संभावनाएं बहुत बड़ी हैं।

एडवेंचर बाइक 'हिमालयन' नेक्स्ट जनरेशन मॉडल लांच

-सफर में ले सकते हैं म्यूजिक का मजा

नई दिल्ली ।

रॉयल एनफील्ड ने लोकप्रिय एडवेंचर बाइक 'हिमालयन' नेक्स्ट जनरेशन मॉडल को लॉन्च कर दिया है। नई हिमालयन की शुरूआती कीमत 2.69 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) रखी गई है। इसके टॉप मॉडल की कीमत 2.84 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है। फिलहाल ये कीमतें इंट्रोडक्टरी हैं और केवल 31 दिसंबर 2023 तक वैलिड रहेंगी। इसके बाद कंपनी कीमतों में इजाफा कर सकती है। बता दें कि नई रॉयल एनफील्ड हिमालयन अपने पिछले मॉडल की तुलना में महंगी है। हिमालयन 411 की कीमत 2.15 लाख रुपये से 2.30 लाख रुपये के बीच थी। इस लिहाज से देखा जाए तो नई हिमालयन 54,000 रुपये महंगी है। कंपनी ने बाइक में अपडेट को देखते हुए कीमतों में इजाफा किया है। नई हिमालयन पूरी तरह अपने पुराने मॉडल से अलग है। इसमें नया डिजाइन, नया इंजन और कई सारे नए और एडवांस फीचर्स शामिल किए गए हैं।नई हिमालयन राउंड आकर के फ्यूल टैंक के साथ आती है। पिछले मॉडल में फ्यूल टैंक रेक्टैंग्युलर आकार में था। टैंक का आकार बदलने से इसकी क्षमता भी बढ़ गई है। इसकी कैपेसिटी 15 लीटर से बढ़कर 17 लीटर की हो गई है।

कंपनी ने हेडलाइट, इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, फ्रेम और सीट के डिजाइन में भी बदलाव किया है। हालांकि, ये अब भी स्प्लिट सीट सेटअप में आ रही है। इसके अलावा साइड पैनल, आगे और पीछे के फेंडर्स भी नए दिए गए हैं। कंपनी अब इस बाइक में सभी तरह की लाइटिंग एलईडी में दे रही है। रॉयल एनफील्ड ने हिमालयन में बिलकुल नया 452ष्ठ क्षमता का सिंगल सिलेंडर, लिक्विड-कूल्ड इंजन दिया है जो लगभग 40 बीएचपी का पॉवर और 40 एनएम का पीक टॉर्क जनरेट करता है। पुरानी हिमालयन में 411ष्ठ क्षमता है एयर/ऑयल कूल्ड इंजन दिया गया था, जो महज 24.3 बीएचपी का पॉवर जनरेट करता था। पिछले हिमालयन में 5-स्पीड गियरबॉक्स मिलता था। लेकिन नए हिमालयन में 6-स्पीड गियरबॉक्स के साथ असिस्ट और स्लिपर क्लच फंक्शन भी दिया जा रहा है।कंपनी इस बाइक में म्यूजिक प्लेबैक की भी सुविधा दे रही है जिससे आप सफर के दौरान म्यूजिक का आनंद ले सकते हैं। सेफ्टी के लिए बाइक

में स्विचेबल डुअल चैनल एबीएस दिया गया है।नए हिमालयन में कंपनी ने एलईडी लाइट्स, स्मार्टफोन कनेक्टिविटी, मैप नेविगेशन, राइड बाय वायर, दो राइड मोड, 4-इंच का फुल टीएफटी डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया जा रहा है।

हाईक्रॉस के लिए वेटिंग पीरियड 1 साल तक

-गाडी में कमाल के हैं फीचर्स

नई दिल्ली । टोयोटा इनोवा के प्रीमियम मॉडल हाईक्रॉस वैरिएंट के लिए वेटिंग पीरियड 1 साल तक पहुंच चुका है। इसके हाइब्रिड वैरिएंट के लिए वेटिंग पीरियड 9 से 12 महीने है, जबकि पेट्रोल वैरिएंट के लिए ग्राहकों को 4 से 6 महीने का वेटिंग पीरियड दिया जा रहा है। टोयोटा इनोवा हाईक्रॉस को चार वैरिएंट में बेचा जा रहा है, जिसके टॉप झेडएक्स वैरिएंट की बुकिंग कंपनी ने कुछ दिनों के लिए बंद कर दी थी। वीएक्स और वीएक्स (ओ) ट्रिम के लिए वेटिंग पीरियड 9-12 महीनों तक पहुंच गया है। वहीं जी और जीएक्स पेट्रोल ट्रिम की डिलीवरी के लिए ग्राहकों को 4 से 6 महीनों का वेटिंग पीरियड दिया जा रहा है। पेट्रोल हाईक्रॉस की कीमतें 18.82 लाख-19.72 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) के बीच हैं, जबकि हाइब्रिड वेरिएंट (वीएक्स और वीएक्स (ओ) की कीमत 25.3 लाख-27.32 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) के बीच है।टोयोटा इनोवा हाईक्रॉस को दो पॉवरट्रेन विकल्प में पेश किया गया है जिसमें 2.0-लीटर पेट्रोल और 2.0 लीटर स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड इंजन शामिल है। ये इंजन क्रमशः 172 बीएचपी और 184 बीएचपी की पॉवर जनरेट करते हैं। पेट्रोल इंजन में ऑटोमेटिक ट्रांसमिशन, जबकि हाइब्रिड इंजन के साथ ई-सीवीटी गियरबॉक्स दिया गया है।टोयोटा हाइब्रिड वैरिएंट के लिए 23.24 किलोमीटर प्रति लीटर और पेट्रोल वैरिएंट के लिए 16.13 किलोमीटर प्रति लीटर की माइलेज क्लेम करती है।

गौतम अडानी दुनिया के सबसे अमीर शीर्ष 20 अरबपतियों की सूची में लौटे

नई दिल्ली।

अडानी समूह के शेयरों में तेजी के बाद गौतम अडानी दुनिया के शीर्ष 20 सबसे अमीर लोगों की सूची में वापस आ गए हैं। ब्लूमबर्ग बिलियनेयर्स इंडेक्स के अनुसार, अडानी अब 66.7 बिलियन डॉलर की संपत्ति के साथ दुनिया के 19वें सबसे अमीर व्यक्ति हैं। अडानी समूह के शेयरों में तेजी के बाद उनकी संपत्ति में 6 अरब डॉलर से अधिक का उछाल आया। रैली दूसरे दिन भी जारी रहने के साथ अडानी समूह की अधिकांश कंपनियां बुधवार को हरे निशान में थीं। बोनान्ज़ा पोर्टफोलियो के रिसर्च एनालिस्ट वैभव विदवानी ने कहा, ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने अमेरिका स्थित शॉर्ट-सेलर द्वारा किए गए स्टॉक हेरफेर और धोखाधड़ी के दावों पर समूह की जांच करने के अपने फैसले को रिजर्व कर लिया। सूची में 13वें स्थान पर मौजूद मुकेश अंबानी के बाद अडानी दूसरे सबसे अमीर भारतीय हैं, जिनकी अनुमानित कुल संपत्ति 89.5 बिलियन डॉलर है। ब्लूमबर्ग बिलियनेयर्स इंडेक्स के अनुसार एलोन मस्क 228 बिलियन डॉलर की कुल संपत्ति के साथ सबसे अमीर व्यक्ति हैं, इसके बाद जेफ बेजोस (171 बिलियन डॉलर), बर्नार्ड अरनॉल्ट (167 बिलियन डॉलर) और बिल गेट्स (134 बिलियन डॉलर) हैं।

बैंकिंग शेयरों में जबरदस्त उछाल.... हरे निशान पर बंद हुआ बाजार

मुंबई ।

भारतीय शेयर बाजार में बुधवार को तूफानी तेजी दर्ज हुई और बाजार लगातार दूसरे दिन हरे निशाना पर बंद हुआ। बाजार के दोनों प्रमुख इंडेक्स एक प्रतिशत से ज्यादा की बढ़त लेकर बंद हुए। एक्सिस बैंक, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक और कोटक बैंक के जैसे बैंकिंग शेयरों में जबरदस्त खरीदारी तथा इंडेक्स में बड़ी हिस्सेदारी रखने वाली रिलायंस इंडस्ट्रीज और आईटीसी के शेयरों में तेजी से शेयर बाजार में झूम उठा। साथ ही बीएसई (बीएसई) पर लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैप रिकॉर्ड ऑल टाइम पर लेवल पहुंच गया है जिससे शेयर बाजार में खरीदारी को समर्थन मिला। 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 727.71 अंक का उछाल लेकर 66,901.91 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 66,946.28 अंक स्तर तक भी पहुंच गया था। सेंसेक्स की 30 कंपनियों में से 27 के शेयर हरे निशान में बंद हुए जबकि तीन कंपनियों के स्टॉक लाल निशान में रहे।

इसतरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 206.90 अंक की बढ़त के साथ 20,096.60 अंक पर बंद हुआ। यह इस साल 18 सितंबर के बाद पहली बार 20 हजार के अंक पार बंद हुआ है। निफ्टी की 40 कंपनियों के शेयर हरे जबकि 10 लाल निशान में बंद हुए। जहां सेंसेक्स की कंपनियों में एक्सिस बैंक के शेयर में सबसे ज्यादा 3.92 प्रतिशत का उछाल आया। साथ ही महिंद्रा एंड महिंद्रा, विप्रो, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक , टाटा मोटर्स, टीसीएस जैसे शेयर भी बढ़त लेकर बंद हुए। दूसरी तरफ, नेस्ले इंडिया का शेयर सबसे ज्यादा 0.57 प्रतिशत की गिरावट लेकर बंद हुआ। इसके अलावा टाइटन, बजाज फाइनेंस और अल्ट्राटेक सीमेंट के शेयर गिरावट में बंद हुए।

- 1.दरअसल अमेरिकी सेंट्रल बैंक फेडरल रिजर्व के गवर्नर क्रिस्टोफर वालर ने महंगाई में नरमी जारी रहने पर आने वाले महीनों में ब्याज दरों में कटौती की संभावना जाहिर की है। उनके इस बयान के बाद इंडेक्स में दम रखने वाले आईटी और वित्तीय शेयर में खरीदारी से बाजार में तेजी आई।
- 2.अमेरिकी ट्रेजरी यील्ड में गिरावट के बाद विदेशी निवेशकों की घरेलू शेयर बाजार में खरीदारी वापस लौट आई है, जिसका असर बाजार में देखने को मिला।
- 3.बीएसई में लिस्टेड कंपनियों के मार्किट कैप 331 लाख करोड़ रुपये के ऑल टाइम हाई लेवल पर पहुंच गया। इसका भी निवेशकों पर पॉजिटिव असर पड़ा है।
- 4.बैंक, फाइनेंशियल सर्विस जैसे शेयरों में उछाल।

डॉलर इंडेक्स गिरने से सर्वोच्च स्तर पर पहुंचे सोने के भाव, चांदी भी उछली

नई दिल्ली ।

डॉलर इंडेक्स 3 महीने के निचले स्तर पर पहुंचने से देश में सोने व चांदी के भावों में तेजी आई है। सराफा बाजार की बात करें तो बीते कुछ दिनों से सोने की वायदा कीमतों में लगातार तेजी दिखी है। मिली जानकारी के अनुसार जहां सोने के वायदा भाव आज सर्वोच्च स्तर पर पहुंचे हैं वहीं चांदी की वायदा कीमतों में भी काफी तेजी आई है। उधर अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोने के वायदा भाव में तेजी देखी जा रही है। इसकी वजह बताते हुए एचडीएफसी सिक्योरिटीज में कमोडिटी व करेंसी प्रमुख अनुज गुप्ता ने बताया कि डॉलर इंडेक्स 3 महीने के निचले स्तर पर पहुंच गया है। इस वजह से सोने–चांदी की कीमतों में तेजी देखी जा रही है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने के वायदा भाव 2,000 डॉलर पार कर 2,050 डॉलर की ओर बढ़ रहे हैं। वहीं चांदी के वायदा भाव 25 डॉलर को पार कर चुके हैं। घरेलू बाजार में भी सोने के वायदा भाव अपने सर्वोच्च स्तर को छू चुके हैं। अनुमान है कि अगले साल सोने के वायदा भाव 65 से 67 हजार रुपये तक जा सकते हैं, जबकि चांदी के वायदा भाव 78 से 80 हजार रुपये तक जाने की उम्मीद है। बुधवर को सोने के वायदा भाव की शुरुआत तेजी के साथ हुई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज पर सोने का दिसंबर कॉन्ट्रैक्ट आज 217 रुपये की तेजी के साथ 62,602 रुपये के भाव पर खुला। खबर लिखे जाने के समय यह कॉन्ट्रैक्ट 115 रुपये की तेजी के साथ 62,500 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। इस समय इसने 62,602 रुपये के भाव पर दिन का उच्च स्तर और 62,431 रुपये के भाव पर दिन का निचला स्तर छू लिया। बीते दो दिन रिकॉर्ड स्तर बनाने से पहले सोने के वायदा ने मई महीने में 61,845 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर सर्वोच्च स्तर छुआ था। वहीं चांदी के वायदा भाव की शुरुआत भी तेजी के साथ हुई। खबर लिखे जाने के समय यह कॉन्ट्रैक्ट 158 रुपये की तेजी के साथ 75,457 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। इस समय इसने 75,600 रुपये के भाव पर दिन का उच्च और 75,310 रुपये प्रति किलो के भाव पर दिन का निचला स्तर प्राप्त कर लिया।

आईफोन बनाने वाली कंपनी फॉक्सकॉन करेगी भारत में मोटा निवेश

ताइवान में एक्सचेंज फाइलिंग के तहत हुआ खुलासा

मुंबई ।

एप्पल आईफोन बनाने वाली ताइवानी कंपनी फॉक्सकॉन भारत में विस्तार योजना के तहत 1.6 बिलियन डॉलर (करीब 13 हजार करोड़ रुपए) निवेश करने की तैयारी में है। 27 नवंबर 2023 को कंपनी ने ताइवान में एक्सचेंज फाइलिंग के तहत इसकी जानकारी साझा की है। इस खुलासे में कंपनी ने कहा कि ऑपरेशनल जरुरतों को पूरा करने के लिए ये निवेश हो रहा है। फॉक्सकॉन को हॉन हाई प्रीसिजन इंडस्ट्री कंपनी के नाम से भी जाना जाता है। रिपोर्ट के मुताबिक हॉन हाई और दूसरी ताइवान की इलेक्ट्रनिक्स मैन्युफैक्चरिंग कंपनियां चीन और अमेरिका के बीच जारी तनाव के कारण चीन के बाहर निवेश बढ़ाना चाहती हैं। फॉक्सकॉन के भारत में निवेश के इस फैसले को इसी कड़ी के साथ देखा जा रहा है। हालांकि कंपनी प्रवक्ता ने ये बताने से इंकार कर दिया है कि इस निवेश के द्वारा कंपनी नया प्लांट लगाएगी या फिर पुरानी फैसिलिटी में ही निवेश करेगी। फॉक्सकॉन का आधा से अधिक रेवेन्यू एप्पल से आता है। कंपनी एप्पल आईफोन के अलावा दूसरे प्रोडक्ट्स पिछले कई वर्षों से भारत में बना रही है। एप्पल के नए आईफोन 15 की मैन्युफैक्चरिंग फॉक्सकॉन ने भारत में की है। फॉक्सकॉन के प्रतिनिधि ने बताया कि भारत में कंपनी अपने साइज को डबल करना चाहती है। फॉक्सकॉन के 9 प्रोडक्शन कैंपस में 30 से ज्यादा फैक्ट्री है, जिसमें 10,000 से ज्यादा लोग काम करते हैं। कंपनी को इससे सालाना 10 बिलियन डॉलर से ज्यादा रेवेन्यू मिलाता है। इसके पहले इसी वर्ष अगस्त महीने में कर्नाटक सरकार ने ये ऐलान किया था कि फॉक्सकॉन राज्य में 600 मिलियन डॉलर के निवेश से दो कॉम्पोनेंट फैक्ट्री का निर्माण करेगा। इसमें से एक प्लांट में आईफोन के लिए मैकेनिकल इनक्लोजर तैयार किया जाएगा। साथ ही अप्लायड मटेरियल्स के साथ मिलकर सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग प्लांट तैयार किया जाएगा।

बीएसई मार्केट कैप 4 ट्रिलियन डॉलर पर पहुंचा

मुंबई। जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के कार्यकारी निदेशक सतीश मेनन ने बुधवार को कहा कि बीएसई मार्केट कैप का 4 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचना शेयर बाजार में एक नई गति की शुरुआत का संकेत है। दूसरी तिमाही की ठोस कमाई और कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट के कारण शेयर बाजार में तेजी आ रही है। मेनन ने कहा कि घरेलू तरलता ने बाजार को समर्थन दिया है, लेकिन उच्च अमेरिकी बांड यील्ड के कारण विदेशी फंड प्रवाह में कमी एक बाधा रही है। उन्होंने कहा, ये अच्छी बात है कि अमेरिका में ब्याज दरें ऊंची हैं और डॉलर इंडेक्स में गिरावट आ रही है, जिससे भारतीय इक्विटी बाजार में विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) आकर्षित हो रहे हैं। पिछले चार महीनों में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) में लगातार गिरावट ने भी बाजार में सकारात्मक संकेत भेजा है। मेनन ने कहा, मजबूत बुनियादी बातों के बावजूद, 3 दिसंबर को आने वाले राज्य चुनाव नतीजों से पहले बाजार में कुछ अस्थिरता हो सकती है। एलकेपी सिक्योरिटीज के वरिष्ठ तकनीकी विश्लेषक रूपक डे ने कहा कि बीएसई मिडकैप और बीएसई स्मॉलकैप सूचकांकों में निरंतर तेजी रही क्योंकि सेंसेक्स अपनी समेकन सीमा से बाहर निकल गया और बीएसई बैंक सूचकांक अपने नुकसान से उबर गया। सेंटीमेंट्स ठीकठाक है। सेंसेक्स में हालिया ब्रेकआउट व्यापक बाजार को बढ़ावा दे रहा है, जो कुछ दिन पहले कुछ हद तक नाजुक या जोखिम भरा लग रहा था।

ट्यूलिप गार्डन के लिए भी जाना जाने लगा है कश्मीर

अगली बार जब आप कश्मीर में आएं तो डल झील, शिकारे, हाऊसबोटों, पहाड़, बर्फ के अतिरिक्त ट्यूलिप गार्डन को देखना न भूलें। अगर यह कहा जाए कि अगर पहले कश्मीर की पहचान डल झील के कारण हुआ करती थी तो अब ट्यूलिप के बगीचों के कारण ऐसा है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आखिर यह बात सच हो भी क्यों न। एशिया का सबसे बड़ा ट्यूलिप गार्डन तो कश्मीर में ही है जिसे देख आने वाले पर्यटकों के मुंह से ये शब्द निकल ही पड़ते हैं: 'वाकई धरती पर अगर कहीं कोई स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, यहीं है।'

अगली बार जब आप किसी बॉलीवुड फिल्म में ट्यूलिप यानी नलिनी के फूलों के विशाल मैदानों को देखें तो हालैंड के बारे में आपको सोचने की जरूरत नहीं है। अपने राज्य जम्मू कश्मीर में भी इन दिनों ट्यूलिप रंग-बिरंगे अवतार में दिखाई दे रहे हैं और अब यह एशिया के सबसे बड़ा ट्यूलिप गार्डन माना जाने लगा है। कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी श्रीनगर की डल झील के किनारे जब्रवान की पहाड़ियों पर स्थित सिराजबाग में इन दिनों रंग-बिरंगे ट्यूलिप खिले हैं। इस पहाड़ी पर दूर-दूर तक फैले इस उर्वर मैदान पर ट्यूलिप खिले हुए हैं। पीले, सफेद, गुलाबी, बैंगनी, लाल, नीले रंगों के ट्यूलिप यहां के माहौल में रुमानियत घोल रहे हैं। कश्मीर घाटी के इस पहले ट्यूलिप गार्डन की दिलकश छटा लोगों को मोहित कर रही है। इन खूबसूरत ट्यूलिप मैदानों से यहां का माहौल रूमानी हो गया है। कश्मीर के अधिकारी इन फूलों की बहार से बेहद उत्साहित हैं। उन्हें इस सम्भावना से संतोष हुआ है कि यह एशिया के सबसे बड़े ट्यूलिप का ठिकाना बन गया है। हालैंड से 60 प्रजातियों के ट्यूलिप यहां लाए गए हैं। अधिकारियों को खुशी इस बात की है कि बदले हुए माहौल में भी ट्यूलिप के फूल यहां पूरे यौवन के साथ खिल गए।ट्यूलिप को ट्यूलिपा भी कहा जाता है। लिलियासा फूल परिवार की करीब 100 किस्मों में ट्यूलिप भी एक किस्म मानी जाती है। यह अधिकतर दक्षिणी यूरोप, नार्थ अफ्रीका और इरान में पैदा होता है। इसकी पैदावार बीज की बजाय केसर की ही तरह होती है। डल झील का इतिहास सदियों पुराना है। पर ट्यूलिप गार्डन का मात्र दो साल पुराना। मात्र दो साल में ही यह उद्यान अपनी पहचान को कश्मीर के साथ यूं जोड़ लेगा कोई सोच भी नहीं सकता था। डल झील के सामने के इलाके में सिराजबाग में बने ट्यूलिप गार्डन में ट्यूलिप की 60 से अधिक किस्में आने-जाने वालों को अपनी ओर आकर्षित किए बिना नहीं रहतीं। यह आकर्षण ही तो है कि लोग बाग की सैर को रखी गई 80 से 100 रुपए की फीस देने में भी आनाकानी नहीं करते। दिल्ली से आई सुनिता कहती हैं कि किसी बाग को देखने का यह चार्ज ज्यादा है पर भीतर एक बार घूमने के बाद लगता है यह तो कुछ भी नहीं है। सिराजबाग हरवान-शालीमार और निशात चश्माशाही के बीच की जमीन पर करीब 700 कनाल एरिया में फैला हुआ है। यह तीन चरणों का प्रोजेक्ट है जिसके तहत अगले चरण में 1360 और 460 कनाल भूमि और साथ में जोड़ी जानी है। शुरू-शुरू में इसे शिराजी बाग के नाम से पुकारा जाता था। असल में महाराजा के समय उद्यान विभाग के मुखिया के नाम पर ही इसका नामकरण कर दिया गया था। पर अब यह शिराज बाग के स्थान पर ट्यूलिप गार्डन के नाम से अधिक जाना जाने लगा है। कहा जाता है कि 1947 से पहले सिराजद्दीन नामक एक व्यक्ति घाटी का मशहूर फल उत्पादक था। उसके पास 650 कनाल से ज्यादा जमीन पर फैला फलों का एक बाग था, जिसमें वह सेब, अखरोट, खुबानी और बादाम का उत्पादन किया करता था। ये बाग जब्रवान पहाड़ियों के दामन में स्थित था (जहां आजकल बाटोनिकल गार्डन और ट्यूलिप गार्डन है)। इस बाग का नाम उसके नाम से ही मशहूर था।

पास ही रहने वाले एक 70 वर्षीय बुजुर्ग अहमद गनेई ने उन दिनों को याद करते हुए बताया कि हम इस बाग को सिराज बाग के नाम से जानते थे। जहां पर हर तरफ सेब, अखरोट, बादाम और खुबानी के पेड़ फैले हुए थे। इस बाग की देखरेख खुद मलिक सिराजद्दीन को बरसे में मिली थी। कहा जाता है कि 1947 में भारत-पाक विभाजन के दौरान मलिक सिराजद्दीन अपनी सारी संपत्ति को छोड़ परिवार सहित पाकिस्तान चला गया। उसके चले जाने के बाद स्थानीय लोगों ने इस बाग पर कब्जा कर लिया और तकरीबन 13 वर्षों तक उनके कब्जे में रहने के बाद 1960 में कश्मीर के तत्कालीन मुख्यमंत्री गुलाम मुहम्मद सादिक ने इस बाग को अपने कब्जे में ले लिया। तब से ये जमीन सरकार के कब्जे में ही रही। 2007 में 32 कनाल जमीन पर पहला ट्यूलिप गार्डन बनाया गया। उस वक्त सिराज बाग का नाम तबदील करके गुल-ए-लाला या ट्यूलिप गार्डन रखा गया। वर्ष 2008 में इस बाग को 100 कनाल तक बढ़ाया गया, जबकि तीसरे चरण में इस बाग को और बढ़ाने की योजना है।

जब-जब इस बाग को बढ़ाया गया तब-तब इसके नाम भी तबदील होते रहे। लेकिन स्थानीय लोग आज भी इसे सिराज बाग कहते हैं। पिछली बार की ही तरह इस बार भी 4 लाख से अधिक ट्यूलिप बाग में किसी फसल की तरह लहरा रहे हैं। ट्यूलिप के तीन लाख बल्ब पिछले साल हालैंड से खरीदे गए थे। इस साल डेढ़ लाख और की जरूरत इसलिए पड़ गई क्योंकि सिराज बाग को एशिया का सबसे बड़ा ट्यूलिप गार्डन जो बनाना था। ट्यूलिप पर फूल खिलने का समय मार्च से मई महीने के बीच का है और इन दो महीनों में ही यह अपना रिकार्ड तोड़ देता है। पिछले साल कश्मीर आए 15 लाख टूरिस्टों में से शायद ही कोई ऐसा होगा जो इस बाग के दर्शनों को नहीं गया हो। जब्रवान पहाड़ियों की तलहटी में स्थित ट्यूलिप गार्डन में खिलने वाले सफेद, पीले, नीले, लाल और गुलाबी रंग के ट्यूलिप के फूल आज नीदरलैंड में खिलने वाले फूलों का मुकाबला कर रहे हैं। फूल प्रेमियों के लिए ये नीदरलैंड का ही माहौल कश्मीर में इसलिए पैदा करते हैं क्योंकि भारत भर में सिर्फ कश्मीर ही एकमात्र ऐसा स्थान है जहां पर मार्च से लेकर मई के अंत तक तीन महीनों के दौरान ये अपनी छटा बिखेरते हैं। रोचक बात यह है कि पिछले साल ट्यूलिप गार्डन के आकर्षण में बंध कर आने वालों की भीड़ से चकित होकर कश्मीर के किसानों ने भी अब ट्यूलिप के फूलों की खेती में हाथ डाल लिया है। वे इस कोशिश में कामयाब भी हो रहे हैं कि जिन केसर क्यारियों में बारूद की गंध 26 सालों से महक रही हो वहां अब ट्यूलिप की खुशबू भी हो चाहे वह कम अवधि के लिए ही क्यों न हो। यह सच है कि अभी तक कश्मीर में डल झील और मुगल गार्डन- शालीमार बाग, निशात और चश्माशाही ही आने वालों के आकर्षण का केंद्र थे और कश्मीर को दुनिया भर के लोग इसलिए भी जानते थे। लेकिन अब वक्त ने करवट ली तो ट्यूलिप गार्डन के कारण कश्मीर की पहचान बनती जा रही है। चाहे इसके लिए डल झील पर मंडराते खतरे से उत्पन्न परिस्थिति कह लिजिए या फिर मुगल उद्यानों की देखभाल न कर पाने के लिए पैदा हुए हालत की कश्मीर अब ट्यूलिप गार्डन के लिए जाना जाने लगा है।

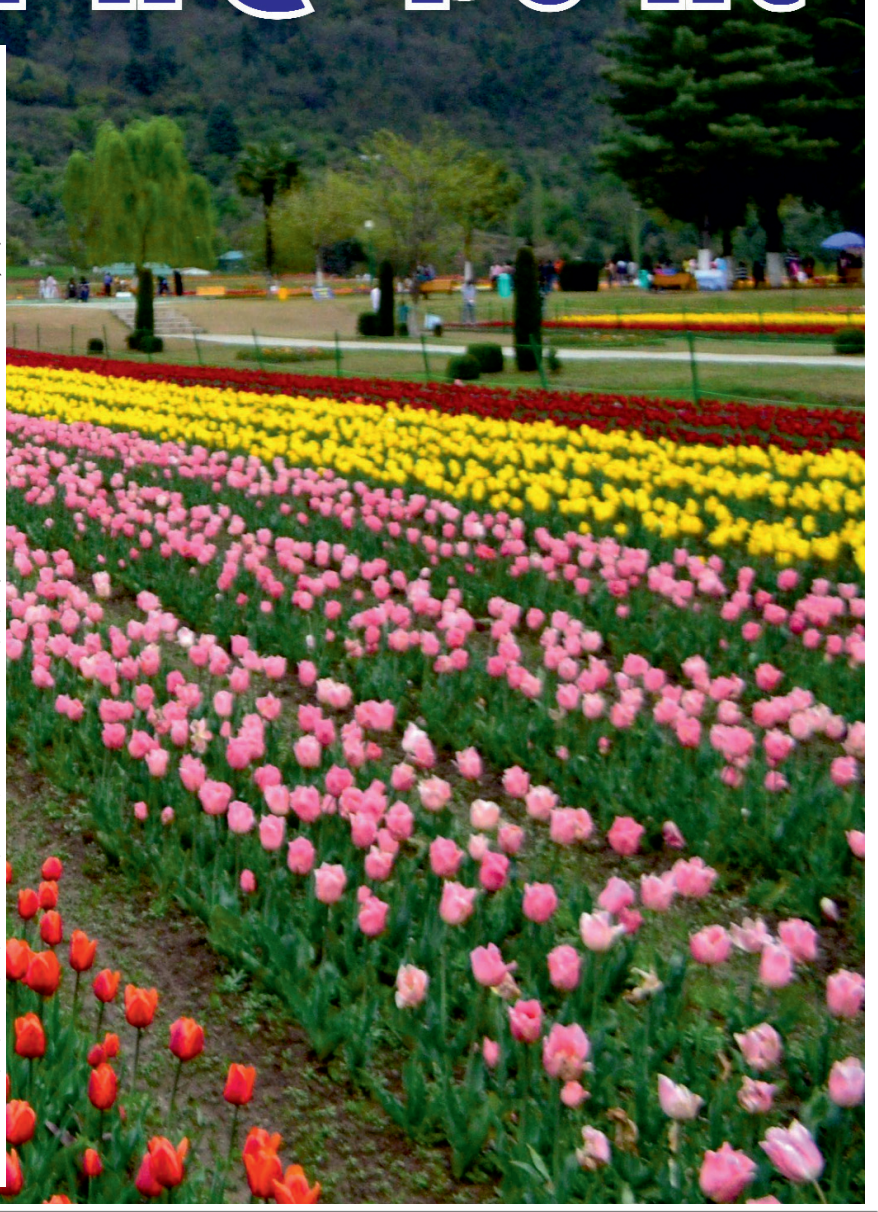

विदेशी सैलानियों को लुभा रहा हैं राजस्थान...

पर्यटकों को लुभाने में राजस्थान अग्रणी राज्य बनता जा रहा है। खासतौर से विदेशी सैलानियों के लिए रणबांकुरों, त्याग, तपस्या तथा बलिदान की अनूठी गाथाओं को अपने अंचल में समेटे शौर्य और साहस की इस धरती पर घूमने आना एक सुखद अनुभव होता है। राजस्थान घूमने के दौरान पर्यटक राजा-महाराजाओं के इतिहास, उनकी जीवन शैली एवं प्रदेश की कला संस्कृति को ही नहीं देखना चाहते, बल्कि उससे परिचित भी होना चाहते है। प्रदेश के पर्यटक स्थल, कला तथा संस्कृति के साथ यहां का समृद्ध साहित्य भी सैलानियों को आकर्षित करता है। राजस्थान की रंगीली धरती के रंग भी निराले है। कहीं ऊंची नीची अरावली की पहाड़ी यां है, तो कहीं गुरुशिखर और कहीं पठार और मैदान हैं। राजा-महाराजाओं के इतिहास तथा शौर्य को दर्शाते चितौडगढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, लोहागढ, तथा बालाकिला जैसे विशाल किले तथा दुर्ग और प्राचीन हवेलियों पर उत्कीर्ण स्थापत्य कला सैलानियों के दिल को छूकर राजस्थान के गौरव से परिचित कराती हैं। रणथंभौर, सरिस्का केवलादेव तथा तालछापार जैसे अभयारण्य वन्य जीव तथा पक्षी प्रेमियों को लुभाते है। सांस्कृतिक वैभव ऐसा है कि जो एक बार राजस्थान आता है वह बार-बार इस धरा पर आने की तमन्ना रखता है। राज्य में पर्यटन प्रोत्साहन एवं संवर्द्धन के लिए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में राज्य सरकार की ओर से उठाए गए कारगर कदमों का परिणाम है कि विदेशी सैलानियों को लुभाने में राजस्थान देश के शीर्ष पांच राज्यों में शुमार है। भारत आने वाले सौ सैलानियों में से 7 सैलानी पर्यटन के लिए राजस्थान को चुनते है।

राज्य सरकार की ओर से पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए किए गए प्रयासों से 13 दिसंबर 2008 से 31 अक्टूबर 2012 तक पिछले चार सालों के दौरान राज्य में 49 लाख 30 हजार विदेशी पर्यटक आए, जबकि इस अवधि में राजस्थान आने वाले देशी पर्यटकों की तादाद 1050 लाख 67 हजार रही। पर्यटन विभाग के अनुसार 8 दिसंबर 2003 से 31 अक्टूबर 2007 तक पूर्ववर्ती सरकार के चार वर्षों के दौरान प्रदेश में 42 लाख 59 हजार विदेशी सैलानी आए थे एवं इसी अवधि में 789 लाख एक हजार देशी सैलानी राजस्थान में पर्यटन के लिए भ्रमण पर आए थे। सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण पहल की है, जिससे घरेलू एवं विदेशी सैलानियों में राज्य के पर्यटन स्थल देखने के प्रति आकर्षण बढ़ा है। सैलानियों को लुभाने के लिए ग्रामीण पर्यटन पर जोर देकर 26 जिलों के 27 गांव विकसित किए गए हैं। इसमें वर्ष 2009-10 एवं 2010-11 में 7 जिलों के 8 गांवों में विकास कार्य पूरे कराए गए, जिन पर 375 लाख रुपए खर्च हुए। वर्ष 2011-12 में 12 जिलों के 12 गांवों में 600 लाख रुपए के तथा चालू वर्ष 2012-13 में 7 जिलों के 7 गांवों में 350 लाख रुपए के विकास कार्य करवाए जा रहे हैं। महानगरों में रहने वाले लोग आपाधापी की इस व्यस्त जिंदगी में कुछ समय गांव की माटी से रू..ब..रू होकर अपने परिवार को सुकून देना चाहते हैं, इससे ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा मिल रहा है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए नवाचार अपनाने में भी राजस्थान आगे रहा है। ट्रेन टूरिज्म में राजस्थान की सिरमौर स्थिति को और मजबूत करते हुए पैलेस ऑन व्हील्स की तर्ज पर रेल मंत्रालय के सहयोग से रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स नाम से दूसरी पर्यटक रेल 11 जनवरी 2009 से शुरू की गई है। इसके अलावा जयपुर में द ग्रेट इंडियन ट्रेवल बाजार 2009 में 19 से 21 अप्रैल, वर्ष 2010 में 11 से 13 अप्रैल तथा वर्ष 2011 में 17 से 19 अप्रैल तक सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। यह मार्ट भारत में किसी भी राज्य सरकार की ओर से प्रायोजित पहला अंतरराष्ट्रीय ट्रेवल मार्ट है। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के मकसद से पर्यटन विभाग ने पहली बार आभानेरी उत्सव का आयोजन 29 से 31 दिसंबर 2008 को चांद बावड़ी, आभानेरी दौसा में किया। राजस्थान को साहसिक पर्यटन के क्षेत्र में स्थापित करने के दृष्टिकोण से पुष्कर मेले के दौरान 17 से 20 नवंबर 2010 तक अंतरराष्ट्रीय हॉट एयर बैलून उत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें 8 देशों की बैलून टीमों ने हिस्सा लिया। अंतरराष्ट्रीय पतंग उत्सव का आयोजन पिछले साल 5 से 7 जनवरी तक उदयपुर में किया गया, जिसमें देश-विदेश के ख्याति प्राप्त पतंगबाजों ने भाग लिया।

साल 2012 में अंतरराष्ट्रीय पतंग उत्सव राजस्थान दिवस समारोह में 28 से 30 मार्च तक आयोजित किया गया, जिसमें देशी तथा विदेशी ख्याति प्राप्त पतंगबाजों ने जौहर दिखाए। राज्य सरकार की ओर से सैलानियों को आकर्षित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों का परिणाम है कि चार वर्षों के दौरान राजस्थान को 17 पुरस्कारों से नवाजा गया है।

पर्यटन क्षेत्र में निवेश को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से राज्य सरकार ने पर्यटन इकाई नीति 2007 की अवधि मार्च 2013 तक बढ़ाई है।

इस नीति के तहत पर्यटन इकाइयों के लिए ग्रामीण इलाकों में सरकारी जमीन भूमि का आवंटन, स्थानीय डीएलसी दरों पर किया जा रहा है। एग्रो प्रोसेसिंग इकाइयों की तरह पर्यटन इकाइयों के लिए जिला कलेक्टर को 10 हैक्टेयर तक भूमि का रूपांतरण करने के अधिकार दिए गए हैं। प्रदेश में विशेष पर्वों एवं धार्मिक स्थलों के मेलों के सुचारू आयोजन एवं धार्मिक स्थलों पर जाने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा तथा यात्रा के दौरान आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राज्य स्तरीय मेला प्राधिकरण का गठन किया गया है। राज्य में पर्यटन इकाइयों की 803 परियोजनाएं अनुमोदित की गई हैं, जिनमें लगभग 6143.37 करोड रुपए के विनियोजन की संभावना है।राजस्थान की कला-साहित्य एवं संस्कृति सबसे समृद्ध एवं गौरवशाली रही है। यहां की वीर प्रसूता भूमि के कण-कण में कला-संस्कृति रची-बसी हुई है। यूनेस्को ने जयपुर के जंतर-मंतर को वर्ल्ड हेरिटेज साइट सूची में शामिल किया है। चित्तौडगढ़ किला एवं बाडमेर के किराडू मन्दिर समूह को इस सूची में शामिल कराने के लिए पर्यटन विभाग की ओर से भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग नई दिल्ली को प्रस्ताव भेजे गए हैं। इसके अलावा राज्य में स्थित ऐतिहासिक बावर्ड़ी यों एवं किलों का यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट पर सीरियल नोमिनेशन दर्ज कराने के क्रम में गागरोन किला, झालावाड़, रणथंभौर, सवाई माधोपुर, कुंभलगढ़, राजसमंद, आमेर, जयपुर तथा चित्तौडगढ़ किले के डोजियर तैयार करके यूनेस्को को भेजे गए हैं। पुरातत्व एवं संग्रहालय के तहत प्रदेश के ऐतिहासिक स्मारकों, प्राचीन धरोहरों तथा संग्रहालयों में संरक्षण, जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण एवं विकास कार्य कराए गए हैं।

चम्बा की घाटी

विख्यात कलापारखी डॉ. बोगल ने चम्बा को यों ही ÷अचम्भा÷ नहीं कह डाला था और सैलानी भी यों ही इस नगरी में नहीं खिंचे चले आते। चम्बा की वादियों में कोई ऐसा सम्मोहन ज़रूर है जो सैलानियों को मंत्रमुग्ध कर देता है और वे बारङ्बार यहाँ दस्तक देने को लालायित रहते हैं। यहाँ मंदिरों से उठती धार्मिक गीतों की स्वरलहरियों जहाँ परिवेश को आध्यात्मिक बना देती हैं, वहीं रावी नदी की मस्त रवानगी और पहाड़ों की ओट से आते शीतल हवा के झोंके सैलानी को ताज़गी का अहसास कराते हैं। चम्बा में कदम रखते ही इतिहास के कई वर्क पंख फड़फड़ाने लगते हैं और यहाँ की प्राचीन प्रतिमाएँ संवाद को आतुर प्रतीत हो उठती हैं। चम्बा इतिहास, कला, धर्म और पर्यटन का मनोहारी मेल है और चम्बा के लोग अलमस्त, फक्कड़ तबीयत के। चम्बा की खूबसूरत वादियों को ज्योंङ्ज्यों हम पार करते जाते हैं, आश्चर्यों के कई नये वर्क हमारे सामने खुलते चले जाते हैं और प्रकृति अपने दिव्य सौंदर्य की झलक हमें दिखाती चलती है। चम्बा की किसी दुर्गम वादी में अगर कोई पंगवाली युवती मुस्करा कर हमारा अभिवादन करती है तो किसी वादी में कोई गद्दिन युवती अपनी भेड़ङ्बकरियों के रेवड़ के साथ गुज़रती हुई अपनी मासूमियत से हमारा दिल जीत जाती है। चम्बा के सौंदर्य को बड़ी शिद्दत से आत्मसात करने के बाद ही डॉ. बोगल ने इसे अचंभा कहा होगा।

चम्बा को यह सौभाग्य प्राप्त रहा है कि इसे एक से बढ़कर एक कलाप्रिय, धार्मिक व जनसेवक राजा मिले। इन राजाओं के काल में यहाँ की लोक कलाएँ न केवल फलीङ्फूलीं अपितु इनकी ख्याति चम्बा की सीमाओं को पार कर पूरे भारत में फैली। इन कलाप्रिय नरेशों में राज श्री सिंह (1844), राजा राम सिंह (1873) व राजा भूरि सिंह (1904) के नाम विषेश रूप से उल्लेखनीय हैं। वास्तुकला हो या भित्तिचित्र कला, मूर्तिकला हो या काष्ठ कला, जितना प्रोत्साहन इन्हें चम्बा में मिला, शायद ही ये कलाएँ देश में कहीं अन्यत्र इतनी विकसित हुई हों। ÷चम्बा कलम÷ (विशेष कला शैली ¬चित्र दाहिनी ओर) ने तो देश भर में एक अलग पहचान बनाई है। किसी घाटी की ऊंचाई पर खड़े होकर देखें तो समूचा चम्बा शहर भी किसी अनूठी कलाकृति की तरह ही लगता है। ढलानदार छत्तों वाले मकान, शिखर शैली के मंदिर, हराङ्भरा विशाल चौगान और इसकी पृष्ठभूमि में यूरोपीय प्रभाव लिए महलों का वास्तुशिल्प सहसा ही मन मोह लेता है। चम्बा में पहुंचते ही रजवाड़ाशाही के दिनों में लौटने की कल्पना भी की जा सकती है और यहाँ के प्राचीन रंगमहल व अखंडचंडी महल में घूमते हुए अतीत की पदचाप भी सुनी जा सकती है। चम्बा के संस्थापक राजा साहिल वर्मा ने 920 ई .में इस शहर का नामकरण अपनी बेटी चंपा के नाम पर क्यों किया था, इस बारे में एक बहुत ही रोचक किंवदंती प्रचलित है। कहा जाता है कि राजकुमारी चंपावती बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की थी और नित्य स्वाध्याय के लिए एक साधू के पास जाया करती थी। एक दिन राजा को किसी कारणवश अपनी बेटी पर संदेह हो गया। शाम को जब साधू के आश्रम में बेटी जाने लगी तो राजा भी चुपके से उसके पीछे हो लिया। बेटी के आश्रम में प्रवेश करते ही जब राजा भी अंदर गया तो उसे वहाँ कोई दिखाई नहीं दिया। लेकिन तभी आश्रम से एक आवाज़ गूँजी कि उसका संदेह निराधार है और अपनी बेटी पर शक करने की सज़ा के रूप में उसकी निष्कलंक बेटी छीन ली जाती है। साथ चम्बा नगर की ऐतिहासिक चौगानही राजा को इस स्थान पर एक मंदिर बनाने का आदेश भी प्राप्त हुआ। चम्बा नगर के ऐतिहासिक चौगान (चित्र में) के पास स्थित इस मंदिर को लोग चमेसनी देवी के नाम से पुकारते हैं। वास्तुकला की दृष्टि से यह मंदिर अद्वितीय है। इस घटना के बाद राजा साहिल वर्मा ने नगर का नामकरण राजकुमारी चंपा के नाम पर किया, जो बाद में चम्बा कहलाने लगा।चम्बा में मंदिरों की बहुतायत होने के कारण इसे ÷मंदिरों की नगरी÷ भी कहा जाता है। चम्बा में लगभग 75 मंदिर हैं और इनके बारे में अलगङ्अलग किंवर्दतियाँ हैं। इनमें से कई मंदिर शिखर शैली के हैं और कई पर्वतीय शैली के। शिल्प व वास्तुकला की दृष्टि से ये मंदिर अद्वितीय हैं। लक्ष्मीनारायण मंदिर समूह तो चम्बा को सर्वप्रसिद्ध देवस्थल है। इस मंदिर समूह में महाकाली, हनुमान, नंदीगण के मंदिरों के साथङ्साथ विष्णु व शिव के तीनङ्तीन मंदिर हैं। सिद्ध चर्पटनाथ की समाधि भी यहीं है। मंदिर में अवस्थित लक्ष्मीनारायण की बैकुंठ मूर्ति कश्मीरी व गुप्तकालीन निर्माण कला का अनूठा संगम है। इस मूर्ति के चार मुख व चार हाथ हैं। मूर्ति की पृष्ठभूमि में तोरण है, जिस पर 10 अवतारों की लीला चित्रित है। भगवान वासुदेव की मूर्तिचम्बा कलानगरी भी कहलाती है। यहाँ भूरिसिंह नाम का संग्रहालय है जहाँ चम्बा घाटी की हर कला सुशोभित है। भारत के 5 प्राचीन प्रमुख संग्रहालयों में से एक माने जाने वाला यह संग्रहालय शहर के ऐतिहासिक चौगान में स्थित है और विश्व भर के पर्यटकों, शोधार्थियों व कलाप्रेमियों के आकर्षण का केंद्र है। इस संग्रहालय में 5 हज़ार से अधिक ऐसी दुर्लभ कलाकृतियाँ हैं जो इस तथ्य की साक्षी हैं कि उस समय चम्बा की कला अपने स्वर्णिम युग में थी। इन कलाकृतियों में भित्तिचित्र भी हैं और मूर्तियाँ भी, पांडुलिपियाँ भी हैं और विभिन्न धातुओं से निर्मित वस्तुएँ भी। यही नहीं, प्राचीन सिक्के और आभूषण भी बड़ी सँभाल के साथ यहाँ रखे गए है। विश्व प्रसिद्ध ÷चम्बा रूमाल÷ भी यहाँ शीशे के बक्सों में देखा जा सकता है। संग्रहालय में रखी गई मूर्तियाँ उन्नत शिल्प कला का बेजोड़ उदाहरण हैं। इनमें से एक मूर्ति भगवान वासुदेव की हैं (चित्र दायीं ओर)। यह मूर्ति इस संग्रहालय की सुरक्षित प्रस्तर प्रतिभाओं में से सब से छोटी है। चम्बा की कलात्मक धरोहर में यहाँ की पनघट शिलाओं को भी शामिल किया जा सकता है। ये शिलाएँ चम्बा जनपद के ग्रामीण आंचलों में बनी बावड़ियों और नौणा जैसे प्राकृतिक जल स्त्रोतों के किनारे आज भी प्रतिष्ठित देखी जा सकती हैं। घाटियों में घूमता कोई घुमक्कड़ जब अपनी प्यास बुझाने इन जल स्त्रोतों के पास पहुंचता है तो वहाँ रखी पनघट शिलाओं के कलात्मक शिल्प और इन पर खुदी आकृतियों को देखकर दंग रह जाता है। ये शिलाएँ चम्बा की गौरवपूर्ण संस्कृति व इतिहास का आइना भी हैं।

पीएम मोदी के काफी भरोसेमंद और गुजरात भाजपा के पूर्व विधायक सुनील ओझा का निधन

अहमदाबाद । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के काफी भरोसेमंद और गुजरात के भावनगर के पूर्व विधायक सुनील ओझा का बुधवार को दिल्ली में हार्ट अटैक से निधन हो गया। सुनील ओझा के निधन से भाजपा में शोक व्याप्त है। सुनील ओझा के निधन पर पीएम मोदी ने ट्वीट कर गहरा दुःख व्यक्त किया है। पीएम मोदी ने अपने ट्वीट में कहा 'भावनगर के पूर्व विधायक सुनीलभाई ओझा के निधन के समाचार आघातजनक हैं। भारतीय जनता पार्टी के संगठन के विस्तार में और समाज सेवा क्षेत्र में उनका योगदान हमेशा याद रहेगा। वाराणसी में भी सुनीलभाई का संगठनात्मक कार्य सराहनीय रहा है। प्रभु उनकी दिव्य आत्मा को शांति और परिवारजनों को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे, यही प्रार्थना।' पीएम मोदी के संसदीय निर्वाचन क्षेत्र वाराणसी का 9 साल से प्रभार संभालने वाले सुनील ओझा ने हाल ही में काशी में रमेशभाई ओझा की कथा का आयोजन किया था। भावनगर के पूर्व विधायक पिछले 10 साल से वाराणसी में स्थायी हुए थे। गत मार्च महीने में ही सुनील ओझा को बिहार भाजपा का सह प्रभारी नियुक्त किया गया था। उससे पहले सुनील ओझा उत्तर प्रदेश भाजपा के सह प्रभारी थे। एक कुशल संगठनकार माने जाते सुनील ओझा करीब 30 वर्षों से पीएम मोदी के संपर्क में थे। वाराणसी लोकसभा सीट से नरेन्द्र मोदी को चुनाव जितवाने में सुनील ओझा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 1998 में भावनगर दक्षिण विधानसभा सीट से पहली बार विधायक बने सुनील ओझा प्रारंभ में गुजरात पूर्व मुख्यमंत्री केशूभाई पटेल के करीबी माने जाते थे। लेकिन 2002 में राजकोट चुनाव के बाद सुनील ओझा की नरेन्द्र मोदी के साथ निकटता बढ़ने लगी। भावनगर के मूल निवासी सुनील ओझा उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर के गडौली धाम आश्रम को लेकर काफी चर्चा में रहे। मिर्जापुर में गंगा नदी के किनारे गडौली धाम आश्रम बनाया जा रहा है। बताया जाता है कि यह आश्रम सुनील ओझा की निगरानी में बनाया जा रहा है।

छह देशों के दूतों ने राष्ट्रपति मुर्मू को परिचय पत्र प्रस्तुत किए

नई दिल्ली । राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मंगलवार को राष्ट्रपति भवन में एक समारोह में आयरलैंड, मलेशिया और माली सहित छह देशों के दूतों से उनके परिचय पत्र प्राप्त किए। राष्ट्रपति भवन की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि जिन दूतों ने अपने परिचय पत्र प्रस्तुत किये उनमें आयरलैंड के राजदूत केविन केली, बोस्निया एवं हर्जेगोविना के राजदूत हैरिस हर्ले और आर्मेनिया गणराज्य के राजदूत वाहगन अफयान शामिल थे। बयान में कहा गया है कि मलेशिया के उच्चायुक्त मुजफ्फर शाह बिन मुस्तफा, माली गणराज्य के राजदूत ब्रिगेडियर जनरल फेलिक्स डायलो और मार्शल द्वीप गणराज्य के राजदूत अलेक्जेंडर कार्टर बिंग ने भी राष्ट्रपति को अपने परिचय पत्र प्रस्तुत किए।

मियां-बीवी की लड़ाई...बैंकॉक जाने वाली फ़्लाइट दिल्ली आई

-पाकिस्तान में उतरने की नहीं मिली इजाजत

नई दिल्ली । विमान में मियां-बीवी के बीच ऐसी लड़ाई हुई कि विमान को जाना था बैंकॉक पर पहुंच गया दिल्ली। बुधवार को म्यूनिख से बैंकॉक के लिए उड़ान भरने वाली लुफ़्थान्सा एयरलाइन के एक विमान को यात्री के व्यवहार की वजह से रास्ता बदलकर दिल्ली आना पड़ा। सूत्रों ने बताया कि विमान को दिल्ली लाने का फैसला केबिन क्रू की शिकायत के बाद लिया गया। केबिन क्रू के सदस्यों ने विशेष तौर से पति और पत्नी के बीच हो रही लड़ाई की शिकायत की थी। दिल्ली एयरपोर्ट पर तैनात उड़ान सुरक्षा कर्मियों ने बताया, पति-पत्नी के बीच लड़ाई क्यों हुई इसकी जानकारी अब तक नहीं लग पाई है। लेकिन पति-पत्नी के बीच लड़ाई की वजह से ही फ्लाइट को डायवर्ट करना पड़ा। हालांकि, इस विमान को उड़ा रहे पायलट ने पहले पाकिस्तान के नजदीक प्लेन को लैंड करने की इजाजात मांगी थी लेकिन पायलट के आग्रह को ठुकरा दिया गया। पाकिस्तान के नजदीक विमान को क्यों उतरने की इजाजत नहीं दी गई अभी इसके बारे में पता नहीं चल सका है। लुफ्थांसा की विमान संख्या को सुबह 10 बजकर 26 मिनट पर इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर पर उतरने की इजाजत दी गई गई थी। पायलट ने एटीसी से संपर्क कर बात विमान में यात्री के गलत व्यवहार के बारे में जानकारी दी थी। बताया जा रहा है कि विमान के अंदर जर्मन युवक और उसकी थाई पत्नी के बीच किसी बात को लेकर लड़ाई हुई थी। पहले पत्नी ने अपने पति के खराब व्यवहार की शिकायत पायलट से की थी। महिला ने पायलट से कहा था कि उसके पति उसे धमकी दे रहे हैं और फिर उन्होंने पायलय से हस्तक्षेप की मांग की थी। दिल्ली पहुंचने के बाद जर्मन नागरिक को विमान से उतार लिया गया। डीजीसीए के अधिकारी ने कहा कि एयरलाइन अब जर्मन एंबेसी से संपर्क कर यात्री के बारे में बातचीत कर रहा है। हालांकि, यात्री ने माफी मांग ली है।

सपा सांसद शफीकुर्रहमान बर्क ने हिजाब के साथ रेंप वॉक का किया विरोध

मुजफ्फरनगर । यूपी के सपा सांसद शफीकुर्रहमान बर्क ने हिजाब के साथ रेंप वॉक का विरोध किया है। दरअसल यूपी के मुजफ्फरनगर के एक कॉलेज में लड़कियों के बुर्का और हिजाब पहनकर रैंप वाक करना चर्चा का विषय बन गया। एक ओर जहां मुस्लिम धर्मगुरुओं ने इसकी कड़े शब्दों में निंदा की है वहीं, सपा सांसद शफीकुर्रहमान बर्क ने भी इस तरह के रैंप वॉक का सख्त विरोध किया है। उन्होंने कहा कि लड़कियों के द्वारा ऐसा करना इस्लाम के कानून के खिलाफ है। इस संबन्ध में उनके मां-बाप से बातचीत करना चाहिए और उन पर एक्शन होना चाहिए। सपा सांसद शफीकुर्रहमान बर्क ने मुस्लिम धर्मगुरूओं के विरोध को सही बताते हुए कहा कि लड़कियों का ऐसा करना इस्लाम के आईन और कानून के खिलाफ है। उनपर कार्रवाई की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि इसको लेकर लड़कियों के मां-बाप से भी बातचीत होनी चाहिए। मां-बाप से कहना चाहिए कि वह इन लड़कियों के खिलाफ एक्शन लें, उन्हें डांटें। उन्होंने कहा कि हम लोग भी अपनी लड़कियों को समझाएं कि इस तरह की हरकतें करके इस्लाम को बदनाम न करें। फैशन-शो का मतलब यह नहीं है कि अपने दीन और मजहब को बदनाम किया जाए। हममें और दूसरों में क्या फर्क रह जाएगा। शफीकुर्रहमान ने कहा कि इस तरह के रैंप वाक दोबारा नहीं होने चाहिए। गौरतलब है कि नगर के प्रतिष्ठित स्कूल श्रीराम कॉलेज में पिछले तीन दिनों से फैशन शो का एक कार्यक्रम चल रहा था, जिसमें मंदाकिनी सहित कई बड़ी फिल्मी हस्तियों ने हिस्सा लिया था। बताया जा रहा है कि इसी कार्यक्रम के समापन पर रविवार देर शाम फैशन शो के दौरान कुछ छात्राओं ने बुरका पहनकर रैंप पर कैटवॉक किया था। जिसकी वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। बुरखा पहनकर रैंप पर कैटवॉक करने वाली हालांकि अलीना नाम की एक छात्रा ने इसे क्रिएटिविटी बताया है । उनका कहना है कि मुस्लिम समाज की युवतियों के लिए कुछ करना चाहिए, इसलिए हमने बुरखा पहन कर यह किया है। अलीना ने कहा कि हम यह कहना चाहते हैं कि बुरका फैशन में भी आ सकता है यह नहीं की लड़कियां इसे घर में ही पहने, इसे बाहर भी पहना जा सकता है।

मोदी सरकार की बड़ी पहल, 5 साल तक और मिलेगा गरीबों को फी राशन

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार अब पांच साल और गरीबों को मुफ्त राशन बांटेगी। केन्द्र ने करीब 80 करोड़ गरीब लोगों को प्रति माह पांच किलोग्राम मुफ्त खाद्य सामग्री देने से जुड़ी पीएमजीकेएवाय योजना को अगले पांच वर्षों के लिए बढ़ा दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में मंगलवार को हुई मंत्रिमंडल की बैठक में इस संबंध में फैसला किया गया। सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने बुधवार को जानकारी देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना को एक जनवरी 2024 से अगले पांच साल के लिए बढ़ा दिया गया है। हालांकि योजना को पहले 31 दिसंबर 2023 तक विस्तार दिया गया था। सूचना एवं प्रसारण मंत्री ने कहा कि अगले पांच वर्षों में योजना पर करीब 11.8 लाख करोड़ रुपये का खर्च आएगा। पीएमजीकेएवाई को 2020 में वैश्विक महामारी राहत उपाय के रूप में पेश किया गया था। इसमें राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत पांच किलोग्राम सब्सिडी वाली खाद्य सामग्री के अलावा प्रति लाभार्थी को हर महीने पांच किलोग्राम मुफ्त खाद्यान्न प्रदान किया जाता है। कई विस्तारों के बाद दिसंबर 2022 में पीएमजीकेएवाय योजना को मुफ्त राशन प्रदान करने वाले एनएफएसए के अधीन लाया गया है।

छत्तीसगढ़ में चुनावी बयानबाजी तेज, जीत को लेकर दावे

-भाजपा के मंसूबों पर पानी फेरकर कांग्रेस ने किया सरकार बनाने का दावा

रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने अपनी सरकार बनाने का दावा किया है। भाजपा के मंसूबों पर पानी फेरते हुए पीसीसी संचार प्रमुख सुशील आनंद ने अपना बयान जारी किया है। उनका कहना है कि मनसुख मंडाविया या चाणक्य अमित शाह आ जाये, छत्तीसगढ़ में सरकार तो कांग्रेस की ही बनेगी। इसके साथ ही उन्होंने कर्मचारियों के नियमतिकरण पर कहा कि जो कर्मचारी बचे हैं उनके हित में आगे निर्णय लिया जाएगा। गौरतलब है कि विधानसभा चुनाव 2023 के लिए दो चरणों में 90 सीटों में मतदान हो चुका है। पहले चरण में 20 सीटों में 7 नवंबर और दूसरे चरण में 17 नवंबर को 70 सीटों में मतदान हुआ। चुनावी मैदान में उतरे उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला 3 दिसंबर को होगा। तक पता चलेगा की प्रदेश में किसकी सरकार आएगी। इस दिन का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

वहीं मतगणना को लेकर भी सियासी बयानबाजी भी तेज हो गई है। पीसीसी संचार विभाग अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने भाजपा की मतगणना को लेकर रणनीति पर तंज कसा है। उन्होंने कहा कि भाजपा मुगालते पालकर बैठी हैं कि वो सरकार बनाने जा रही। ढाई के अंक तक मुश्किल से पहुंचेगी, कोई भी रणनीति बना ले सब धरी के धरी रह जाएगी। छत्तीसगढ़ में चाहे मनसुख मंडाविया आ जाये या चाणक्य अमित शाह आ जाये, सरकार तो कांग्रेस की ही बनेगी। नियमतिकरण की आस में बैठे कर्मचारियों की हालत पर सुशील आनंद ने कहा कि भाजपा के 15 साल की सरकार में कर्मचारियों के साथ अन्याय, शोषण हुआ। जबकि कांग्रेस की सरकार के समय में कर्मचारियों के वेतन में बढ़ोतरी की गई, बहुत से कर्मचारियों को नियमित भी किया।

मतगणना को लेकर भाजपा की तैयारी पर सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि मतगणना में गड़बड़ी करना भाजपा का चरित्र रहा है। मध्यप्रदेश में कलेक्टर ने बैलेट पेपर खुलवा दिया। भाजपा चुनाव हार रही है। इसलिए उनके नेता पटकथा लिख रहे हैं। हारने के बाद पट कथा लिखने वाले बताएंगे कि मतगणना में गड़बड़ी हुई है। भाजपा पर धान के मूल्य को लेकर कांग्रेस हमलावर रही हैं। इस पर सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि केंद्र में भाजपा की सरकार है छत्तीसगढ़ राज्य में चुनाव के समय जनता को ठगने के लिए धान का मूल्य 3100 किया। देश के बाकी राज्यों के किसानों को भी तो मिलना चाहिए।

प्रेमी से मिलने पाकिस्तान पहुंची अंजू भारत लौटी

जयपुर । राजस्थान से पाकिस्तान गई अंजू भारत वापस आ गई है। अंजू की एक तस्वीर सामने आई है। वह वाघा बॉर्डर के रास्ते लौटी है। करीब छह माह पहले अंजू भारत से पाकिस्तान पहुंची थी। शुरुआत में कहा गया कि वह सिर्फ घूमने वहां गई है, लेकिन फिर अंजू ने अपने पाकिस्तानी दोस्त नसरुल्लाह से शादी कर ली थी। वैसे अंजू पहले से शादीशुदा थी। भारत में अरविंद नाम के शख्स से उसकी शादी हो रखी थी। इनके दो बच्चे भी थे। लेकिन यहां अपने बच्चों और पति को छोड़कर वह वैध कागजों के साथ पाकिस्तान चली गई थी। अभी यह नहीं बताया जा सकता हैं कि अंजू हमेशा के लिए भारत लौटी है या फिर वापस पाकिस्तान जाएगी। दरअसल, कुछ दिन पहले ही पाकिस्तानी मीडिया में नसरुल्लाह का इंटरव्यू सामने आया था। इसमें नसरुल्लाह ने कहा था कि वहां खुद अंजू को वाघा बॉर्डर तक छोड़ने आएगा। यहां भारत में वहां अपने बच्चों से मिलेगी। अगर बच्चे अंजू के साथ पाकिस्तान आना चाहते हैं, तब आ सकते हैं। लेकिन अगर वे भारत ही रहना चाहते हैं, तब वहां उनकी मर्जी है। नसरुल्लाह ने कहा था कि अंजू सिर्फ बच्चों की खातिर भारत आई है, क्योंकि उसे अपने बच्चों की बहुत याद आती है। लेकिन अब अंजू इस सब पर क्या कहती है ये देखने वाली बात होगी।

मजदूरों को सुरक्षित निकालने के बाद अब ढूंढे जाएंगे हादसे के कारण?

-केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने बताई सुरंग के सुरक्षा ऑडिट की जरुरत

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तराखंड में ढही सुरंग के अंदर फंसे सभी मजदूरों को 17 दिनों बाद सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया है। अब लेकिन हादसे के कारणों को ढूंढा जा रहा है। केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि सुरंग के सुरक्षा ऑडिट की जरुरत है। ताकि पता चल सके कि आखिर ऐसी चूक कहां पर हुई। वहीं 41 श्रमिकों को बाहर निकालने के बाद से ही सिल्क्यारा से लेकर देहरादून, देहरादून से लेकर दिल्ली, दिल्ली से लेकर सुरंग में फंसे मजदूरों के देश के अलग-अलग प्रांतों में स्थित घरों तक उत्साह और उल्लास का माहौल है। दुरुह बचाव कार्य को अंजाम देने के बाद अब इस बात पर सरकार का ध्यान है कि सुरंग ढहने का कारण क्या था, और बचाव कार्य में इतना समय क्यों लगा। उत्तरकाशी से लगभग 30 किमी दूर स्थित, सिल्क्यारा सुरंग केंद्र सरकार की चार धाम ऑल वेदर रोड परियोजना का एक अभिन्न अंग है, जो नाजुक हिमालयी इलाके में लगभग 889 किलोमीटर तक फैलेगी। सुरंग बनाने की परियोजना हैदराबाद स्थित नवयुग इंजीनियरिंग कंपनी लिमिटेड द्वारा की जा रही है, जिसने पहले भी ऐसी परियोजनाओं को पूरा किया है।

श्रमिकों के सुरक्षित होने के साथ अब सरकार का ध्यान इस इस ओर है कि सुरंग ढहने का कारण क्या था। यह घटना पहाड़ी क्षेत्र में बड़े पैमाने पर विकास के खतरों को भी उजागर करती है जो भूकंपीय और भूस्खलन की संभावना वाला है। बड़ी परियोजनाओं को पर्यावरणीय प्रभाव आकलन से गुजरना आवश्यक है, सिल्कयारा सुरंग को छूट दी गई थी क्योंकि इसे 100 किमी से छोटे खंडों में विभाजित किया गया है। इसलिए सुप्रीम कोर्ट ने 2019 में एक विशेषज्ञ पैनल से जोखिम कम करने के विकल्प ढूंढने को कहा है। समिति ने कई समस्याओं की पहचान की। वहीं केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि यह पहली बार है जब ऐसी दुर्घटना हुई है। हम सुरंग का सुरक्षा ऑडिट करके यह भी अध्ययन करेंगे कि हम कैसे बेहतर तकनीक का उपयोग कर सकते हैं।

केजरीवाल के नापंसद मुख्य सचिव को 6 माह का विस्तार देना चाहती हैं मोदी सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। मोदी सरकार दिल्ली के मौजूदा मुख्य सचिव नरेश कुमार के कार्यकाल को छह महीने का विस्तार देना चाहती है। केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट की ओर से उठाए गए सवाल का जवाब देकर कहा है कि उसके पास ऐसा करने का अधिकार है, इसके पहले 57 बार मुख्य सचिवों के कार्यकाल को विस्तार दिया जा चुका है। गौरतलब है कि दिल्ली सरकार और नरेश कुमार के बीच टकराव चल रहा है। नरेश कुमार का कार्यकाल 30 नवंबर को खत्म हो रहा है। केजरीवाल सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करके उसकी सहमति से नए मुख्य सचिव की नियुक्ति की मांग की है।

केंद्र की ओर से सर्वोच्च अदालत में पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा, दिल्ली देश की राजधानी है और केंद्र का विचार है कि नरेश कुमार को ही अगले छह महीने तक बनाए रखा जाए। हालांकि, मेहता ने साफ किया कि नरेश कुमार को अगले छह महीने तक ही मुख्य सचिव रखा जाएगा क्योंकि नियमनुसार इससे अधिक विस्तार नहीं दे सकते हैं।

इस मुद्दे पर सुनवाई के दौरान केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट में मंशा जाहिर की थी कि वह नरेश कुमार को ही सेवा विस्तार देना चाहती है। इस पर शीर्ष अदालत ने जानना चाहा कि वह (केंद्र) किस शक्ति के तहत ऐसा कर सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने पूछा कि क्या उसके पास केवल एक ही व्यक्ति है, क्या इस पद के लिए भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) का कोई अन्य अधिकारी उपलब्ध नहीं है। अदालत ने केंद्र सरकार से बताने को कहा था कि किस आधार पर नरेश कुमार का कार्यकाल बढ़ाना चाहती है।

मुख्य सचिव की नियुक्ति मुख्यमंत्री केजरीवाल और उपराज्यपाल (एलजी) वीके सक्सेना के बीच विवाद की नई जड़ है। बिना किसी परामर्श के नए मुख्य सचिव की नियुक्ति या मौजूदा मुख्य सचिव नरेश कुमार का कार्यकाल बढ़ाने के केंद्र के किसी भी कदम के खिलाफ दिल्ली सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी, जिस पर सुनवाई हो रही है।

तैयारी शुरु: इसरो अगले साल अंतरिक्ष में भेजेगा भारतीय यात्री

श्रीहरिकोटा (एजेंसी)। चांद के दक्षिणी ध्रुव पर तिरंगा फहराने वाला दुनिया का एक मात्र देश भारत है। जिसने चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग कराकर समूची दुनिया का दिल जीता है। जो कोई नहीं कर सका वो भारत ने करके दिखाया है। यही वजह है कि इसरो की कार्य प्रणाली से नासा भी प्रभावित हुआ है। जिसके चलते इसरो और नासा के वैज्ञानिकों ने साथ मिलकर काम करने का निर्णय लिया है। अपने स्पेस रिसर्च के चलते अब अंतरिक्ष में भारतीय यात्री को भेजने की तैयारी की जा रही है। इस आशय की पुष्टि नासा के प्रशासक बिल नेल्सन ने की है।

भारत अब अंतरिक्ष में रफ्तार बढ़ाने के लिए तैयार है। इस काम में नासा यानी नेशनल एयरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन का भी साथ मिलने जा रहा है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के प्रशासक बिल नेल्सन ने मंगलवार को यहां कहा कि भारत के खुद के अंतरिक्ष स्टेशन निर्माण में नयी दिल्ली का सहयोग करने के लिए वॉशिंगटन तैयार है। भारत यात्रा पर आए नेल्सन ने कहा कि अमेरिका और भारत अगले साल के अंत तक एक भारतीय अंतरिक्ष यात्री को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन भेजने की योजना पर काम कर रहे हैं।नेल्सन ने यहां संवाददाताओं से कहा, अंतरिक्ष यात्री का चयन इसरो द्वारा किया जाएगा। नासा चयन नहीं करेगा। उन्होंने एक सवाल के जवाब में कहा कि अगर भारत चाहे तो अंतरिक्ष स्टेशन के निर्माण में नई दिल्ली के साथ सहयोग करने के लिए वॉशिंगटन तैयार होगा।

नेल्सन ने कहा, हमें उम्मीद है कि उस समय तक एक वाणिज्यिक अंतरिक्ष स्टेशन होगा। मुझे लगता है कि भारत 2040 तक एक वाणिज्यिक अंतरिक्ष स्टेशन चाहता है। अगर भारत चाहता है कि हम उसके साथ सहयोग करें, तो निश्चित रूप से हम उपलब्ध होंगे। लेकिन यह भारत पर निर्भर है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसरो से 2035 तक एक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन बनाने और 2040 तक चंद्रमा पर अंतरिक्ष यात्रियों को उतारने का लक्ष्य रखने को कहा है।

नेल्सन ने मंगलवार को विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री जितेंद्र सिंह से मुलाकात की तथा उनका अंतरिक्ष क्षेत्र के व्यापारिक दिग्गजों के साथ बैठक के लिए मुंबई जाने का कार्यक्रम है। उनका बेंगलुरु में इसरो मुख्यालय का दौरा करने और भारतीय अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा से भी मिलने का कार्यक्रम है। खास बात है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसरो को 2035 तक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन के निर्माण का लक्ष्य बनाने का निर्देश दिया है। इसके अलावा भारत 2040 तक चांद पर मानव की लैंडिंग की तैयारी भी कर रहा है।

पर्यावरण संकट का एकमात्र उपाय देशी गौ पालन : मोहन भागवत

-दीनदयाल गौ विज्ञान अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र में हुआ प्रशानिक भवन का लोकार्पण

मथुरा (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि बढ़ते पर्यावरण संकट का एकमात्र उपाय देशी गाय का पालन कारना है। दीनदयाल गौ ग्राम परखम में प्रारंभ किये गये दीनदयाल गौ विज्ञान अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र, प्रशासनिक भवन कक्षाओं एवं बायो गैस जनरेटर का लोकार्पण करने के बाद डॉ भागवत ने उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि गो पालन करने वाला किसान कर्ज मुक्त हो जाता है क्योंकि गाय का गोबर एवं गोमूत्र धरती की उर्वरा शक्ति बढ़ा देते हैं। आज प्रमाण देने का जमाना आ गया है, इसे ही सोच कर दीनदयाल गौ ग्राम में विभिन्न प्रकल्पों को शुरू किया गया है। उन्होंने कहा कि पुरी के शंकराचार्य निरंजनदेव तीर्थ के गो हत्या रोकने के लिए अनशन करने के बाद गाय पर बहुत काम हुआ और आज उसी के कारण देशी गाय की उपयोगिता को समझा जा रहा है। गाय की महिमा से विश्व को अवगत कराने के लिए यहां पर वैज्ञानिक तरीके से अनुसंधान किये जाएंगे।

संघ प्रमुख मोहन भागवत ने इन प्रकल्पों से जुड़े लोगों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि देवताओं ने सागर मंथन को तब तक बंद नही किया जब तक अमृत की प्राप्ति नही हो गई, उसी प्रकार जिस उद्देश्य से प्रकल्प शुरू किये जा रहे हैं, उन्हें ऊंचाइयों तक पहुंचाना उनकी जिम्मेदारी है तथा समाज को भी इसमें पूरा सहयोग करना चाहिए। डॉ भागवत ने कहा कि देशी गाय के दूध में जितने पौष्टिक तत्व होते हैं, उतने किसी जानवर के दूध में नही होते। इसलिए सभी को गोसेवा में हाथ बटाना चाहिए।

कुछ स्थानों पर शहर के बीचोबीच रहने वाले लोग मिलकर गायों को एक ही स्थान पर शहर से बाहर रखने उनके भरण पोषण की व्यवस्था करते हैं तथा वे वहां से देशी गाय का दूध ले जाते है। यह एक अच्छा प्रयास है। उन्होंने इस बात पर अफसोस प्रकट किया कि कुछ लोग एक ओर गाय को माता कहते हैं दूसरी ओर उसे चारा नही देते हैं तथा चारे के लिए उसे दर दर भटकने को छोड़ देते हैं जो बाद में बांगलादेश कटने के लिए जाती है जब कि गाय, दूध गोबर, गोमूत्र के माध्यम से धरती की उर्वराशक्ति बढाकर गाय जितना देती है उसका दुगुना प्रत्येक व्यक्ति को गाय के लिए करना चाहिए।

ज्ञानवापी सर्वेक्षण पर रिपोर्ट सौंपने के लिए एएसआई ने मांगे और 3 सप्ताह

वाराणसी । ज्ञानवापी मस्जिद परिसर के वैज्ञानिक सर्वेक्षण पर अपनी रिपोर्ट सौंपने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने जिला अदालत से तीन सप्ताह का अतिरिक्त समय मांगा है। जिरह के दौरान हिंदू पक्ष के वकील मदन मोहन यादव ने कहा कि एएसआई के दायर आवेदन पर बुधवार को जिला न्यायाधीश अजय कृष्ण विश्वेशा द्वारा सुनवाई किए जाने की संभावना है। उन्होंने कहा कि एएसआई ने अपने आवेदन में कहा है कि एजेंसी के विशेषज्ञ सीएसआईआर-एनजीआरआई टीम तैयार की गई छवियों की व्याख्या के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। विशेषज्ञों की टीम ने जीपीआर एंटीना के सैकड़ों (छोटे और बड़े) प्रोफाइल के साथ विशाल जीपीआर डेटा तैयार किया है। डेटा को विशेषज्ञों के साथ चर्चा में सार्थक परिणामों के लिए उचित विश्लेषण और बहुत सावधानीपूर्वक व्याख्या की जरुरत होती है, जिसमें काफी समय लग रहा है। एएसआई विशेषज्ञ अपने कैंप कार्यालय में पुरातत्वविदों, पुरालेखविदों, रसायनज्ञों, सर्वेक्षणकर्ताओं और भू-भौतिकी विशेषज्ञों द्वारा एकत्र किए गए विभिन्न प्रकार के डेटा को एक समान तरीके से सहसंबंधित करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे थे। एएसआई ने कहा कि विभिन्न विशेषज्ञों और विभिन्न उपकरणों द्वारा विभिन्न रूपों में उत्पन्न जानकारी का समामेलन एक कठिन और धीमी प्रक्रिया है। रिपोर्ट को पूरा करने और उक्त सर्वेक्षण रिपोर्ट को अंतिम रूप से प्रस्तुत करने में कुछ और समय लगेगा। गौरतलब है कि वाराणसी जिला अदालत ने 21 जुलाई को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा ज्ञानवापी मस्जिद परिसर का 'वैज्ञानिक सर्वेक्षण' करने का आदेश दिया था। अदालत ने वजूखाना को छोड़कर ज्ञानवापी मस्जिद परिसर के सर्वेक्षण का आदेश दिया, जिसे पिछले साल वहां एक शिवलिंग जैसी संरचना पाए जाने के बाद बंद कर दिया था।

चक्रवाती तूफान 'माइचौंग मचाएगा तबाही, 30 नवबंर से 1 दिसंबर तक भारी बारिश का अनुमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने एक विकासशील मौसम प्रणाली के संबंध में चेतावनी जारी कर कहा कि बंगाल की दक्षिणपूर्व खाड़ी और उससे सटे दक्षिण अंडमान सागर के ऊपर कम दबाव का क्षेत्र अब एक अच्छी तरह से चिह्नित कम दबाव वाले क्षेत्र में बदल गया है। पूर्वानुमानकर्ताओं का अनुमान है कि सिस्टम के पश्चिम-उत्तर-पश्चिम दिशा में आगे बढ़ने की उम्मीद है, जो धीरे-धीरे 30 नवंबर तक दक्षिण-पूर्व बंगाल की खाड़ी पर एक दबाव में बदल जाएगा। अगले 48 घंटों के भीतर दक्षिण-पश्चिम और इससे सटे दक्षिणपूर्व बंगाल की खाड़ी के ऊपर एक चक्रवाती तूफान 'माइचौंग' के रूप में विकसित होगा और इसके अधिक मजबूत होने का अनुमान है। मौसम पूर्वानुमान एजेंसी निकोबार द्वीप समूह के अधिकांश स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश की उम्मीद कर रही है। 29 नवंबर से 1 दिसंबर के बीच भारी से बहुत भारी वर्षा की कुछ घटनाएं हो सकती हैं। अंडमान द्वीप समूह के अधिकांश स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है। वहीं 30 नवंबर को बहुत भारी बारिश होने की संभावना जाहिर की गई है।

आईएमडी के अनुसार 29 नवंबर को दक्षिण अंडमान सागर और आसपास के अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में 25 से 35 किमी प्रति घंटे से लेकर 45 किमी प्रति घंटे की रफ्तार तक तेज हवाएं चलने की उम्मीद है। बंगाल की दक्षिणपूर्वी खाड़ी में 30 नवंबर को 40 से 50 किमी प्रति घंटे से लेकर 60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तूफानी हवाएं चलने का अनुमान है। 1 दिसंबर को यह बढ़कर 50 से 60 किमी प्रति घंटे से लेकर 70 किमी प्रति घंटे तक पहुंचने की उम्मीद है। 2 दिसंबर को 60 से 70 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से बढ़कर 80 किमी प्रति घंटे होगी।

मछुआरों को सलाह दी गई है कि वे 29 और 30 नवंबर को दक्षिण अंडमान सागर में न जाएं और 30 नवंबर से 2 दिसंबर तक दक्षिण-पूर्व बंगाल की खाड़ी से बचें। वहीं ओडिशा सरकार ने दक्षिण अंडमान सागर के ऊपर कम

दबाव के क्षेत्र के बीच राज्य के सात तटीय जिलों को अलर्ट पर रखा है।

अमेरिकी सैन्य विमान जापान के याकुशिमा द्वीप के पास हुआ दुर्घटनाग्रस्त

वाशिंगटन । अमेरिकी सेना का एक वी-22 ऑस्प्रे विमान जापान के याकुशिमा द्वीप के पास समुद्र में दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें आठ लोग सवार थे। जापान के तट रक्षक के एक प्रवक्ता ने कहा कि जहाज पर मौजूद लोगों की सुरक्षा सहित घटना का कोई और विवरण नहीं है। घटना दोपहर 2.47 बजे (स्थानीय समयानुसार) हुई। स्थानीय लोगों ने बताया कि अमेरिकी सैन्य विमान के समुद्र में गिरते ही उसके बाएं इंजन से आग निकलने लगी। जापान में ऑस्प्रे की तैनाती विवादास्पद रही है, आलोचकों का कहना है कि हाइब्रिड विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने का खतरा है। अमेरिकी सेना और जापान का कहना है कि यह सुरक्षित है। इस तरह की एक घटना में, यूएस ऑस्प्रे अगस्त में एक नियमित सैन्य अभ्यास के दौरान सैनिकों को ले जाते समय उत्तरी ऑस्ट्रेलिया के तट पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें तीन अमेरिकी नौसैनिकों की मौत हो गई।

सीरिया के गोलान हाइट्स से हटे इजरायल : संरा

जिनेवा । संयुक्त राष्ट्र महासभा ने अपने प्रस्ताव को नवीनीकृत कर इजरायल से सीरिया के गोलान हाइट्स से हट जाने की अपील की है। इस प्रस्ताव के पक्ष में 91 वोट और विपक्ष में आठ मत पड़े, जबकि 62 अनुपस्थित रहे। प्रस्ताव में कहा गया है कि संरा के सदस्य देश 'बहुत चिंतित हैं कि इजरायल सीरियाई गोलान से पीछे नहीं हटा है, जो 1967 से इजरायल के कब्जे में है। प्रस्ताव में 1967 से कब्जे वाले सीरियाई गोलान में इजरायली बस्ती निर्माण और अन्य गतिविधियों को अवैध करार दिया गया है।

रूस से लगती पूरी सीमा को बंद करेगा फिनलैंड

हेल्सिंकी। फिनलैंड के प्रधानमंत्री पेटेरी ओर्पो ने कहा है कि प्रवासन संबंधी चिंताओं के कारण रूस के साथ लगती देश की पूरी सीमा को बंद किया जाएगा। मध्य पूर्व और अफ्रीका से प्रवासियों के आगमन में वृद्धि के कारण सरकार द्वारा सात अन्य जांच चौकियों को बंद करने के बाद फिनलैंड में केवल एक जांच चौकी खुली है। फिनलैंड ने रूस पर प्रवासियों को उसके देश की सीमा की ओर भेजने का आरोप लगाया है।

प्लैटिनम खदान में लिफ्ट गिरने से 11 श्रमिकों की मौत

रस्टेनबर्ग । दक्षिण अफ्रीका में एक प्लैटिनम खदान में श्रमिकों को सतह पर ले जाते समय एक लिफ्ट अचानक 200 मीटर (लगभग) नीचे गिर गई, जिसमें 11 श्रमिकों की मौत तथा 75 श्रमिक घायल हो गए। खदान संचालक ने बताया कि घायलों में 14 की हालत गंभीर है। संचालक के मुताबिक यह घटना उत्तरी शहर रस्टेनबर्ग की एक खदान में हुआ। सभी श्रमिक काम खत्म कर सतह पर आ रहे थे। उन्होंने बताया कि घायलों को अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। खदान संचालक इम्पाला प्लैटिनम होल्डिंग्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) निको मुलर ने कहा कि यह इम्प्लाट्स के इतिहास का सबसे काला दिन था। उन्होंने कहा कि लिफ्ट किस वजह से गिरी इसकी जांच शुरू कर दी गई है। खदान में मंगलवार को सभी परिचालन निलंबित कर दिए गए। खनिज संसाधन और ऊर्जा मंत्री ग्वेद मंताशे ने कहा कि त्रासदी की सरकारी जांच होगी।उन्होंने खदान का भी दौरा किया।

हमास के न्यौते पर एलन मस्क ने कहा, अभी गाजा आना खतरनाक

वॉशिंगटन । हमास के साथ युद्ध के बीच इजरायल पहुंचे दुनिया के सबसे अमीर कारोबारी और टेस्ला मोटर्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) एलन मस्क का दौरा पहले ही चर्चा का मुद्दा बना हुआ था। उन्होंने प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से भी मुलाकात की थी। अब उन्होंने इन हालात में गाजा जाने को खतरनाक बताया है। खबरें थीं कि मस्क को हमास के एक नेता ने गाजा का दौरा करने का भी न्यौता दिया था। मस्क ने कहा है कि वर्तमान में गाजा पट्टी का दौरा करना खतरनाक है। मस्क ने ये बातें हमास के एक प्रतिनिधि की ओर से उन्हें गाजा आने का निमंत्रण दिए जाने के मुद्दे पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कही। उन्होंने लिखा, अभी वहां स्थिति थोड़ी खतरनाक लग रही है, लेकिन मेरा मानना है कि दीर्घकालिक समृद्ध गाजा सभी पक्षों के लिए अच्छा है। दरअसल अमेरिका की वित्तीय, सॉफ्टवेयर, डेटा एवं मीडिया कंपनी ब्लूमबर्ग ने सोशल मीडिया में कहा था कि हमास के एक प्रतिनिधि ने मस्क को गाजा का दौरा करने और इजरायली बमबारी के कारण हुए विनाश को देखने के लिए आमंत्रित किया है। मस्क ने पिछले सप्ताह कहा था कि उनका नेटवर्क गाजा पट्टी में संघर्ष से संबंधित सामग्री से हुई अपनी सारी आय इजरायली अस्पतालों और फिलिस्तीनियों को चिकित्सा सहायता प्रदान करने वाले एक अंतरराष्ट्रीय मानवतावादी संगठन को दान करेगा।

बांग्लादेश की खूबसूरत एक्ट्रेस माहिया माही भी लडेंगी चुनाव

ढाका । बांग्लादेश की खूबसूरत एक्ट्रेस माहिया माही भी इस बार आम चुनाव में किस्मत आजमाने जा रही हैं। मिली जानकारी के अनुसार इस बार शर्मिन अख्तर निपा उर्फ माहिया माही चपैनवाबगंज -2 निर्वाचन क्षेत्र से ?टिकिट की दावेदारी कर रही हैं। बांग्लादेश की बंगबंधु सांस्कृतिक जोटे के महासचिव और धालीवुड अभिनेत्री शर्मिन अख्तर निपा उर्फ माहिया माही ने अपना नामांकन फॉर्म जमा किया है। अभिनेत्री शर्मिन अख्तर निपा उर्फ माहिया माही ने सोमवार (20 नवंबर) की दोपहर को बंगबंधु एवेन्यू स्थित एएल केंद्रीय कार्यालय में अपना फॉर्म जमा किया। माहिया माही ने शनिवार को ही चपैनवाबगंज-2 निर्वाचन क्षेत्र के लिए अवामी लीग का नामांकन फॉर्म हासिल किया था। गौरतलब है ?कि माहिया माही का जन्म बांग्लादेश के चपैनवाबगंज निर्वाचन क्षेत्र में ही हुआ था। उन्होंने फेसबुक पोस्ट के जरिए फॉर्म जमा करने की जानकारी दी थी। इस साल की शुरुआत में माही ने चपैनवाबगंज-2 निर्वाचन क्षेत्र से उपचुनाव में भाग लेने के लिए सत्तारूढ़ दल आवामी पार्टी का नामांकन फॉर्म खरीदा था। हालांकि, वह नामांकन पाने में असफल रही थी। फिलहाल माहिया माही के अलावा फिरदौस, शकील खान, ज्योतिका ज्योति, तरीन जहां और रोकेया प्राची सहित कई लोकप्रिय हस्तियों ने भी 7 जनवरी को आगामी राष्ट्रीय चुनाव में भाग लेने में रुचि व्यक्त की है। माहिया माही बांग्लादेश की जानी मानी कलाकार है। ये अपनी म्यूजिक वीडियो के लिए भी खासी मशहूर हैं। बांग्लादेश के राजशाही परिवार में माहिया माही का जन्म हुआ था। उन्होंने साल 2012 में अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की थी।

99 फीसदी से अधिक संपत्ति दान करेंगे वॉरेन बफेट

लंदन । सबसे सफल निवेशकों में से एक वॉरेन बफेट 9वें सबसे अमीर व्यक्ति हैं। बफेट मौत के बाद 99ब से अधिक संपत्ति दान कर देंगे। रिपोर्ट के अनुसार, मल्टीनेशनल कार्पोरेशन की वेबसाइट पर पोस्ट किए गए एक पत्र द ओरेकल ऑफ ओमाहा ने घोषणा की और कहा कि उन्होंने बर्कशायर हैथवे में लाखों शेयर चार चैरिटी ट्रस्टों को दिए हैं। ब्लूमबर्ग बिलेनियर इंडेक्स के मुताबिक अभी बफेट के पास 121 अरब डॉलर का नेटवर्क है। नियामक फाइलिंग के अनुसार 93 वर्षीय अरबपति बफेट ने 1,600 क्लास ए शेयरों को 2,400,000 क्लास बी शेयरों में बदल दिया। उन शेयरों में से हॉवर्ड जी. बफेट फाउंडेशन, शेरवुड फाउंडेशन और नोवो फाउंडेशन प्रत्येक को 300,000 शेयर मिले, जबकि सुसान थॉम्पसन बफेट फाउंडेशन को 1,500,000 शेयर प्राप्त हुए।

21 नवंबर को शेयरधारकों को लिखे पत्र में उन्होंने कहा, ऊपर दिया गया दान पिछले साल थैंक्सगिविंग में दिए गए दान को दोहराता है। वे 2006 में मेरे द्वारा की गई कुछ आजीवन प्रतिज्ञाओं के पूरक हैं और जो मेरी मृत्यु तक जारी रहेंगे। मुझे पूरा एहसास है कि मैं अतिरिक्त पारियों में खेल रहा हूं।उन्होंने कहा है, हमें यह देखने के कई अवसर मिले हैं कि अमीर होना जरूरी नहीं है। या तो आप बुद्धिमान हैं या दुष्ट। हम इस बात से भी सहमत हैं कि पूंजीवाद ने अद्भुत काम किया है और चमत्कार करना जारी रखा है। चाहे उसकी जो भी कमजोरियां हों, जिसमें धन और राजनीतिक प्रभाव में भारी असमानताएं शामिल हैं, जो वह अपने नागरिकों को कुछ हद तक मनमौजी तरीके से प्रदान करता है ।

वैंकूवर, ब्रिटिश कोलंबिया, कनाडा में वैंकूवर एक्वेरियम में सांता क्लॉज़ की पोशाक पहने एक गोताखोर आगंतुकों का हाथ हिलाकर अभिवादन करता हुआ।

कोरोना का पैदाइशी राज खोलने वैज्ञानिकों को मिला नया बैट वायरस

बीजिंग । कोरोना वायरस को वुहान लैब की देन बताने के बाद वैज्ञानिकों का नया शोध सामने आया है। वैज्ञानिकों ने नए बैट वायरस की खोज कर ली है। दरअसल कोविड-19 जैसे ही खास म्यूटेशन वाले एक नए जंगली कोरोना वायरस की खोज की गई है, जिसे कुछ वैज्ञानिकों द्वारा इस बात का सबूत माना जा रहा है कि सार्स-सीओवी-2 किसी लैब में नहीं बनाया गया था। चीन में शोधकर्ताओं ने एक और चमगादड़ कोरोना वायरस खोजा है जिसमें फ्यूरिन क्लीवेज साइट होती है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह वह हिस्सा है जिसने लोगों को संक्रमित करने में कोविड-19 को संक्रामक बना दिया है। गौरतलब है कि कोविड-19 की उत्पत्ति के बारे में बहस के दौरान फ्यूरिन एक अहम मुद्दा रहा है। कुछ विशेषज्ञों का दावा है कि इसे केवल प्रयोगशाला में प्रयोगों के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। तब से, अध्ययनों से पता चला है कि जंगली कोरोना वायरस स्वाभाविक रूप से संरचना प्राप्त कर सकते हैं।

नए खोजे गए वायरस में एक और संयोगात्मक विचित्रता है। यह वायरस 98 प्रतिशत तक पैंगोलिन में पाए जाने वाले कोरोना वायरस के समान है, जिस जानवर पर लंबे समय से मनुष्यों में कोविड-19 फैलाने का संदेह था। तथाकथित 'लैब लीक थ्योरी' के आलोचकों ने इस खोज को इस अवधारणा के प्रमाण के रूप में रखा है कि कोविड-19 जैसे वायरस जंगल में पनपते हैं और प्रजातियों के बीच से गुजरते हैं। इस पर शीर्ष डेनिश संक्रामक रोग विशेषज्ञ डॉ. क्रिस्टियन एंडरसन ने एक्स पर नया अध्ययन साझा किया, जहां उन्होंने लिखा कि समय के साथ इस मामले में विज्ञान और मजबूत होता जाएगा।' हालांकि यह स्वीकार करने के बावजूद कि लैब लीक की 'अत्यधिक संभावना' थी, डॉ. एंडरसन ने सार्वजनिक रूप से इस सिद्धांत की निंदा की है।

खालिस्तानी गुरपतवंत सिंह पन्नून केस में अमेरिकी चिंताओं की जांच के लिए बनी हाई लेवल कमेटी, एमईए ने दी जानकारी

वाशिंगटन (एजेंसी)। विदेश मंत्रालय (एमईए) के एक बयान में कहा गया है कि हाल ही में द्विपक्षीय बैठक के दौरान अमेरिका द्वारा अपराधियों, आतंकवादियों, बंदूक चलाने वालों और अन्य लोगों के बीच सांठगांठ के बारे में सुरक्षा चिंताओं पर इनपुट साझा करने के बाद भारत ने एक उच्च स्तरीय जांच पैनल का गठन किया है। बयान में कहा गया है, 'भारत सरकार जांच समिति के निष्कर्षों के आधार पर आवश्यक अनुवर्ती कार्रवाई करेगी।'

यह बात फाइनेंशियल टाइम्स की उस रिपोर्ट के कुछ दिन बाद आई है, जिसमें अज्ञात अधिकारियों के हवाले से कहा गया था कि अमेरिका ने देश की धरती पर खालिस्तानी आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नून को मारने की साजिश को नाकाम कर दिया है। यूके स्थित अखबार ने यह भी बताया था कि अमेरिकी सरकार ने इस चिंता पर भारत को 'चेतावनी' जारी की थी कि नई दिल्ली पन्नून को खत्म करने की 'साजिश में शामिल' थी।

एक अमेरिकी और कनाडाई नागरिक, पन्नून अमेरिका स्थित सिख फॉर जस्टिस का नेता है - जिसे भारत ने एक आतंकवादी संगठन के रूप में नामित किया है। अखबार ने पन्नून के हवाले से यह कहने से इनकार कर दिया कि क्या अमेरिकी अधिकारियों ने उन्हें कथित हत्या की साजिश के बारे में चेतावनी दी थी, उन्होंने कहा कि वह 'अमेरिकी सरकार को भारतीय गुर्गों से अमेरिकी धरती पर मेरे जीवन को खतरे के मुद्दे पर जवाब देने देंगे'।

पिछले सप्ताह, विदेश मंत्रालय ने सांठगांठ के बारे में भारत को अमेरिका से प्राप्त 'इनपुट' के बारे में बात की थी। प्रवक्ता अरिंदम बागची ने उस समय कहा था कि इनपुट दोनों देशों के लिए चिंता का कारण थे और उन्होंने 'आवश्यक अनुवर्ती कार्रवाई करने का निर्णय लिया'। हालाँकि, विदेश मंत्रालय ने पन्नून या फाइनेंशियल टाइम्स की रिपोर्ट का कोई उल्लेख नहीं किया।

बागची ने कहा, 'अपनी ओर से, भारत ऐसे इनपुट को गंभीरता से लेता है क्योंकि यह हमारे अपने राष्ट्रीय सुरक्षा हितों पर भी असर डालता है। अमेरिकी इनपुट के संदर्भ में मुद्दों की पहले से ही संबंधित विभागों द्वारा जांच की जा रही है।' बाद में, व्हाइट हाउस के प्रवक्ता एड्रिएन वॉटसन ने कहा कि गुरपतवंत सिंह पन्नून की हत्या की साजिश में उसकी कथित संलिप्तता के बारे में जानने के बाद भारत ने 'आश्चर्य और चिंता' व्यक्त की। भारत ने कहा कि इस प्रकृति की गतिविधि 'उनकी नीति नहीं' थी।

वॉटसन ने कहा, 'हम समझते हैं कि भारत सरकार इस मुद्दे की आगे जांच कर रही है और आने वाले दिनों में इसके बारे में और कुछ कहना होगा। हमने अपनी अपेक्षा व्यक्त की है कि जो भी जिम्मेदार समझा जाए उसे जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए।' व्हाइट हाउस के प्रवक्ता ने कहा कि अमेरिकी सरकार ने इस मामले को वरिष्ठतम स्तर पर भारत सरकार के समक्ष उठाया है और इसे 'अत्यंत गंभीरता' के साथ लिया जा रहा है।

फाइनेंशियल टाइम्स की रिपोर्ट तब आई है जब पन्नून ने इस महीने की शुरुआत में सिखों से 19 नवंबर और उसके बाद एयर इंडिया के विमानों से उड़ान नहीं भरने को कहा था और दावा किया था कि उनकी जान को खतरा है। उन्होंने यह भी धमकी दी कि एयरलाइन को वैश्विक स्तर पर परिचालन की अनुमति नहीं दी जाएगी।

यह रिपोर्ट कनाडा के प्रधान मंत्री जस्टिन ट्रूडो द्वारा आरोप लगाए जाने के बाद भारत और कनाडा के बीच राजनयिक तनाव के बीच आई है कि इस साल जून में कनाडा में खालिस्तानी आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारत सरकार से जुड़े एजेंट शामिल थे। पन्नुन, निज्जर जैसे खालिस्तान समर्थक को कनाडा के सरे में अज्ञात लोगों ने गोली मार दी। भारत ने ट्रूडो के आरोपों का दृढ़ता से खंडन किया है और इस मामले के कारण दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंध अब तक के सबसे निचले स्तर पर आ गए हैं।

ब्रिक्स की सदस्यता के लिए कई देश कतार में, लेकिन अर्जेंटीना ने किया इनकार

वाशिंगटन (एजेंसी)। एक ओर जहां ब्रिक्स की सदस्यता के लिए कई देश कतार में हैं, लेकिन अर्जेंटीना ने इसमें शामिल होने से ही इंकार कर दिया। जानकारी के अनुसार दक्षिण अमेरिकी देश अर्जेंटीना के नए राष्ट्रपति जेवियर मिलेई ने ब्रिक्स देशों में शामिल होने के फैसले से इनकार कर दिया है। इसी साल अगस्त में ब्रिक्स देशों ने ब्रिक्स प्लस के तर्ज पर कई देशों को ग्रुप का सदस्य बनने का न्योता दिया था। ब्रिक्स प्लस में जिन देशों को शामिल किया गया था उनमें अर्जेंटीना, मिस्र, इथियोपिया, ईरान, सऊदी अरब और यूएई शामिल हैं। सभी देशों को जनवरी में आधिकारिक तौर पर ब्रिक्स की सदस्यता दी जानी थी लेकिन इससे पहले ही अर्जेंटीना ने ब्रिक्स में शामिल होने के फैसले से हाथ खींच लिया है। अगस्त में जब अर्जेंटीना को इस समूह में जुड़ने का न्योता दिया गया था तब तत्कालीन राष्ट्रपति अल्बर्टो फर्नांडीज ने इसे अर्जेंटीना के लिए नया मौका बताया था। उस वक्त उन्होंने कहा था कि देश आर्थिक संकट और महंगाई से जूझ रहा है, इसलिए ब्रिक्स में शामिल होने के बाद देश की अर्थव्यवस्था में सुधार आएगा।

इसके बाद अब नए राष्ट्रपति जेवियर मिलेई ब्रिक्स में शामिल होने से इनकार कर रहे हैं। जेवियर मिलेई ने अपने चुनावी कैंपेन के दौरान लोगों से वादा किया था कि वह अगर राष्ट्रपति चुने जाते हैं तो वह अर्जेंटीना को ब्रिक्स में शामिल नहीं होने देंगे। उन्होंने चुनावी कैंपेन के दौरान कहा था कि वे किसी कम्यूनिस्ट देश के साथ आर्थिक संबंध नहीं रखेंगे। इसके अलावा उन्होंने कहा था कि वे चीन से संबंध तोड़ लेंगे। साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट के मुताबिक, मिलेई ने चीन पर उनके प्रतिद्वंदी सर्गियो मासा के पक्ष यू-ट्यूब ऐड चलाने का आरोप लगाया था।

बता दें कि फिलहाल ब्रिक्स में ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका शामिल हैं। इस समूह को चीनी दबदबे वाला समूह माना जाता है। लेकिन अगर अर्जेंटीना अचानक से इस समूह में शामिल होने से पीछे हट जाता है तो वैश्विक स्तर पर चीन के प्रभाव पर सवाल उठेंगे। लेकिन अर्जेंटीना को ब्रिक्स में कोई फायदा नहीं दिख रहा है। जेवियर मिलेई की विदेश मामलों की प्रमुख सलाहकार ने मीडिया से कहा कि हमें समूह के शामिल होने के पीछे कोई हित नहीं दिख रहा है। भविष्य में हमें लगेगा तो हम जरूर सोचेंगे।

पुतिन के खिलाफ सड़कों पर उतरीं सैनिक परिवारों की महिलाएं

-युद्ध की जगह शांति की दोहराई मांग, बच्चों को यूक्रेन से वापस बुलाने पर अड़ीं

मास्को (एजेंसी)। रूस में सैनिक परिवारों की महिलाओं ने राष्ट्रपति पुतिन के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। इन दिनों सैनिकों के परिजनों का गुस्सा सातवें आसमान पर है। महिलाएं अपने बच्चों को यूक्रेन से वापस बुलाने की मांग कर ही हैं। यूक्रेन पर रूस के हमले के एक साल 9 महीने का वक्त गुजर चुका है, लेकिन जंग का कोई समाधान नहीं निकला है। हजारों रूसी सैनिक अभी भी यूक्रेन में जंग लड़ रहे हैं।रूस की राजधानी मॉस्को में बड़ी संख्या में रूसी सैनिकों के परिवार के लोगों ने विरोध प्रदर्शन कर कहा है कि उनके बेटे और पति वापस चाहिए। इन दिनों सोशल मीडिया पर विरोध प्रदर्शन के तमाम वीडियो सामने आ रहे हैं। इनमें रूस में जंग लड़ रहे सैनिकों की माताओं, बहनों, बेटियों और पत्नियों ने हिस्सा लेकर नारेबाजी की है। महिलाओं की मांग है कि अब पुतिन को अपना वादा निभाना चाहिए। एक साल पहले घर छोड़कर गए सैनिकों की पत्नियों का कहना है कि उन्हें युद्ध नहीं शांति चाहिए। जल्द से उनकी वतन वापसी कराई जाए। युद्ध के खिलाफ आंदोलन कर रहीं महिलाओं ने एक वीडियो संदेश में कहा कि हमें शांति चाहिए। यूक्रेन में लड़ने के लिए एक साल पहले गए सैनिकों को अब घर वापस लाना चाहिए। वे ऐसा क्यों नहीं कर रहे हैं? हमारी सेना आज भले ही दुनिया की सबसे अच्छी सेना बन गई हो, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इस सेना को अंतिम सैनिक तक वहीं रहना चाहिए।

पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को मिली बड़ी राहत, कोर्ट ने भ्रष्टाचार के दो मामलों में किया बरी

इस्लामाबाद (एजेंसी)। इस्लामाबाद उच्च न्यायालय ने बुधवार को पाकिस्तान के पूर्व प्रधान मंत्री नवाज शरीफ को भ्रष्टाचार के दो मामलों से बरी कर दिया, जिसमें उन्हें 2018 में दोषी ठहराया गया था। मामले में दोषी ठहराए जाने के खिलाफ नवाज की अपील पर आईएचसी के मुख्य न्यायाधीश आमिर फारूक और न्यायमूर्ति मियांगुल हसन औरंगजेब की दो सदस्यीय पीठ ने फैसला सुनाया। जुलाई 2018 में, एक जवाबदेही अदालत ने पीएमएल-एन नेता को एवेनफील्ड संपत्तियों के भ्रष्टाचार संदर्भ में ज्ञात आय से अधिक संपत्ति रखने के लिए 10 साल की जेल और राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) के साथ सहयोग न करने के लिए एक वर्ष की सज़ा, दोनों की सज़ा एक साथ दी जानी थी।

ये मामले राष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी निगरानी संस्था, राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) द्वारा दायर किए गए थे। उन्होंने दोनों दोषसिद्धि के खिलाफ

अपील दायर की थी। शरीफ 2019 में लंदन गए और वापस नहीं लौट सके और आईएचसी द्वारा दिसंबर 2020 में दोनों मामलों में उन्हें घोषित अपराधी घोषित कर दिया गया। वह लगभग चार साल के आत्म-निर्वासन के बाद पिछले महीने वापस आए और उनकी अपीलें फिर से शुरू हो गईं। यूके से लौटने के बाद, पीएमएल-एन नेता ने अपनी दोषसिद्धि के खिलाफ अपनी अपील की बहाली की मांग करते हुए एक आवेदन दायर किया था। उन्होंने दलील दी थी कि जब वह चिकित्सा उपचार के लिए विदेश में थे, तब लंबित अपीलें अभियोजन न चलाने के कारण खारिज कर दी गई थीं।

याचिका में अदालत से अनुरोध किया गया कि उन पर गुण-दोष के आधार पर निर्णय के लिए लंबित अपील को पुनर्जीवित किया जाए। पिछले महीने, द्वाष्ट ने विचाराधीन अपील को बहाल कर दिया था। आज कोर्ट ने जवाबदेही अदालत के फैसले को खारिज कर दिया और नवाज की अपील स्वीकार कर ली। सुनवाई के बाद पत्रकारों से बात करते हुए, पीएमएल-एन सुप्रीमो ने कहा- ÷मैं अल्लह का शुक्रिया अदा करता हूं क्योंकि मैंने पूरा मामला उन पर छोड़ दिया था। उसने आज हमें विजयी बनाया है।÷ एक्स पर एक पोस्ट में, मरियम नवाज ने कहा कि आज के फैसले से पता चलता है कि भगवान ने उन लोगों को कैसे सही ठहराया जिन्होंने उन पर अपना अटूट भरोसा रखा।

सुअरों में फैलने वाला स्वाइन फ्लू पहली बार इंसान में मिला

लंदन (एजेंसी)। यूके हेल्थ सिक्योरिटी एजेंसी (यूकेएचएसए) का कहना है कि ब्रिटेन में पहली बार किसी इंसान में स्वाइन फ्लू के स्ट्रेन का पता चला है। यह शख्स सांस लेने में दिक्कत की वजह से टेस्ट के लिए आया था। जांच में शख्स में स्वाइन फ्लू के स्ट्रेन एच1एन2 का पता चला। यह सूअरों में फैलने वाला वायरस है लेकिन इंसान में इस स्ट्रेन के पाए जाने का पहला मामला सामने आया है। हालांकि, अब यह शख्स पूरी तरह से ठीक हो गया है लेकिन उसे मॉनिटर किया जा रहा है।

यूकेएचएसए की इंसिडेंट डायरेक्टर डॉ. मीरा चंद ने कहा कि यह पहली बार है, जब हमें ब्रिटेन में किसी इंसान में इस वायरस का पता चला है। यह सूअरों में पाए जाने वाले वायरस से मिलता-जुलता है। उन्होंने कहा कि हम तय प्रोटोकॉल के तहत यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि शख्स को यह इंफेक्शन कैसे हुआ? यूकेएचएसए की मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी क्रिस्टीन मिडलमिस ने बताया कि हम जानते हैं कि जानवरों की कुछ बीमारियां इंसानों को भी हो सकती हैं। हम विभिन्न विभागों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। हमने सूअर पालकों को भी आदेश जारी किए हैं कि अगर उनके यहां किसी सूअर को फ्लू है तो वह जल्द जानकारी दें।

एक्सपर्ट्स का कहना है कि आमतौर पर सूअरों में फैलने वाला इन्फ्लूएंजा वायरस जब किसी इंसान में पाया जाता है, तो इसे वेरिएंट इन्फ्लूएंजा वायरस कहते हैं. एच1एन1, एच1एन2 और एच3एन2 सूअरों में पाए जाने वाले वायरस के प्रमुख प्रकार हैं, जिससे इंसान भी संक्रमित हो सकते हैं। स्वाइन फ्लू एक संक्रामक सांस की बीमारी है, जो सामान्य तौर पर सूअरों में होती है, ये स्वाइन इन्फ्लूएंजा ए वायरस के एच1एन1 स्ट्रेंस के कारण होती है. हालांकि एच1एन2, एच3एन1 और एच 3 एन 2 के रूप में अन्य स्ट्रेंस भी सूअरों में मौजूद रहते हैं।

यूकेएचएसए में इंसीडेंट डायरेक्टर डॉ मीरा चंद ने कहा, यह पहली बार है जब हमने यूके में मनुष्यों में इस वायरस का पता लगाया है, हालांकि यह सूअरों में पाए गए वायरस के समान है। हम करीबी संपर्कों का पता लगाने और किसी भी संभावित प्रसार को कम करने के लिए तेजी से काम कर रहे हैं। मरीज को इसका संक्रमण कैसे हुआ, इसकी भी जांच की जा रही है। साथ ही यह भी पता लगाया जा रहा है कि क्या इससे जुड़े या संबंधित और भी मामले हैं। भारतीय मूल के माइक्रोबायोलॉजिस्ट ने इस बात पर जोर दिया कि नियमित फ्लू निगरानी और जीनोम सीक्वेंसिंग से इन्फ्लुएंजा ए (एच1एन2) वी नाम के नए वायरस स्ट्रेन का पता चला। मौजूदा दौर में यह ब्रिटेन में सूअरों में फैल रहे फ्लू वायरस के जैसा है।

यूकेएचएसए की मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी क्रिस्टीन मिडलमिस ने कहा, हम जानते हैं कि जानवरों की कुछ बीमारियाँ मनुष्यों में स्थानांतरित हो सकती हैं - यही कारण है कि पशु

स्वास्थ्य, कल्याण और जैव सुरक्षा के हाई स्टैंडर्ड इतने महत्वपूर्ण हैं।सुअर पालने वालों को भी अपने झुंड में स्वाइन फ्लू के किसी भी संदेह की सूचना तुरंत अपने स्थानीय पशु चिकित्सक को देनी होगी। , इसके साथ ही यह भी सलाह है कि किसी भी श्वसन लक्षण वाले लोगों को मौजूदा दिशानिर्देशों का पालन करना जारी रखना चाहिए। लक्षण बने रहने पर अन्य लोगों के संपर्क से दूर रहना जरूरी है। बुजुर्गों और बीमारों को लेकर इसका खास ख्याल रखना है।

यूकेएचएसए स्थिति की बारीकी से निगरानी कर रहा है और उत्तरी यॉर्कशायर के कुछ हिस्सों में जीपी सर्जरी और अस्पतालों से जुड़े मौजूदा कार्यक्रमों के भीतर निगरानी बढ़ाने के लिए कदम उठा रहा है। मामलों का पता लगाने और ट्रांसमिशन के मूल्यांकन में सहायता के लिए, जिन लोगों से संपर्क किया जाता है और परीक्षण करने के लिए कहा जाता है, उन्हें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है विशेषज्ञों के अनुसार, आमतौर पर सूअरों में फैलने वाला इन्फ्लूएंजा वायरस जब किसी व्यक्ति में पाया जाता है, तो इसे वेरिएंट इन्फ्लूएंजा वायरस कहा जाता है।

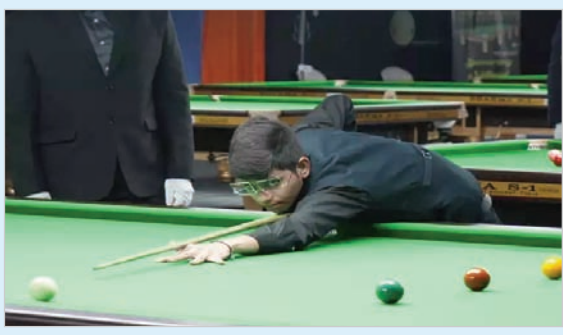

जूनियर लड़कों के स्नूकर ताज के लिए दुग्गल और गर्ग में भिड़ंत

चेन्नई,

पिछले हफ्ते जूनियर लड़कों के बिलियर्ड्स का खिताब जीतने वाले चंडीगढ़ के रणवीर दुग्गल 'डबल' स्कोर से एक कदम दूर हैं क्योंकि वह यहां नेहरू इंडोर स्टेडियम में चल रही 90वीं राष्ट्रीय बिलियर्ड्स और स्नूकर चैंपियनशिप 2023 में जूनियर लड़कों के स्नूकर फाइनल में पहुंच गए हैं। पिछले साल जूनियर स्नूकर में उपविजेता रहे दुग्गल खिताब के लिए गुजरात के मयूर गर्ग से भिड़ेंगे। गर्ग ने मौजूदा चैंपियनशिप में सब-जूनियर लड़कों के बिलियर्ड्स का खिताब जीता और सब-जूनियर लड़कों के स्नूकर में उपविजेता रहे। दोनों ने अपने-अपने सेमीफाइनल में कड़ी टक्कर के बाद 4-3 से जीत दर्ज की। दुग्गल ने महेंद्र चौहान (एमपी) को हराया और गर्ग ने कामरान मस्जिद को हराया।

बीसीसीआई ने मुख्य कोच द्रविड़ सहित सहयोगी स्टॉफ का अनुबंध बढ़ाया

मुंबई ।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ और उनके सहयोगी स्टाफ का अनुबंध बढ़ा दिया है। कुछ घंटों पहले ही टीम के मुख्य कोच के रूप में बने रहने के लिए द्रविड़ को अनुबंध विस्तार की पेशकश की गई थी। द्रविड़ के साथ ही सहायक कोचों विक्रम राठौड़ (बल्लेबाजी कोच), पारस म्हाम्ब्रे (गेंदबाजी कोच) और टी दिलीप (क्षेत्ररक्षण कोच) को बरकरार रखा गया है। पिछले सप्ताह बीसीसीआई ने द्रविड़ से संपर्क किया था, जिसमें कार्यकाल विस्तार की संभावना खुली थी। अभी इसकी पुष्टि हो गई है, कि द्रविड़ ने यह प्रस्ताव स्वीकार किया है। बीसीसीआई द्वारा द्रविड़ के साथ बने रहने का एक प्रमुख कारण टीम में उस संरचना और माहौल में निरंतरता बनाए रखना है जिसे उन्होंने पिछले दो वर्षों में स्थापित किया है, जो नए कोच की नियुक्ति के साथ बाधित हो सकती थी।

द्रविड़ के दूसरे कार्यकाल में उनका पहला काम 10 दिसंबर से दक्षिण अफ्रीका का दौरा होगा, जिसमें तीन वनडे और टी20 और दो टेस्ट खेलने हैं, जो 26 दिसंबर से शुरू होगा। इसके बाद जून में वेस्टइंडीज/यूएसए में आईसीसी टी20 विश्व कप से पहले घरेलू मैदान पर इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज होगी। गौर हो कि 2021 में निराशाजनक आईसीसी टी20 विश्व कप अभियान के बाद द्रविड़ ने रवि शास्त्री की जगह ली जिसके कारण भारत सुपर 12 चरण से बाहर हो गया। उन्हें 2 साल के कार्यकाल के लिए नियुक्त किया गया था, जो हाल ही में घरेलू मैदान पर संपन्न आईसीसी क्रिकेट विश्व कप में भारत के उपविजेता रहने के साथ समाप्त हुआ। जून में आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप में ऑस्ट्रेलिया से हारकर आईसीसी टूर्नामेंट में द्रविड़ के नेतृत्व में यह संयुक्त रूप से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। इसके पहले उन्होंने ऑस्ट्रेलिया में आईसीसी टी20 विश्व कप 2022 के सेमीफाइनल में इंग्लैंड से दस विकेट से हार दर्ज की थी। विश्व कप फाइनल में ऑस्ट्रेलिया से

भारत की हार के बाद द्रविड़ ने कहा कि उन्हें सभी प्रारूपों में भारत की शीर्ष रैंकिंग पर गर्व है, हालांकि इसके लिए आईसीसी ट्रॉफी नहीं होना निराशाजनक था। मुख्य कोच बने रहने पर द्रविड़ ने कहा कि उन्होंने इस पर फैसला नहीं किया है क्योंकि वह विश्व कप की तैयारियों में व्यस्त थे।

गुजरात के लिए शुभमन गिल कर चुके रनों की बौछार, तभी मिली है कप्तानी

नई दिल्ली ।

रनों की लगातार बौछार करने के कारण ही शुभमन गिल को इतना बढ़िया मुकाम हो सिल हुआ है कि आज वे हो दिक की जगह पर गुजरात टीम की कप्तानी कर रहे हैं। बता दें कि आईपीएल 2022 विजेता गुजरात टाइटंस ने आईपीएल 2024 सीजन से पहले शुभमन गिल को टीम का कप्तान बनाया है। दाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज गिल ने हार्दिक पांड्या की जगह ली है, जिन्हें मुंबई इंडियंस में ट्रेड किया गया है। आईपीएल 2024 में गुजरात की कप्तानी करना सीनियर पुरुष क्रिकेट में कप्तान के रूप में गिल का पहला सीजन होगा। गिल ने फ्रेंचाइजी द्वारा जारी एक बयान में कहा कि मुझे गुजरात टाइटंस की कप्तानी संभालने पर खुशी और गर्व है। टीम ने मुझ पर भरोसा दिखाया जिसके लिए मैं फ्रेंचाइजी को धन्यवाद देता हूं।

हमारे पिछले दोनों सीजन शानदार रहे और मैं टीम का नेतृत्व करने के लिए उत्सुक हूं। जीटी के साथ अपने पहले सीजन में गिल ने 16 मैचों में 34।50 के औसत और 132.33 के स्ट्राइक-रेट से 483 रन बनाए, जिसमें चार अर्धशतक शामिल थे। बता दें कि गिल आईपीएल 2023 में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज थे। गिल ने 17 मैचों में 59।33 की औसत और 157।80 के स्ट्राइक-रेट से 890 रन बनाए, जिसमें तीन शतक और चार अर्द्धशतक शामिल थे। जीटी के क्रिकेट निदेशक विक्रम सोलंकी ने कहा कि शुभमन गिल ने पिछले दो वर्षों में दमदार खेल से प्रभावित किया है। हमने उन्हें न केवल एक बल्लेबाज के रूप में बल्कि क्रिकेट में एक लीडर के रूप में भी परिपक्व होते देखा है। मैदान पर उनके योगदान ने गुजरात टाइटंस को एक मजबूत ताकत के रूप में उभरने में मदद की है। जिसने 2022 में एक सफल अभियान और 2023 में एक मजबूत प्रदर्शन के माध्यम से टीम का मार्गदर्शन किया है। उनकी परिपक्वता और कौशल उनके ऑन-फील्ड प्रदर्शन में पूरी तरह से स्पष्ट है।

तेंदुलकर की मानें तो विराट कोहली 2027 का भी वनडे वर्ल्ड कप खेलेंगे

-35 साल के कोहली 50 शतक पूरे करने वाले दुनिया के पहले बल्लेबाज बने

नई दिल्ली ।

विराट कोहली के खेल को देखते हुए उन्हें 2027 का वर्ल्ड कप भी खेलना चो हिए। पूर्व भारतीय दिग्गज सचिन तेंदुलकर ने कुछ इसी तरह के संकेत दिए हैं। उनका कहना है कि विराट ने वर्ल्ड कप 2023 में कमाल का प्रदर्शन किया। उन्होंने 3 शतक के दम पर 700 से अधिक रन बनाए और प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट भी बने। वे वर्ल्ड कप के एक सीजन में 700 या उससे अधिक रन बनाने वाले पहले खिलाड़ी हैं। हालांकि वर्ल्ड कप के फाइनल में टीम इंडिया को ऑस्ट्रेलिया से 6 विकेट से हार मिली। कोहली भले ही 35 साल के हो गए हैं। ले किन उन्हें 2027 में होने वाले वनडे वर्ल्ड कप में खेलना चो हिए। सचिन तेंदुलकर ने कोहली के 50वें शतक के बाद बड़ी बात कही है। जाहिर है कि पूर्व भारतीय कप्तान कोहली वनडे क्रिकेट में 50 शतक लगाने वाले दुनिया के पहले बल्लेबाज हैं। सचिन ने 49 शतक लगाए हैं। सचिन तेंदुलकर ने कहा कि मैं विराट कोहली को तब से जानता हूं, जब वे टीम इंडिया में नहीं आए थे। मैं बहुत खुश हूं कि विराट कोहली के 50 शतक पूरे हो गए हैं। अभी उनका खेल रूकना नहीं चाहिए। उनमें बहुत क्रिकेट बाकी है। उन्होंने कहा कि विराट कोहली में अभी भी शतक और रनों की भूख है। अभी और भी उनके लिए शतक आने हैं। शतकों का रिकॉर्ड भारत में ही रहा, यह भी मेरे लिए खुशी की बात है। मालूम हो कि विराट कोहली इंटरनेशनल क्रिकेट के तीनों फॉर्मेट में शतक जड़ चुके हैं। टेस्ट में उन्होंने 29 तो टी20 में एक शतक जड़ा है।विराट कोहली दुनिया के सबसे फिट खिलाड़ियों में से एक हैं। ऐसे में 2027 का वर्ल्ड कप खेलना उनके लिए मुश्किल नहीं दिखता। वर्ल्ड कप 2023 के बाद कोहली और कप्तान रोहित शर्मा सहित सीनियर खिलाड़ियों को आराम दिया गया है। सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में टीम अभी ऑस्ट्रेलिया से टी20 सीरीज खेल रही है। अगले महीने भारतीय टीम को साउथ अफ्रीका का दौरा करना है।

गनेमत और अनंतजीत ने पहली बार राष्ट्रीय खिताब जीता

नई दिल्ली,

भारत की स्कीट निशानेबाज गनेमत सेखों और अनंतजीत सिंह नरुका ने बुधवार को यहां कर्णी सिंह शूटिंग रेंज में पहला व्यक्तिगत सीनियर राष्ट्रीय खिताब जीतकर अपनी उपलब्धि में एक और नगीना जोड़ लिया। शॉटगन स्पर्धाओं के लिए 66वीं राष्ट्रीय शूटिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता (एनएससीसी) में प्रतिस्पर्धा करते हुए, पंजाब की गनेमत और राजस्थान के अनंतजीत ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित स्वर्ण पदक जीतने के लिए विपरीत राह अपनाई। गनेमत ने क्वालीफिकेशन में 116 से नीचे का स्कोर बनाया और 60-शॉट फाइनल जीतने के लिए 56 लक्ष्यों को हासिल करने से पहले, चार अंतिम क्वालीफाइंग स्थानों के लिए पांच-तरफा शूट-ऑफ से गुजरना पड़ा। क्वालीफायर लीडर ज़हरा दीसावाला 55 हिट के साथ दूसरे स्थान पर रहीं जबकि संजना सूद 44 हिट के साथ तीसरे स्थान पर रहीं। पुरुषों की स्कीट में अनंतजीत ने एक अलग स्तर पर शॉट लगाया और जीत हासिल करने के लिए एक स्तंभ दर्ज किया। उन्होंने क्वालीफायर में 125 में से 123 अंकों के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया। मैदान में उनका अगला सर्वश्रेष्ठ स्कोर 121 था। छह खिलाड़ियों के फाइनल में, उन्होंने 60 में से 58 निशाने लगाए और रजत जीतने वाले मुनेक बटुला को 55 के स्कोर से काफी पीछे छोड़ दिया। भवतेग गिल ने कांस्य

पदक जीता। पहले 50 लक्ष्यों में से 45 पर निशाना साधा। इस साल की शुरुआत में, गनेमत ने आईएसएसएफ विश्व कप में एक स्वर्ण और रजत सहित दो पदक जीते, जबकि अनंतजीत ने हांगझोउ में पुरुषों की स्कीट में एशियाई खेलों में रजत पदक जीता।

अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं को भारत में प्रसारित किया जाना चाहिए : नीरज चोपड़ा

बेंगलुरु।

ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा ने बुधवार को ट्रैक और फील्ड को और अधिक आकर्षक बनाने पर जोर दिया और भारतीय अधिकारियों से इसे भारतीय प्रशंसकों के लिए जेब के अनुकूल बनाने के लिए कहा। आरसीबी इनोवेशन लैब की लीडर्स मीट में वैश्विक खेल नेताओं की सभा को संबोधित करते हुए, नीरज ने भारतीय दर्शकों के बीच ट्रैक और फील्ड की लोकप्रियता को प्रभावित करने वाली बाधाओं पर अपने विचार साझा किए। नीरज ने कहा, सबसे पहले, मुझे लगता है कि जिन अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में हम प्रतिस्पर्धा करते हैं जैसे डायमंड लीग, कॉन्टिनेंटल टूर्स और विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप, उन्हें भारत में प्रसारित किया जाना चाहिए। वर्तमान में, हमें केवल हाइलाइट्स देखने को मिलते हैं, हालांकि लोग एथलेटिक्स देखना चाहते हैं, वे रात में 1-2 बजे तक जागते हैं, और एथलीट के खेलने का इंतजार करते हैं, लेकिन देखने में सक्षम नहीं होने के बाद उन्हें निराशा का सामना करना पड़ता है। नीरज का यह भी मानना है कि खेल ज्ञान और जागरूकता के लिए भारतीय एथलेटिक्स स्पर्धाओं को टेलीविजन पर प्रसारित किया जाना चाहिए। टीवी पर एथलेटिक्स स्पर्धाओं के प्रसारण से अधिक लोग उन प्रतियोगिताओं को देखना, समझना और उनके बारे में जागरूकता बढ़ाना शुरू कर सकेंगे जिनमें हम प्रतिस्पर्धा करते हैं। हरियाणा में जन्मे एथलीट के लिए अब तक का साल असाधारण रहा है, उन्होंने इस साल एशियाई खेल 2022 और विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2023 में स्वर्ण पदक जीता है, और उनसे अगले साल पेरिस ओलंपिक में अपनी टोक्यो ओलंपिक की सफलता को दोहराने की उम्मीद है। उन्होंने यह भी बताया कि पिछले कुछ वर्षों में भारत का खेल पारिस्थितिकी तंत्र कितना विकसित हुआ है और भारत में अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं की मेजबानी कैसे एथलेटिक्स के लिए गेम-चेंजर हो सकती है। प्रशंसकों की भावनाओं को दोहराते हुए, टोक्यो स्वर्ण पदक विजेता ने कहा, अगर केन्या और ग्रेनेडा जैसे देश नियमित रूप से विश्व स्तर पर अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं की मेजबानी कर सकते हैं, तो भारत में भी ऐसा करने की काफी क्षमता है। जब भी मैं विश्व एथलेटिक्स संगठन के लोगों से मिलता हूं तो वे भारत में इस तरह के टूर्नामेंट की मेजबानी करने में रुचि व्यक्त करते हैं, मुझे उम्मीद है कि अगर भारत ऐसे प्रतिस्पर्धी आयोजनों की मेजबानी कर सकता है तो अधिक लोग व्यक्तिगत रूप से ऐसी चैंपियनशिप देख सकते हैं और प्रेरित हो सकते हैं।

25 वर्षीय खिलाड़ी ने अपने जीवन के सबसे यादगार पलों को याद किया। उन्होंने पोलैंड में विश्व जूनियर चैंपियनशिप में जूनियर विश्व रिकॉर्ड थ्रो का जिक्र किया,

जिसके बाद टोक्यो ओलंपिक हुआ, जो उनके करियर के मुख्य आकर्षण के रूप में उनके लिए जीवन बदलने वाला क्षण था।

9 जनवरी से ओडिशा में शुरू होगा कलिंगा सुपर कप

नई दिल्ली।

अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ ने बुधवार को घोषणा की कि कलिंगा सुपर कप का आयोजन 9 जनवरी 2024 से ओडिशा में किया जाएगा। टूर्नामेंट के मैच ओडिशा में दो अलग-अलग स्थानों पर आयोजित करने की योजना है। इंडियन सुपर लीग और आई-लीग दोनों टीमों को वार्षिक टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है।टूर्नामेंट के प्रारूप में चार-चार टीमों के चार समूह होंगे, जो आपस में सिंगल लेग मैच खेलेंगे। ग्रुप विजेता सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगे, जिसके बाद 28 जनवरी, 2024 को फाइनल खेला जाएगा। एआईएफएफ अध्यक्ष कल्याण चौबे ने कहा, हमने पहले जो निर्णय लिया था। उसके अनुसार वार्षिक सुपर कप टूर्नामेंट अब बड़े और व्यापक परिप्रेक्ष्य में आयोजित किया जाएगा। यह टूर्नामेंट अब कलिंगा सुपर कप के नाम से जाना जाएगा और जनवरी 2024 में ओडिशा में खेला जाएगा। यह भारतीय घरेलू फुटबॉल के लिए एक सकारात्मक विकास है। मुझे विश्वास है कि कलिंगा सुपर कप आयोजन और दर्शकों की रुचि दोनों के मामले में बहुत हिट होगा। आई-लीग टीमें कलिंगा सुपर कप के ग्रुप चरण में पहुंचने के लिए क्वालीफायर

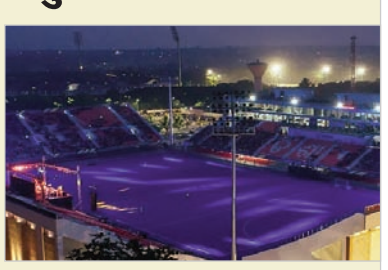

खेलेगी जहां ग्रुप चरण में उनके लिए चार स्थान आरक्षित किए गए हैं। कलिंगा सुपर कप के चैंपियंस को एएफसी 2023-24 सीज़न के एसीएल 2 प्रारंभिक चरण में खेलने के लिए नामांकित किया जाएगा।

मैक्सवेल की तकनीक को देखकर दंग रह जाता हूं: आर श्रीधर

गुवाहाटी। भारत के पूर्व फील्डिंग कोच आर श्रीधर तीसरे टी20 मैच में ग्लेन मैक्सवेल की 47 गेंद में खेली गई शतकीय पारी से हैरान हैं, जिससे ऑस्ट्रेलिया ने भारत पर पांच विकेट से जीत हासिल की। गुवाहाटी के बारसापारा क्रिकेट स्टेडियम में मैक्सवेल ने नाबाद 104 रन बनाए जिसमें उनका शतक केवल 47 गेंदों में आया। इस तूफानी पारी के दम पर ऑस्ट्रेलिया को जीत मिली। आर श्रीधर ने कहा, आप मैक्सवेल जैसे खिलाड़ी से ही इस तरह की पारी की उम्मीद कर सकते हैं। हालांकि ऋतुराज की पारी और जेसन बेहरनडॉर्फ के 4 ओवर में (1/12) अन्य शानदार प्रदर्शन थे लेकिन मैक्सवेल की पारी ने ऑस्ट्रेलिया को जीत दिलाई। पूर्व फील्डिंग कोच ने कहा, उसे यह विश्वास है कि जब वह बल्लेबाजी करने जाता है तो वह हर समय ऐसा ही कुछ करेगा। मैक्सवेल अपने बल्ले की स्विंग के माध्यम से जिस तरह की शक्ति उत्पन्न करते हैं वह काफी आश्चर्यजनक है। हर बार जब मैं उनकी तकनीक को देखता हूं तो मुझे आश्चर्य होता है। आर श्रीधर ने भारत के सलामी बल्लेबाज ऋतुराज गायकवाड़ की भी प्रशंसा की, जो 123 रन पर नाबाद रहे । दाएं हाथ के बल्लेबाज की पारी की शुरुआत अच्छी नहीं थी। लेकिन जिस तरह से उन्होंने क्रीज पर जमने के बाद अपना अंदाज बदला वो सराहनीय है।

संक्षिप्त समाचार

विक्की कौशल की उपस्थिति में यू मुंबा ने किया जर्सी का अनावरण

मुंबई। यू मुंबा ने बॉलीवुड स्टार विक्की कौशल की उपस्थिति में बुधवार को प्रो कबड्डी लीग सीजन 10 के लिए यू मुंबा की जर्सी का अनावरण किया। यू मुंबा आगामी रोमांचक सीज़न के लिए तैयार है। नए विचार और विवरणों पर ध्यान देने के साथ डिज़ाइन की गई नई जर्सी उत्कृष्टता, एकता और मुंबई की स्थायी भावना को दर्शाती है। नई जर्सी को विकी कौशल, टीम के मालिक रोनी स्क्रूवाला, सीईओ सुहैल चंडोक के अलावा सीजन 10 के कोर टीम के सदस्यों सुरिंदर सिंह, महेंद्र सिंह, रिंकू, गिरीश एर्नाक, गुमान सिंह और प्रणय की उपस्थिति में लॉन्च किया गया। यू मुंबा के सीईओ सुहैल चंडोक ने कहा, मुंबई शहर के दिल और आत्मा को समाहित करने वाले तत्वों से जुड़ी, जर्सी लोगों की ऊर्जा, विविधता, हलचल और अदम्य भावना को दर्शाती है जो मुंबई का प्रतिनिधित्व करता है। प्रत्येक थ्रेड एक कहानी बताता है, जो एक ऐसे शहर की नब्ज को प्रतिबिंबित करता है जो कभी नहीं सोता है और उत्कृष्टता की निरंतर खोज जो यू मुंबा को परिभाषित करती है। जर्सी की प्रमुख विशेषताओं में से एक समुद्र का प्रतिनिधित्व है। जो मुंबई के मूल निवासियों, कोली समुदाय और पानी के तत्व को श्रद्धांजलि है जो सात द्वीपों के शहर मुंबई का सार बनाता है। टीम ने आगामी सीज़न के लिए कप्तान और उप-कप्तानों की घोषणा भी की। सुरिंदर सिंह कमान संभालेंगे जबकि, रिंकू शर्मा और महेंद्र सिंह उनके डिप्टी होंगे।

निश्चित तौर पर ऐसा लगता है कि भारत-ऑस्ट्रेलिया टी20 सीरीज का अवमूल्यन हो गया है : माइकल हसी

गुवाहाटी: ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर माइकल हसी का मानना है कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच चल रही पांच मैचों की टी20 सीरीज का भारी अवमूल्यन हुआ है, खासकर 2023 पुरुष एकदिवसीय विश्व कप के समापन के बाद इसके आयोजन के समय के कारण।भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच टी20 श्रृंखला अहमदाबाद में 2023 पुरुष एकदिवसीय विश्व कप फाइनल में दोनों टीमों के खेलने के ठीक चार दिन बाद शुरू हुई, जिसे पर्यटकों ने जीता। पिछले साल भी इंग्लैंड के साथ कुछ ऐसा ही हुआ था, जब उन्होंने 2022 पुरुष टी20 विश्व कप जीतने के ठीक चार दिन बाद ऑस्ट्रेलिया में अपनी वनडे सीरीज़ शुरू की थी। गुवाहाटी में तीसरे टी20 के अंत में, जिसे ऑस्ट्रेलिया ने पांच विकेट से जीता, विश्व कप के छह खिलाड़ी, ट्रैविस हेड को छोड़कर, क्रिस ग्रीन, जोश फिलिप, बेन मैकडरमोट और बेन ड्वारशुइस के साथ स्वदेश लौट आएंगे, जो बाकी रायपुर और बेंगलुरु में दो मैचों के लिए मौजूद रहेंगे। यह विश्व कप को सस्ता नहीं बनाता है लेकिन यह निश्चित रूप से इस श्रृंखला को सस्ता कर देता है। ऐसे कई लोग होंगे जो विश्व कप (दोनों देशों के लिए) में थे, संभवतः उनकी टी20 टीमों में होंगे। वे या तो टेस्ट श्रृंखला की तैयारी के लिए या बस छुट्टी लेने के लिए घर गए थे। हसी ने एसईएन रेडियो पर कहा, यह आश्चर्यजनक है कि एक कैलेंडर में इतना क्रिकेट खेलने के लिए कितना (क्रिकेट बोर्ड) पैक होता है।

जूनियर पुरुष चैंपियनशिप के फाइनल में ओडिशा और सेल हॉकी की भिड़ंत

कोविलपट्टी:

ओडिशा और सेल हॉकी अकादमी पहली हॉकी इंडिया जूनियर पुरुष अकादमी चैंपियनशिप 2023 (जोन बी) के 10वें दिन अपने-अपने सेमीफाइनल मैचों में विजयी रहे। जूनियर पुरुष वर्ग के पहले सेमीफाइनल में ओडिशा नेवल टाटा हॉकी हाई परफॉर्मेंस सेंटर ने बरार हॉकी अकादमी (विदर्भ) अमरावती को 12-0 से हराया। सुरेश शर्मा (5, 23, 50, 59) ने चार गोल किए जबकि मुंडा सतीश (22, 26, 53) और इरेंगबम रोहित सिंह (17, 28, 35) ने हैट्रिक बनाई। हरीश सिंह लीतानथेम (27) और सिलहेइबा लिशम (38) ने एक-एक गोल करके फाइनल में अपना टिकट पक्का कर लिया। दूसरे सेमीफाइनल में सेल हॉकी अकादमी ने हुबली हॉकी अकादमी को 10-1 से हराया। अमित (2, 13, 57) और मोहन कृष्णा (18, 38, 46) ने एक-एक हैट्रिक जमाई। वहीं, करण लाकड़ा (11, 42) ने दो गोल किए जबकि नबीन लाकड़ा (15) और माझी अंकित (60) ने सेल हॉकी अकादमी के लिए एक-एक गोल का योगदान दिया। तीसरे क्वार्टर में हुबली हॉकी अकादमी के लिए राजू मनोज गायकवाड़ (39) ने एकमात्र गोल किया और सेल हॉकी अकादमी ने इस शानदार जीत के साथ फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली। ओडिशा नेवल टाटा हॉकी हाई परफॉर्मेंस सेंटर फाइनल में सेल हॉकी अकादमी से भिड़ेगा जबकि बरार हॉकी अकादमी (विदर्भ) अमरावती गुरुवार को तीसरे/चौथे स्थान के मैच में हुबली हॉकी अकादमी से खेलेगी।

सऊदी अरब में सम्मानित होंगे रणवीर सिंह, रेड सी इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में बुलाया गया

बॉलीवुड एक्टर रणवीर सिंह को साऊदी अरब में होने वाले रेड सी इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में सम्मानित किया जाएगा। 30 नवंबर से 9 दिसंबर तक चलने वाले इस फिल्म फेस्टिवल में लोकल और इंटरनेशनल फिल्ममेकिंग टैलेंट्स को सेलिब्रेट किया जाएगा। इवेंट में रणवीर के अलावा जर्मन एक्ट्रेस डायने क्रूगर और वेटरन साऊदी राइटर-एक्टर अब्दुल्ला अल-सधान का भी सम्मान किया जाएगा। वेबसाइट डेडलाइन के मुताबिक, रेड सी फिल्म फाउंडेशन के मोहम्मद-अल-तुर्की ने कहा, 'इस साल हम हिंदी सिनेमा के आइकॉन रणवीर सिंह का सम्मान करेंगे। इसके अलावा हम हेलेन और टैरेंटो जैसे किरदार देने वाली जर्मन एक्ट्रेस डायने क्रूगर का भी सम्मान करेंगे।'

ज्यूरी में शामिल होंगे फ्रीडा पिंटो

फेस्टिवल में ज्यूरी के तौर पर एल्विस डायरेक्टर बाज लुहरमन, जोएल किन्नामन, फ्रीडा पिंटो, अमीना खलील और पैज वेगा जैसे सेलेब्स मौजूद रहेंगे।

इन दिनों कर रहे 'सिंघम अगेन' की शूटिंग

वर्क फ्रंट पर रणवीर इन दिनों रोहित शेट्?टी के कॉप यूनिवर्स की अगली फिल्म 'सिंघम अगेन' की शूटिंग कर रहे हैं। इसमें उनकी वाइफ दीपिका पादुकोण भी नजर आएंगी। इसके अलावा रणवीर के पास फरहान अख्तर की फिल्म 'डॉन 3' भी है। चर्चा है कि वो संजय लीला भंसाली के साथ 'बैजू बावरा' भी करने वाले हैं।

रानी को 'लगान' न करने का अफसोस

बॉलीवुड एक्ट्रेस रानी मुखर्जी हाल ही में गोवा में चल रहे 54वें इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया के मंच पर पहुंचीं। यहां रानी ने कहा कि आमिर खान स्टारर 'लगान' एकमात्र ऐसी फिल्म है जिसका हिस्सा ना बन पाने का उन्हें मलाल है। एक इंट्रेक्टिव सेशन के दौरान रानी ने बताया कि उन्होंने पहले से ही एक फिल्म साइन की हुई थी जिसकी 20 दिनों की शूटिंग बाकी थी। इस फिल्म के चलते वो 'लगान' का हिस्सा नहीं बन पाई। 2001 में रिलीज हुई लगान साल की तीसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म थी। इसका क्लैश सनी देओल स्टारर 'गदर- एक प्रेम कथा' से हुआ था।

आमिर चाहते थे सभी एक्टर्स सेट पर साथ रहें

इवेंट में रानी ने कहा, 'एकमात्र फिल्म जिसका हिस्सा ना बन पाने का मुझे अफसोस है, वो है आमिर खान की 'लगान'। मैं उस समय एक दूसरी फिल्म कर रही थी जिससे लगान की डेट्स क्लैश हो रही थी। वहीं आमिर इस फिल्म से बतौर प्रोड्यूसर डेब्यू कर रहे थे। उन्होंने मुझसे कहा कि वो इस फिल्म को कुछ अलग तरीके से शूट कर रहे हैं। वो चाहते थे कि उनके सारे एक्टर्स 6 महीने तक एक ही जगह पर बने रहें।' रानी ने आगे कहा, 'चूंकि मैं पहले से ही एक फिल्म पर काम कर रही थी तो पूरा टाइम लगान को नहीं दे सकती थी। आमिर का कहना था कि वो मुझे बीच में दूसरी फिल्म के लिए नहीं जाने दे सकते वर्ना दूसरे कलाकारों को अच्छा नहीं लगेगा। आमिर से बात करने के बाद मैंने दूसरी फिल्म के प्रोड्यूसर से भी पूछा कि क्या मैं इस फिल्म को छोड़ सकती हूं? क्योंकि आमिर मेरे करीबी दोस्त हैं और मुझे उनकी फिल्म का हिस्सा बनना है पर उस प्रोड्यूसर ने भी मुझे जाने से मना कर दिया।' फिल्म लगान 2001 में रिलीज हुई थी। आशुतोष गोवारिकर निर्देशित इस फिल्म में आमिर खान ने लीड रोल प्ले किया था। फिल्म बहुत बड़ी हिट साबित हुई थी। इसने इंटरनेशनल मार्केट में भी काफी नाम कमाया था।

फिल्म कड़क सिंह के किरदार के लिए उत्साहित हैं संजना

बॉलीवुड अभिनेता पंकज त्रिपाठी की फिल्म कड़क सिंह का ट्रेलर हाल ही में रिलीज हुआ है। फिल्म का ट्रेलर आरएफएफआई गोवा में लॉन्च किया गया था। ट्रेलर में दिखाए गए रहस्य ने प्रशंसकों को हैरान कर दिया है। फिल्म में संजना सांघी भी हैं और आज उन्होंने अपने किरदार साक्षी का परिचय अपने सोशल मीडिया हैंडल पर दिया। उन्होंने अपने किरदार का एक पोस्टर जारी किया। संजना ने पोस्टर साझा करते हुए लिखा, आज इस पोस्टर को आप सभी के साथ साझा करना बिल्कुल अवास्तविक लग रहा है। जिस समय निर्माताओं ने मुझे साक्षी और कड़क सिंह की दुनिया के बारे में बताया तो मुझे अटूट विश्वास था कि मैं उसे जीवंत कर पाऊंगी और तुरंत ऐसा महसूस हुआ जैसे कड़क सिंह एक यात्रा बनने जा रही है। वह मेरे भीतर कुछ बदलाव लाने वाला था। मैं आप सभी से उसकी और हमारी दुनिया से मुलाकात का इंतजार नहीं कर सकती। कड़क सिंह एक ऐसे पिता की कहानी है, जो अपनी बेटी को भूल जाता है। वहीं बात करें फिल्म की रिलीज के बारे में तो फिल्म में पंकज त्रिपाठी की फिल्म आठ दिसंबर 2023 को ओटीटी प्लेटफॉर्म जी5 पर रिलीज होगी।

एनिमल के लिए बॉबी देओल ने 4 महीने ट्रेनिंग की

फिल्म एनिमल में बॉबी का इंटेस लुक देखने को मिलेगा। इस रोल के लिए उन्होंने 4 महीने तक जबरदस्त ट्रेनिंग की है। इस दौरान उन्होंने मिठाइयों से भी दूरी बना ली थी। डायरेक्टर संदीप रेड्डी वांगा की डिमांड थी कि बॉबी फिल्म में रणबीर कपूर की तुलना में ज्यादा ताकतवर दिखें। इस लुक को परफेक्ट तरीके से ढालने में उनके पर्सनल ट्रेनर प्रज्वल शेट्टी ने बॉबी की बहुत मदद की थी। प्रज्वल ने ही एक इंटरव्यू में बताया है कि इंटेस लुक के लिए बॉबी ने स्ट्रीक्ट डाइट फॉलो किया था ताकि उनका वजन 85 से 90 किलो तक बना रहे। प्रज्वल ने कहा- जिस तरह से सोशल मीडिया पर बॉबी सर की बॉडी और लुक्स की चर्चा हो रही है, उससे मैं खुश हूं। मैं रेस 3 के बाद से ही उन्हें ट्रेनिंग दे रहा हूं। मैं पिछले छह साल से उनके साथ हूं। फिल्म एनिमल के लिए मुझे चार महीने का समय दिया गया था। डायरेक्टर चाहते थे कि हम इन चार महीनों में बॉबी सर को विलेन वाला लुक दें। यकीन मानिए, हम दोनों ने इस लुक के लिए उन चार महीनों में बहुत मेहनत की है। प्रज्वल ने आगे बताया कि डायरेक्टर ने मुझे पहले ही बताया था कि इस फिल्म में बॉबी सर को रणबीर कपूर की तुलना में ताकतवर दिखना है। बॉबी सर को अधिक हट्टा-कट्टा दिखाने की जरूरत थी। इसके लिए हमने कड़ी मेहनत की। हमने ये कोशिश की उनकी बॉडी में फैट पर्सेंट 12 तक घट जाए और वजन 85-90 किलो तक बना रहेगा।

4 महीने स्ट्रीक्ट डाइट फॉलो किया, मिठाई से भी दूर रहे

प्रज्वल ने बॉबी के स्ट्रीक्ट डाइट को भी लेकर बात की। उन्होंने कहा- बॉबी सर सुबह उठते ही अंडे खाते थे। उन्होंने कार्बोहाइड्रेट के लिए अपने खाने में दलिया और चिकन-चावल को शामिल किया था। फिर शाम को वे सलाद और रात को वे आमतौर पर चिकन या मछली खाते थे। ये डाइट उन्होंने 4 महीने तक फालो किया था। वे पंजाबी हैं, लेकिन दिलचस्प बात यह है कि वे खाने के शौकीन नहीं हैं। इस कारण बड़ी आसानी से ये डाइट और रूटीन को फॉलो कर लिया। हालांकि उन्हें मिठाइयां बहुत पसंद हैं पर इन 4 महीने मिठाइयों से भी दूर रहे।

बॉबी के ट्रांसफॉर्मेशन से खुश थे डायरेक्टर

डायरेक्टर बॉबी सर के ट्रांसफॉर्मेशन से बहुत खुश हुए थे। फिल्म की आखिरी सीन की शूटिंग के दिन उन्होंने मुझसे कहा था- तुमने बॉबी की बॉडी पर बढ़िया काम किया है। मैं जैसा चाहता था, तुमने उनके लुक को बिल्कुल उसी तरह से ढाल दिया है।

फिल्म एनिमल में बॉबी का एक भी डायलॉग नहीं

फिल्म एनिमल में बॉबी देओल को विलेन के रोल में देखा जाएगा। मीडिया रिपोर्ट्स का दावा है कि फिल्म में बॉबी का कैरेक्टर बहुत ही यूनिक है। फिल्म में उनका एक भी डायलॉग नहीं है। बॉबी का ऐसा रोल फैंस के लिए किसी सरप्राइज पैकेज से कम नहीं है।

रिश्तों पर युवाओं को कोई सलाह नहीं देना चाहतीं नीना गुप्ता

बॉलीवुड अभिनेत्री नीना गुप्ता अपनी दमदार अदाकारी से दर्शकों का दिल जीत लेती हैं। फिल्मों के अलावा नीना अपनी निजी जिंदगी को लेकर भी सुर्खियां बटोर चुकी हैं। खासकर, वे अब तक अपने रिलेशनशिप को लेकर चर्चा बटोरती हैं। अब हाल ही में दिए इंटरव्यू में अभिनेत्री से रिलेशनशिप को लेकर सलाह मांगी गई, लेकिन इस बारे में कोई भी सलाह देने से नीना ने इनकार कर दिया। नीना ने कहा, मैं रिश्ते पर सलाह देने वाली गलत इंसान हूं। मैंने हमेशा गलत लोगों को डेट किया है। कृपया मुझसे मत पूछें, क्योंकि मैं बहुत ही बेवकूफी भरा और बुरा जवाब दूंगी। नीना ने अपनी बेटी, डिजाइनर-अभिनेत्री मसाबा गुप्ता की पहली शादी के समय की गई गलती भी कबूल की। मसाबा की शुरुआत में फिल्म निर्माता मधु मंटेना से शादी हुई थी। नीना ने कहा कि मसाबा शुरू में शादी नहीं करना चाहती थीं। मसाबा उनके साथ लिव-इन रिलेशनशिप में रहना चाहती थीं। हालांकि, नीना ने शादी पर जोर दिया जो एक गलती साबित हुई और वह टूट गई। मसाबा नीना और वेस्टइंडीज के पूर्व क्रिकेटर विव रिचर्ड्स की बेटी हैं। नीना ने चार्टर्ड अकाउंटेंट विवेक मेहरा से शादी की है। इससे पहले नीना ने कहा था कि एक आदमी और औरत के बीच कोई प्यार नहीं होता। नीना गुप्ता ने कहा कि उन्हें एकमात्र प्यार अपनी बेटी मसाबा के लिए महसूस हुआ है। वे इस बारे में नहीं बता सकतीं कि बाकी लोगों को कैसा लगा होगा। वे प्यार के बारे में कुछ नहीं समझती हैं। इसके अलावा नीना ने नारीवाद पर भी अपनी राय सामने रखी थी।

जो चर्चा में रहता है, उसे काम मिलता है

अभिनय की दुनिया में रिद्धि डोगरा चिर-परिचित नाम बन चुकी हैं। कई टीवी शो में काम करने के बाद असुर और द मैरिड वुमन जैसी ओटीटी सीरीज से उन्होंने दर्शकों के बीच अच्छी जगह बनाई। यह साल उनके करियर के लिए और भी शानदार रहा है। वह शाहरुख खान की जवान और सलमान की टाइगर 3 जैसी बड़ी फिल्मों का हिस्सा बनी हैं। अभिनेत्री अब बड़े किरदार करना चाहती हैं। हाल ही में एक मीडिया बातचीत के दौरान उन्होंने अपनी ये इच्छा जाहिर की है। रिद्धि डोगरा का कहना है कि वह कई बार खुद को साबित कर चुकी हैं। अब उन्हें कुछ बड़े किरदार करने की जरूरत है। एक मीडिया वेबसाइट के साथ हुए इंटरव्यू में रिद्धि ने कहा कि इंडस्ट्री में ऐसे लोगों को कास्ट किए जाने का चलन है, जो हर जगह नजर आते हैं। कुछ लोग प्रतिभाहीन होने के बावजूद हर वक्त खबरों में बने रहते हैं। कोई हर जगह बना है और पैपराजी की नजरों में है, सिर्फ इसी आधार पर इंडस्ट्री के लोग उन्हें कास्ट कर लेते हैं। रिद्धि ने कहा कि इस तरह का कल्चर कोई नया नहीं है। अभिनेत्री ने आगे कहा कि उन्हें दर्शकों से बेशुमार प्यार मिला है, लेकिन इंडस्ट्री को वह सजग करना चाहती हैं। रिद्धि ने आगे कहा, मैंने अपने आप को बार-बार साबित किया है। मैं यहां किसी की बहन, किसी की बेटी, भांजी और भतीजी नहीं हूं। रिद्धि ने आगे कहा, मैं जितना संभव है, आगे बढ़ने की कोशिश में हूं और बढ़ती रहूंगी।

एसएस राजामौली करेंगे रणबीर की एनिमल का प्रमोशन

रणबीर कपूर स्टारर फिल्म एनिमल आजकल सुर्खियों में है। फिल्म की स्टारकास्ट भी एनिमल का जमकर प्रमोशन कर रही है। ऐसे में अब ब्लॉकबस्टर फिल्म डायरेक्टर एसएस राजामौली और साउथ सुपरस्टार महेश बाबू भी बतौर चीफ गेस्ट इस फिल्म के प्रमोशनल इवेंट में नजर आएंगे। 27 नवंबर यानी आज इस फिल्म का हैदराबाद के मल्ला रेड्डी यूनिवर्सिटी में प्रमोशनल इवेंट रखा गया है। एनिमल की टीम ने हाल ही में बेंगलुरु में भी फिल्म का प्रमोशन किया था। इस इवेंट में रश्मिका को बालों में गजरा लगाए पिंक साड़ी में देखा गया। रणबीर और बॉबी कैजुअल लुक में स्पॉट हुए। फिल्म के डायरेक्टर संदीप रेड्डी वांगा और प्रोड्यूसर भूषण कुमार भी नजर आए थे। पूरी टीम ने साथ मिलकर रश्मिका का फेवरेट लिली पोज भी दिया। रणबीर कपूर और रश्मिका मंदाना स्टारर इस फिल्म में अनिल कपूर और बॉबी देओल भी नजर आएंगे। अनिल कपूर रणबीर के पिता का किरदार निभाते दिखेंगे। बॉबी देओल फिल्म में विलेन की भूमिका में नजर आएंगे। यह एक गैंगस्टर ड्रामा फिल्म होगी। फिल्म की कहानी बाप और बेटे के रिश्ते के बैक ड्रॉप पर बेस्ड है। एनिमल एक दिसंबर को थिएटर्स में पांच भाषाओं में रिलीज होगी। ये फिल्म 3 घंटे 21 मिनट की होने वाली है।